



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server!



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server!

* विषय-सूची *

* जातक प्रकरण प्रथम भाग *

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
बारह महीनों के नाम	१	जन्म पत्री लिखना	२०
सोलह तिथियों और तीन तीन तिथियों के और सप्त वारों के		लग्न परीक्षा व प्रहों का फल	२१
नाम	२	राशियों के स्थान	२३
२८ नक्षत्रों के नाम	३	शुभ और अशुभ ग्रह और खी की कुन्डली देखना	३२
नक्षत्रों के देवता सप्त विंशति		छटी, जसूटन बतलाना और वर्ग देखना	३४
योग देखना	४	वर्ग वैर और वर्गफल देखना	३५
षट् ऋतु देखना	५	द्वादश भाव संज्ञा और बारह स्थानों के नाम प्रहों की हाइ	
अष्ट दिशाओं के स्वामी	६	देखना	३६
११ करण और बारह राशियों के नाम और दिनमान देखना	७	प्रहों की अवधि और नव प्रहों की जात और राशि भाव.	
चार २ अक्षरों के नक्षत्र देखना	८	संज्ञा देखना	४०
नौ अक्षरों की राशी और दो अक्षरों की राशी व चन्द्रमा		बारह राशियों के रङ्ग और राशियों के भाव और प्रहों के रङ्ग और राशियों के स्वामी	
देखना	१०	देखना	४१
लग्न विचार देखना	११	उच्च, नीच ग्रह देखना	४२
लग्न भोग और तिथि गंडान्त देखना	१३	प्रहों के दान और ग्रह दान वस्तु चक्र में देखना	४३
नक्षत्रगंडान्त व लग्न गंडान्त	१४	होरा देखना	४४
ज्येष्ठा-मूलनक्षत्र फल देखना	१५	ग्रह जप संख्या देखना	४५
मूल वृक्ष फल देखना	१६	ग्रह दान समय व वर्ण देखना	४६
श्लेषा नक्षत्र फल और मूल ज्येष्ठा श्लेषा हनका अलग	२	वर्गफल और वैश्य देखना	४७
विचार	१७	वैश्य फल, तारा और तारों के	
मूल, श्लेषा, ज्येष्ठा, अश्विनी नक्षत्र मन्त्र देखना	१८	नाम और तारा शुभाशुभ देखना	४८
मध्या, रेती मन्त्र व सामिनी	१९		

योनी दोष देखना	४६	भद्रावास, भद्रा के साथ	
योनी वैर प्रह भैत्री देखना	५०	चन्द्रमा देखना	६३
गण देखना	५१	भद्रा फल, कन्या या पुत्र	
गण फल देखना	५२	कितने हैं बताना	६४
नाड़ी दोष, नाड़ी चक्र देखना	५३	स्त्री या पुरुष, प्रथम किंसकी	
नाड़ी फल, प्रह गोचर	५४	मृत्यु होगी, कुन्डली जीवित	
द्वादश लग्न भाव फल	५५	की है या मरे की संक्रांति	
प्रह शान्ति चक्र प्रह वाहन		धुग्यकाल फल देखना	६५
देखना	५६	संक्रांति आदि मध्य अन्त	
प्रहभाग फल नपुंसक देखना	६०	भोगनी देखना	६६
भकूट व पाये देखना	६१	संक्रांति मुहूर्त भेद	६७
सर्वोपरिक्रम मङ्गली या		भद्रा मुख, पूच्छ चक्र संक्रांति	
सादा देखना	६२	समय फल देखना	६८

विवाह प्रकरण

सगाई का मुहूर्त देखना	६६	मृत्यु पञ्चक देखना	८३
जन्मपत्रभिलाना विवाहसुझाना	७०	पञ्चक वर्जित देखना	८४
ल्येष्ट्र निचार देखना	७१	क्रांति साम्य दोष	८५
विवाह नक्षत्र विवाह मास	७२	दग्धा तिथि देखना	८६
विवाह में तिथि, वार, नक्षत्र		लग्न शुद्धि मुहूर्त	८७
योग, वर्जित, मासांत देखना	७३	लग्न फल	८८
विवाह में किस २ का बल		गोधूलि	८९
देखना चाहिये	७४	कन्यादान लग्न	९०
सूर्य बल गुरुबल देखना	७५	लग्न फल, योग वर्जित	९१
उच्च का गुरु, कन्या की वष		कन्यादान लग्न शुद्धि	९२
संख्या देखना	७६	विवाह में चिठ्ठी और लग्नपत्र	
रेजस्वला दोष देखना	७७	लिखाना	९३
दश दोष देखना	७८	बान तेल देखना	९४
दश दोषों के देश युति दोष		तेल दोष दूर करना, कर्तरी	
वेघ दोष देखना	७९	दोष होलाष्टक	९५
वेघ दोष चक्र वेघ फल	८१	चन्द्रमा देखना, सासू और	
आमित्र दोष व फल	८२	सुसरे का सुख	९६

सुहृत्त प्रकरण

गौना द्विरागमन सुहृत्त	६८	गर्भाधान सुहृत्त	११६
चन्द्रमा वास फल देखना	६९	नाभकरण, प्रसूति स्नानसुहृत्त	११७
गोधूलिमास, जन्म चन्द्रमा		कुआँ पूजना, स्त्री पुरुष	
वास फल देखना	१००	नवीन वस्त्र धारण करना	११८
तीनों लोकोंमें चन्द्रमावास	१०१	नवान्न भोजन, अन्न प्राशन	११९
चन्द्रमा रङ्ग ब्राह्मण, घात		चूहाकर्म सुँडन, विश्वारम्भ	१२०
चन्द्रमा	१०२	यज्ञोपवीत सुहृत्त	१२१
सन्मुख चन्द्रमा फल	१०३	कर्णच्छेदन, नीव धरने का	
पुष्प नक्षत्र फल	१०४	सुहृत्त	१२२
सिद्ध योग, मृत्युयोग	१०५	तालाब, कूप, देव प्रतिष्ठा	१२३
पञ्चक देखना, शुक्र अस्ति		गृह प्रवेश, चौर कर्म	१२४
के त्याग कार्य देखना	१०६	हल चलाने का सुहृत्त	१२५
शुक्र दोष परिहार, चीज		सब चीजों का सुहृत्त स्वर	
बेचना, खरीदना सुहृत्त	१०७	विचार	१२६
चन्द्रमा प्रहरण, सूर्य प्रहरण का		पशु बेचना, खरीदना, मन्त्र	
सूतक	१०८	उपदेश सुहृत्त	१२७
चन्द्रमा का उदय अस्ति, शुभ		ग्राम, नगर में रहने का सुहृत्त	१२८
कर्मों में सूतक पातक, किस		रोगीस्तान, यात्रा सुहृत्त	१२९
किस-राशि को गहता है	१०९	प्रस्थान करना, यात्रा संमय	
औषध करना, तिथि घात		शबुन देखना	१३०
नक्षत्र घात लगन घात		दिशाशूल देखना	१३१
चन्द्र घात	११०	नित्य दिशा देखना	१३२
यात्रा सुहृत्त, हवनका सुहृत्त	१११	चौखट, दरवाजा व कुआँ	
श्रहके सुखमें आहुति व योगनी		खोदने का सुहृत्त	१३३
देखना	११२	बाग प्रतिष्ठा, कन्या के शिर	
योगिनी फल	११३	में डोरे गेरना	१३४
काल विचार	११४	कष्टयोग, ज्वालामुखी योग	१३५
यात्रा बार फल, दिशाशूल		सूतक पातक के निर्णय	१३६
अरिहार	११५	मरने का पातक त्रिपुष्कर	१३७
राहु विचार, रविविचार,		योग	१३८

शेषनाग विचार फल	१३६	ब्रह्म प्रवेश, बाग लगाने का	
पूर्खी शयन, तिथि व व्रत		मुहूर्त	१४४
निर्णय	१४०	मुख्य द्वार मुहूर्त	१४५
हरिवासर देखना	१४१	साध पद्धरना, दुकान, राज	
सर्व प्रतिष्ठा मुहूर्त	१४२	दर्शन, नौकरी करना, नाव	
बिटौरे का मुहूर्त	१४३	बनाना, नाव चलाना, नाज	
गोद लेने का मुहूर्त	"	बोना, जन्मा को बाहर	
पशु व्याने के मास वर्जित		निकाला इत्यादि मुहूर्त	१४६

प्रश्न प्रकरण

प्रश्न वराना	१४७	द्वादश राशि गुरु फल	
कन्या होगी या पुत्र	१४८	द्वीपमालिका फल	१६२
मुड़ी प्रश्न	१४९	कितना दिन चढ़ा या रहा,	
कार्य प्रश्न पंथा प्रश्न	१५०	कितनी रात्रि गई देखना	१६३
जौ देखना	१५१	छपकली दोष दूर होना, छींक	
चतु खोई जाने का प्रश्न	१५२	विचार देखना	१६४
पंशु खोये जाने का प्रश्न	१५४	चह ग्राण देखना चूहा	
वर्षा नक्षत्र	१५५	रखने का विचार, स्त्री को सङ्ग	
ग्रहण का फल व दोष	१५६	में रखने का विचार	१६५
पवन परीक्षा	१५७	नक्षत्र संज्ञा देखना	१६६
पूर्णिमा फल ग्रह वक्रीफल	१५८	नौतनीके श्लोक दोनों पक्ष	१६७
ज्येष्ठ की अमावस्या १३ तिथि		पञ्चगव्य, पञ्चमृत, पञ्चपङ्गव	
व होली का धूम	१५९	पञ्च रत्न देखना	१६८
शनि फल	१६०		

सावधान—आज कल चन्द्र आदिमों ने हमारी पुस्तकों की नकल करनी शुरू कर दी है, इसलिये सब सज्जनों को सूचित किया जाता है कि जिस पुस्तक पर प्राचीन पता “हरिहर ग्रेस” का न हो वह पुस्तक नकली समझनी चाहिये।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

ज्योतिष सर्व संग्रह

[भाषा टीका]

जातक प्रकरण प्रथम भाग

॥ श्लोक ॥

प्रणम्य परमात्मानं वालधीबृद्धिसिद्धये ।

समाहृत्यान्यष्ट्रन्थेभ्यौ सर्वसंग्रहःलिख्यते ॥

अब द्वादश मासों के नाम संस्कृत और भाषा में

चैत्र को मधु और मीन भी कहते हैं	वैशाख को माघ और मेष कहते हैं	ज्येष्ठ को शुक्र और वृष्णि भी कहते हैं	आपाद को शुचि और मिथुन भी कहते हैं
श्रावण को नम और कर्क भी कहते हैं	भाद्रपद को नमस्य और सिंह भी कहते हैं	आश्विन को ईशा व कन्या भी कहते हैं	कार्तिक को उर्ज और तुला भी कहते हैं
मार्गशीर्ष को लिंह और वृश्चिक भी कहते हैं	पौष को सहस्र और घन भी कहते हैं	माघ को तप व मकर भी कहते हैं	फाल्गुन को तपस्व व कुंभ भी कहते हैं

सोलह तिथियों के नाम

१ प्रतिपदा २ द्वितीया ३ तृतीया ४ चतुर्थी
 ५ पंचमी ६ षष्ठी ७ सप्तमी ८ अष्टमी ९ नवमी
 १० दशमी ११ एकादशी १२ द्वादशी
 १३ त्रयोदशी १४ चतुर्दशी ३० अमावस्या
 १५ पौर्णमाशी ।

तीन र तिथियों के नाम.

१ पूँडवा ६ छठ ११ एकादशी ये नन्दा तिथि हैं
 २ दोयज ७ साते १२ द्वादशी ये भद्रा तिथि हैं
 ३ तीज आठे १३ त्रयोदशी ये जया तिथि हैं
 ४ चौथ ९ नवमी १४ चतुर्दशी ये रिक्ता तिथि हैं
 ५ पंचमी १० दशमी १५ षुनो ३० अमावस्या ये
 पूर्णा तिथि हैं ।

अथ सप्त वाराः

आदित्यवार । चन्द्रवार । भौमवार । बुधवार
 गुरुवार । शुक्रवार । शनिवार ॥

आदित्यवार को एतवार, चन्द्रवार को—सोमवार, भौमवार को
 मङ्गलवार, बुद्धको—बुध, गुरुको—बृहस्पत व जुमेरात शुक्र को

जुमा, शनिश्चर को थावर भी कहते हैं, राहु केतु-ये दोनों सात वार में मिलकर नवग्रह कहलाते हैं।

एक महीने के दो पक्ष होते हैं कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष अंधेरी रात को कृष्णपक्ष और चांदनी को शुक्लपक्ष महीनेकी शुरू की पड़वा से अमावस तक कृष्णपक्ष मावस से पौर्णमासी तक शुक्ल पक्ष, अंधेरी रात को बढ़ी, चांदनी को सुदी कहते हैं।

अष्टाविंशति - नक्षत्राणि



अब २८ नक्षत्र लिखते हैं।

अश्वनी १ भरणी २ कृतिका ३ रोहिणी ४
 मृगशिर ५ आद्रा ६ पुनर्वसु ७ पुष्प ८ श्लेषा ९
 मधा १० पूर्वा फाल्गुणी ११ उत्तरा फाल्गुणी १२
हस्त १३ चित्रा १४ स्वाति १५ विशाखा १६
अनुराधा १७ ज्येष्ठा १८ मूल १९ पूर्वाषाढ़ २०
उत्तराषाढ़ २१ अभिजित् २२ श्रवण २३
धनिष्ठा २४ शतभिषा २५ पूर्वभाद्रपद २६
उत्तरा भाद्रपद २७ रेवती २८ ।

नक्षत्रों के देवता चक्रम्

न०	अश्विनी देवता अश्वनी कुमार	भरणी थम.	कृतिका अग्नि	रोहिणी क्षुहा	मृगशिर चन्द्रमा	आर्द्रा रुद्र	पुनर्वसु अदिती
न०	पुष्य देवता गुरु	श्लेषा सर्प	मधा पितर	पू०फा० भग	उ०फा० अर्यमा	हस्त सूर्य	चित्रा विश्वा कर्मा
न०	स्वात देवता वायु	विशाखा हन्द्र अग्नि	अनुरा- धा मित्र	ज्येष्ठा इन्द्र	मूल निश्चिति	पू०षाढ जल	उ०षाढ़ विश्वे देवा
न०	आभिजि- त् विधि	अवरण विष्णु	धनिष्ठा वसु	शतमि० वरुण	पू०भा० अजैक पाद	उ०भा० अहिवुञ्ज	रेवती पूषा

सप्तविंशति योगः

श्लोक

विष्णुमः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
 अतिगंडः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥१॥
 गंडो वृद्धिग्रुश्चैव ब्याधातो हर्षणस्तथा ।
 ब्रह्म सिद्धिव्यतीपातो वस्त्रियान् परिधःशिवः ॥२॥
 सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्म चैन्द्रोऽथवैधृतिः ।
 सप्त विंशतिरास्यातो नामतुल्यफलप्रदाः ॥ ३ ॥

विष्णुम् १ ग्रीति २ आयुष्मान् ३ सौभाग्य ४ शोभन् ५
 अतिगण्ड ६ सुकर्मा ७ वृत्ति ८ शूल ९ गण्ड १० वृद्धि ११
 भ्रुव १२ व्याघ्रात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६
 व्यतिपात १७ वरियान् १८ परिव १९ शिव २० सिद्धि २१
 साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्म २५ इन्द्र २६ वैष्णव २७
 इति सप्तविंशति योग समाप्त ॥ ये सत्चार्हस योग हैं ।

अथ षट् ऋतवः

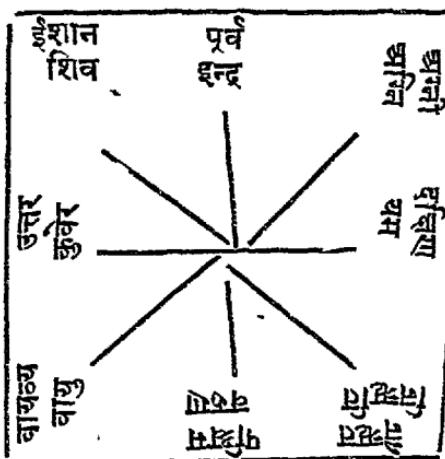
बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर

एक एक ऋतु दो महीने वर्तमान रहती है । जैसे मेष वृष के सूर्यमें यानी वैशाख ज्येष्ठमें वसन्त ऋतु होती है । मिथुन कक्ष के सूर्य में यानी आषाढ़ श्रावण में ग्रीष्म । सिंह कन्या के सूर्य यानी भाद्रपद आश्विन में वर्षा ऋतु होती है । तुला वृश्चिक के सूर्य में यानी कार्तिक, मङ्गशिर में शरद् । धन यक्षर के सूर्य में यानी पोष माघ में हेमन्त । कुम्भ मीनके सूर्य में यानी कालगुण, चैत्र में शिशिर । छः महीने सूर्य उत्तरायण और ६ महीने दक्षिणायण रहता है । उत्तरायण सूर्य के देवताओं का दिन होता है और दक्षिणायण में रात होती है । इसी कारण जितने शुभ काम हैं उत्तरायण सूर्य में अच्छे होते हैं । माघ, कालगुण, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ अषाढ़ इन छः भाषीनों में सूर्य

उत्तरायण रहता है। और आदर्श, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मङ्गशिर, पूष इन ६ महीनों में सूर्य दक्षिणायण रहता है। ये संक्रांति के हिसाब से हैं सो पत्र में लिखा रहता है। मीन की संक्रांति के जव नौ अंश जायेंगे उसी रोज से सूर्य उत्तरायण हो जाता है। और कल्या की संक्रांति के नौ अंश जब जायेंगे उसी रोज से सूर्य दक्षिणायण हो जाता है।

अष्ट दिशाओं के स्वामी

अष्ट दिशा चक्रम्



पूर्व का इन्द्र स्वामी। अग्नि का अग्नि स्वामी। दक्षिणका यमस्वामी। नैऋतिका निन्द्रित्य। पश्चिमका वरुण। वायव्यका वायु। उत्तर का कुवेर, ईशान का शिव। ये आठों दिशाओं के आठ मालिक हैं इसी प्रकार चक्र में जानने चाहिये।

अथ एकादश करणानि

वब १, बालब २, कौलब ३, तैतिल ४, गर ५,
वणिजू ६, विष्टि ७ ।

ये सात करण चर हैं ।

शकुनी द, चतुष्पद ८, नाग ९, किस्तुधन १० ।

ये चार करण और स्थिर हैं इस कारण बारह करण हैं ।

बारह राशियों के नाम

१ मेष २ वृष्णि ३ मिथुन ४ कर्क ५ सिंह
६ कन्या ७ तुला ८ वृश्चिक ९ धन १० सकर
११ कुम्भ १२ मीन ।

अथ दिनमान देखना

सुनो ! साठ घड़ी का एक दिन होता है । कभी दिन बड़ा हो जाता है कभी रात बड़ी हो जाती है और एक घड़ी के साठ पल होते हैं और ६० पलकी एक घड़ी होती है और एक पल के ६० विपल होते हैं और ६० विपल का एक पल होता है । २॥ पल का एक मिनट होता है और २४ मिनट की एक घड़ी होती है २॥ घड़ी का एक घण्टा और २४ घण्टों का एक दिन रात होता है । और एक नक्त्र के चार चरण होते हैं । यानी चार हल्के जब किसी बालक का जन्म होता है उस रोज देखनाकि कौनसा नक्त्र है उस नक्त्र

के चार भाग करले; जब से वह नक्त्र शुरू हुआ हो और जब तक रहेगा। जैसे अश्विनी नक्त्रमें जन्म हुआ हो तो देखो कि यह नक्त्र ६० घड़ी भोग करता है तो पन्द्रह पन्द्रह घड़ीके चार चरण हुये और जो नक्त्र ६० घड़ी से कमती बढ़ती हो तो उतनी ही घड़ियों को चार जगह बांटे, जितना बंट आवे, उतनी ही घड़ियों पलोंका एक चरण जाने, जौन से चरण में जन्म हो उसी चरण का अक्षर नाम में पहिले आता है इसका कुछ प्रमाण नहीं है कि एक नक्त्र ६० ही घड़ी भोगे जो पंडित ६० घड़ी लगाते हैं उनके लगाने से राशि में फर्क आता है। अब देखिये कि अश्विनी नक्त्र में जन्म हुआ तो यह देखो कि कौन से चरण में जन्म हुआ, उसी चरण के अक्षर पै नाम धरे। जैसे चूंचे चौला अश्विनी। पहले चरण का अक्षर चूं है दूसरे का चै है तीसरेका चो है और चौथेका ला है। जो चूं पै लड़केका जन्म हो तो चुन्नी। लड़की का जन्म हो तो चुनिया। चै पै हो तो चेतराम, चेतो। चो पै चोखराज, चोलावती। लापै लाला या लालमण, या लालजी, या लाली सब नक्त्रों पै ऐसे ही नाम धरे। ब्राह्मण के यहां मिश्र करके लिखे ज्ञाती के यहां सिंह करके। और जिस नक्त्र के चरण पै लड़के या लड़की जन्म होगा उसका वही नक्त्र होगा। जैसे यहां चार अक्षरोंका एक नक्त्र ले इसी प्रकार चार अक्षरों के २८ नक्त्र हैं उन २८ नक्त्रों के नाम आगे के पत्र में लिखे हैं।

चार अक्षरों के नक्तन

चू	चे	चो	ला	अन्धिनी	रु	रे	रो	ता	स्वाती
ली	लू	ले	लो	भरणी	ती	तु	ते	तो	विशाखा
आ	इ	ऊ	ए	कृतिका	न	नी	नू	ने	अनुराधा
ओ	वा	वि	बु	रोहिणी	नो	वा	यी	यू	ज्येष्ठा
वे	वो	क	की	मृगसिर	ये	यो	भ	भी	मूल
कु	घ	छ	छ	आद्रा	भू	धा	फा	ढा	पूर्वापाद
के	को	ह	ही	पुनर्वसु	भे	भो	ज	जी	उत्तरापाद
ह	हे	हो	डा	पुष्य	जू	जे	जो	खा	अभिजित्
दि	द्व	दे	डो	श्लेषा	ख	खी	खू	खे	अवण
म	मी	म०	मे	मधा	ग	गी	गू	गे	धनिष्ठा
मो	टा	टी	द	पू०फा०	गो	शा	शि	शू	शतभिषा
टे	टो	प	पी	उ०फा०	से	सो	द	दी	पू०भाद्र०
पू	ष	ण	ठ	हस्त	दू	थ	क	व	उ०भाद्र०
पे	पो	र	री	चित्रा	दे	द्वे	च	ची	रेवती

और नौ अक्षरों की एक राशि होती है जैसे चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ—मेप। इन नौ हफ्तों की मेप राशि हुई। इन हफ्तों में जिनके नाम का अक्षर होगा उसकी मेप राशि होगी ऐसे ही ये वारह राशि हैं। इन वारह राशियों के नाम आगे के पत्रे में लिखे हैं।

नौ अक्षरों की राशि दो अक्षरों की राशि

मेष	आ ला	मेष
वृष	ओ वा	वृष
मिथुन	का छा	मिथुन
कक्क	डा हा	कक्क
सिंह	मो टा	सिंह
कन्या	पा ठा	कन्या
तुल	रा ता	तुल
वृश्चिक	नो या	वृश्चिक
धन	भू धा	धन
मकर	खा गा	मकर
कुम्भ	गो शा	कुम्भ
मीन	दा चा	मीन

और सवा दो नक्त्रों का एक चन्द्रमा होता है । जिसे आश्विनी भरणी-कृतिका के एक चरण तक मेष के चन्द्रमा रहते हैं और जिसे का आश्विनी नक्त्र का जन्म होगा या भरणी का होगा और कृतिका के एक चरण तक का होगा उसकी मेष राशि होगी ।

चंद्रमा देखना

आश्विनी भरणी कृतिका पादे मेषः । कृतिकानाम त्रयः पादां रोहिणी मृगशिर अर्द्धं वृषः ॥ मृगशिर अर्द्धं आद्रा पुनर्वसुपाद त्रयं मिथुन । पुनर्वसुपाद मेकं पुष्या श्लेषान्ते कक्कं । मधा च पूर्वाफ्नालगुणी

उत्तरापादे सिंह । उत्तराणाँ त्रयःपादा हस्तचित्राद्दृं
कन्या । चित्राद्दृं स्थातिविशाख पादत्रयंतुल ।
विशाखा पादमेकं अनुराधा ज्येष्ठान्ते वृश्चिक ।
मूल च पूर्वपादे उत्तरापादे धन । उत्तराणाँ त्रयः
पादाः श्रवणधनिष्ठाद्दृं मकर । धनिष्ठाद्दृं शत-
भिपा पूर्वा खाद्रपदपादत्रयं कुम्भ ॥ पूर्वाखाद्रपद
पादमेकं उत्तरा भाद्रपद रेवती मीन ॥

टीका-अश्विनी के ४ चरण भरणी के ४ चरण कृतिका का
१ चरण तक मेषके चन्द्रमा रहेंगे । कृतिकाके ३ रोहिणी के ४
मृगशिर के २ चरण तक वृष के चन्द्रमा रहेंगे । मृगशिर के २
आद्रकिं४ पुनर्वसुके तीन चरण तक भिथुन के चन्द्रमा रहते हैं ।
प्रज्ञवर्षसुका १ पुष्य के ४ श्लेषा के ४ तक कर्कके चन्द्रमा रहेंगे ।
मघा के ४ पूर्वफाल्गुनी के ४ उत्तराफाल्गुनी के १ चरण तक
सिंह के चन्द्रमा । उत्तरा फाल्गुनी तीन हस्तके४ चित्राके२ तक
कन्या के चन्द्रमा । चित्रा २ स्वा० ४ वि० ३ तक तुल के
चन्द्रमा । वि० १ अनु० ४ ज्ये० ३ तक वृश्चिक के चन्द्रमा ।
मृ० ४ पू० पा० ४ उ० पा० १ तक धन के चन्द्रमा । उ०
षा० ३ श्र० ४ धन २ तक मकर के चन्द्रमा ॥ धन२ श० ४
पूर्वा भाद्र० तीन तक कुम्भके चन्द्रमा । पू०भा० १ उ०भा० ४
रेवती ४ तक मीनके चन्द्रमा रहेंगे । इस क्रमसे सबके जानलें ।

जब किसी लड़के का जन्म हो उस वक्त लग्न देखना कि
इस वक्त क्या लग्न है । पहले यों देखे कि इस महीने में सूर्य
काहे का है जिस राशि का सूर्य हो उस से सातवीं राशि पर

सूर्य छिप जाता है। जिस राशि पे सूर्य हो उसको संक्राति कहते उस राशि का एक अंश रोज घटता है। २६ अंश तक। ३० अंश पे सूर्य दूसरी राशि पे होजाता है। वोही संक्राति है। एक महीना सूर्य एक राशि पर रहता है। १२ राशियों पर इसी प्रकार घूमता है। अब लग्न देखना चाहिये कि चैत्र के महीने में किसी के बालक हुआ तो चैत्र के महीने में मीन की संक्राति होती है। अर्थात् मीन का सूर्य होता है जिस दिन से संक्राति शुरू होगी उसी दिनसे मीनका सूर्य होता है। जिस वक्त सूर्य उदय होता है। उस वक्त मीन लग्न रहता है। और तीन घड़ी चौंतीस पल भोगता है। यानी तीन घड़ी चौंतीस पल दिन चढ़े तक रहता है। फिर मेष आजाता है। ऐसे ही दिन रात में १२ लग्न भोग करते हैं, और संक्राति के जितने अंश बीतते जायेंगे वो लग्न उतना ही रात में बीतता जायगा। अब देखिये कि मीन की संक्राति के १० दिन गये जब किसी के बालक हुआ तो संक्राति के १० अंश गये तो वह मीन लग्न तिहाई रात में बीत जाता है क्यों कि दशती तीश अब मीन लग्न ३ घड़ी ३४ पलका है १ घड़ी १२ पल रात में बीता और २ घड़ी २२ पल दिन चढ़े तक रहा फिर मेष आ गया जो १० घड़ी १५ पल दिन चढ़े किसी के बालक हुआ तो १० घड़ी १५ पल का इष्ट हुआ ऐसे ही जोड़े। चाहे किसी के किसी वक्त बालक हुआ वो ही उसका इष्ट होता है। २ घड़ी २२ पल मीन लग्न बाकी रहा और ३। ३४ मेष और ४। ७ वृष। इनको जोड़ो तो १०। ३ आया अब देखो इष्ट १०। १५ का है तो जानो मिथुन लग्न रहा ॥ एक कायदा और है इष्टकी घड़ी पल यानी जितना दिनचढ़ा

हो या जितनी गत गई हो अर्थात् जितना इष्ट हो यों देखे कि संक्रांति के किंतु अंश गये हैं पत्रे में देखे जितने सूर्यकी राशि के अंश गये हों उतने अंश के कोष्ट में लग्न सारणी में देखे उसी खाने की घड़ी पल इष्टमें जोड़ दे जो घड़ियां ६० से अधिक हों। फिर उसमें साठ का भाग दे जो अंक वचे लग्न सारणी में देखे इन अंकपर क्या लग्न है जहां अंक मिलेवो ही लग्न जानना

अथ लग्न देखना

श्लोक

मीने मेषे २१४ कृत भू नेत्रे बृष कुम्भे २४७
मुनि वेद भजा मकरे मिथुने ३०१ शशिख बन्हिः
कर्के धनुषि शरा कृत रामाः ३४५ वृश्चकसिंहे ३५१
रूप शराग्निः कन्या तुल ३४२ भुजवेद गुणा ॥

अथ लग्न योग चक्रम्

३	४	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घड़ी
३४	७	१	४५	५१	४२	४२	५१	४५	१	७३४	पल
मै०	बृ०	मि०	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	बृ०	धन	म०	कु०	मी०

अथ तिथिगन्डातं लिख्यते

नन्दा तिथिश्च नामादौ पूर्णनां च तथांति के ।
घटिकैकाशुभा त्याज्या तिथि गंडे घटिद्वयम् ॥

टीका—नन्दा तिथि के आदि की-पूर्णा के अन्त की एक एक घड़ी अशुभ होती है।

अथ नक्षत्रगणठान्तम्

ज्येष्ठा श्लेषा रेवती च नक्षत्रान्ते घटिकाद्वयम् ।
आदौ मूलमधा शिवन्या भगण्डे घटिकाद्वयम् ॥

टीका—ज्येष्ठा श्लेषा रेवती के अन्त की २ घड़ी और मूल मधा अश्विनी के आदि की दो दो घड़ी शुभ कार्य में अशुभ होती हैं।

अथ लग्नगणठान्तमाह

मीनवृश्चिक कर्कांते घटिकार्धं परित्यजेत् ।
आदो मेषस्व चापस्य सिंहस्य घटिकार्द्धकम् ॥

टीका—मीन, वृश्चिक, कर्क—के अन्त की आधी घड़ी, मेष, धन, सिंह के आदि की आधी घड़ी में शुभ काम न कीजे।

तिथिगण्डे भगण्डे च लग्न गण्डे च जातकः ।
न जीवति यदाजातो जीविते च धनी भवेत् ॥

टीका—तिथि, नक्षत्र, लग्न के गणांत में वालक का जन्म हो तो न जीवे। जो जीवे तो धनी हो। ये छः नक्षत्र गण्ड हैं।
मू० ज्य० श्ल० अ० रे० म० । ज्य० मू० श्ल० इन तीन का रिवाज जारी है। अ० रे० म० इन तीन का क्रम है।

ज्येष्ठा नक्षत्र फल

ज्येष्ठादौ जननीमाता द्वितीये जननीपिता ।
 तृतीये जननीभ्रातास्वयं माता चतुर्थके । आत्मानं
 पञ्चमे हन्ति षष्ठे गोत्रंक्षयौ भवेत् । सप्तमे चोभय
 कुलं ज्येष्ठभ्रातरमप्पमे । नवमे श्वसुरं हन्ति सर्वं
 हन्ति दशांशकम् ॥

टीका—६० घड़ी के दस भाग करे फिर छः छः घड़ी का
 फल कहे ज्येष्ठा नक्षत्र की पहली ६ घड़ी में जो वालक का
 जन्म हो तो नानी को अशुभ । दूसरी ६ घड़ी में नाना को
 कष्ट । तीसरे ६ घड़ी में मामा को कष्ट । चौथी ६ घड़ी में
 माता को कष्ट । पांचवीं ६ घड़ी में वालक को कष्ट । छठी ६
 घड़ी में गोत्र वालों को कष्ट । सातवीं ६ घड़ी में नाना के
 परिवार को और अपने कुदुम्ब को कष्ट । आठवीं ६ घड़ी में बड़े
 आताको कष्ट । नवीं ६ घड़ी में ससुर को कष्ट । दशवीं ६ घड़ी
 में सब कुदुम्ब को कष्ट कहै ।

अथ मूल नक्षत्र फल

मूलेष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाः परिकीर्तिता ।
 स्तम्भेषु षष्ठघटिकास्त्वचि चैकादश स्मृता ॥
 शाखायां च नव प्रोक्ताः पत्रे प्रोक्ताश्रतुर्दश ।
 पुष्पेषञ्च फले वेदाः शिखायां च त्रयः स्मृता ॥

मूले नाशोहि मूलस्य स्तम्भे हानिर्धनक्षयः ।
त्वचि भ्रातुर्विनाशश्च शाखायां भ्रातृपीडनम् ॥
परिवारक्षयं पत्रे पुष्पे मन्त्री च भूपतिः ।
फले राज्यं शिखायां स्या अल्पजीवीं च बालकः ॥

टीका—अब मूल संज्ञक नक्षत्र के विचारने की रीति मूलचक्र से कहते हैं। मूल वृक्ष बनाकर उ घड़ी जड़ में धरे ६ स्तम्भ में ११ त्वचा में नौ शाखा में १४ पत्र में ५ पुष्प में ४ फल में ३ शिखा में इस प्रकार ६० घड़ी धरिये। फिर उसका फल कहै। जो मूल की उ घड़ी में बालक का जन्म हो तो मूल नाश हो। स्तन्म की उ घड़ी में होय तो धन हानि। त्वचा की ११ घड़ी में होय तो आत का नाश। शाखा की नौ घड़ी में होय तो भ्राता को धीड़ा करे। पत्तों की १४ घड़ी में होय तो परिवार का नाश। फूलों की ५ घड़ी में होय तो राजा का मन्त्री हो। फलों की ४ घड़ी में जन्म हो तो राजा हो। अथवा वंश में या देश में श्रेष्ठ होय। शिखा की ३ घड़ी में जन्म हो तो आयु अल्प पावे अर्थात् उमर घोड़ी हो।

मूल वृक्ष फलम्

शिखा	फल	फूल	पत्र	शाखा	त्वचा	स्तम्भ	मूल
३	४	५	१४	६	११	६	८
अल्पायु	राजा	राजा	मं०परि०	क्षयमा०कष्ट	भ्रा०ना०	धनहा०	मू०नाश

श्लेषा - नक्षत्र फलम्

मूर्ढास्थनेत्रगलकामयुगं च बाहू— हृज्जानु
 गुह्य पदमित्यहि देहभागः ॥ वाणादि नेत्रहुतभुक्
 श्रति नाग रुद्रं—षड् नंदं पञ्च शिरसः क्रमशस्तु
 नाड्यः ॥१॥ राज्यं पितृक्षयो मातृनाशः काम-
 क्रियारतिः । पितृभक्तो बली स्वज्ञस्त्यागी भोगी
 धनी क्रमात् ॥२॥

टीका—श्लेषा नक्षत्र के जिस भाग में वालक का जन्म हो उसका फल कहना । श्लेषा नक्षत्र की पहली ५ घड़ी में वालक का जन्म हो तो राज प्राप्ति । दूसरे भाग की ७ घड़ी में फिता को कष्ट । तीसरे भाग की २ घड़ी में माता को कष्ट । चौथे भाग की ३ घड़ी में पर खीरत । पांचवें भाग की ४ घड़ी में पिता का भक्त । छठे भाग की ८ घड़ी में बलवान् । सातवें भाग की ११ घड़ी में आत्मधाती । आठवें भाग की ६ घड़ी में त्यागी । नवमें भाग की ६ घड़ी में भोगी । दशवें भाग की ५ घड़ी में धनवान् । इस प्रकार ६० घड़ी के १० भाग करके फल कहै ।

मूल ज्येष्ठा श्लेषा इन के अलग २ विचार

जो इन ६ नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र में वालक का जन्म हो तो इनका २८००० मन्त्र का जाप करवाये या जितनी श्रद्धा हो दसवें दिन साधारण दस्तूर करने के बाद और जबक्ष

नक्षत्र २८ दिन में फिर आवे जिस नक्षत्र का मन्त्र जपा हो उस दिन शान्ति करे और जितना मन्त्र जपा हो उसके दशांश का हवन करे और ७ या १४ या २१ या २८ ब्राह्मण जिमावे तब मूल आदि का दोष दूर होता है नहीं तो विघ्न होता है ।

अथ मूल नक्षत्र मंत्रः

ॐ मातेव पुत्रमृथिवी पुरीष्य मग्नि ७ स्वेयो नाव
मारुषा तां विश्वेदे वै ऋतुभिः संविदानः प्रजापति
र्विश्वकर्मा विमु चतु ॥१॥

श्लेषा मंत्रः

ॐ नमोस्तुसर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥२॥

ज्येष्ठा मन्त्र

ॐ सहषुहस्तैः सनिषं गीर्भिर्व शीस ७
सृष्टा सयुधऽइं द्रो गणेन । स७सृष्ट जितसोमपाबाहु
शद्गुर्युग्र धन्वाप्रति हिताभिरस्ता ॥३॥

अश्विनी मन्त्र

ॐ अश्विनीतेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् ।
वाचेन्द्र वसेन्द्रायदधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विभ्यानमः ॥४॥

अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में बालक का जन्म हो तो पिता को बाधा हो, दिनमें जन्म होतो पिता को कष्ट, रात्रिमें जन्म हो तो माता को कष्ट, संध्या में हो तो अपने को कष्ट हो।

मधा मन्त्र

ॐ पितृभ्यः स्वधा यिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः
स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः
स्वधानमः अक्षन्नपितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतपंत-
पितरः शुन्धध्वम् ॥५॥

मचाके प्रथम चरणमें जन्म होतो मातृपत्रको कष्ट छितीयमें पिताको
कष्ट। तृतीय चरणमें सुख संपत्ति, चतुर्थ चरणमें धन प्राप्ति हो।

रेवती मन्त्र

ॐ पूषन् तव ब्रते वयन्तरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त
इहस्मसि ॥६॥ ॐ पूषणे नमः ॥

रेवती नक्षत्र के प्रथम घरण में राजा हो, दूसरे चरण में मन्त्री
तृतीय चरण में सुख सम्पत्ति, चतुर्थ चरण में आपे को कष्ट हो।

अथ सामग्री लिख्यते

घडा १ करवा १ सराई १० पचरङ्ग १) नारियल २
सुपारी ५०, चून, चावल, फूल, हार, दूध कुशा, वताशे १)
धूप १) कपूर १) अङ्गोले २, कपड़ा लाल दो गज चंदोयेके वास्ते
पांचों मेवा १) केले ४, २७ खेड़ों की कंकर २७ पेड़ों के
पत्ते २७ कुओं का पानी, आम की ठहनी, गंगाजल यमुनाजल
हरनंदका जल, समुद्रका जल या समुद्रभाग, पंचरस्न पंचपल्लव
पंचगब्य, पंचामृत, घंदरवार, हल, वांस की टोकरी घडा कच्चा
१०१ छेदका, बटी १, छायादान की कटोरी २, बृषदान, गोदान
मूर्तीं सोने की नूल की, चांदी की १ मूलनी की, सतनजा २७
सेर या श्रद्धा सहित, मिही हाथी के नीचे की, घोड़े के नीचेकी,
गौ के नीचे की रथके नीचे की, बसी की, नदी के आरपारकी

राजद्वार की । हवन की सामिग्री-चावल १ हिस्सा, धी २, जौ४ तिल ४, बूरा २, मेवा ५ छटांक, अष्टगंध इन्द्रजौ, भोजपत्र पीली मिहुँी ५ सेर, एक लक्ष मंत्रपै १ मन चरु होना चाहिए इसीहिसाब से जितना मंत्र जपा हो उतनी ही सामिग्री होनी चाहिये ।

अथ जन्म पत्री लिखना

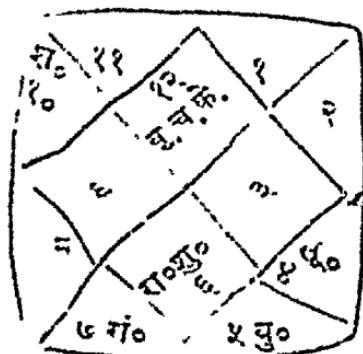
ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये । विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा दस्मै नमो विघ्नबिनाशनाय १ जननी जन्म सौख्यानां वद्धनी कुलसंपदाम् पदवी पूर्वपुण्यानां लिख्यते जन्मपत्रिका । अथ शुभ संवत्सरे १८६२ शाके शालिवाहनस्य १८५७ उत्तरायणे वा दक्षिणायने वर्षान्ती मासानां मासोत्तमे मासे भाद्रपदमासे कृष्ण पक्षे शुभतिथौ ३ तृतीयायां भौमवासरे घठयः ३१ पलानि ०१ पूर्वभाद्रपदनाम् नक्षत्रो ४३ । ०१ अतिगंड नामयोगे० ५। ३१ वब नामकरणे ३१ । ०१ तत्र दिन प्रमाणं ३४ । ५७ रात्रिप्रमाणं २५ । ०३ कर्क गतांशाः २५ शेषांशाः ५ तत्रैष्टम् ३४। ५७ तत्समये मकरलग्नो दये विश्रवंशो वशिष्ठगोत्रे मिश्र रामप्रसादजी तत्पुत्र

मिश्र धासीरामजी तत्पुत्र मिश्र केदारनाथजी गृहे
पुत्रो जातः । पूर्वा भाद्रपदभे ४ चरणे जन्म नाम
मिश्र दिवानसिंहजी स चेश्वरकृपया दीर्घायुषमान
भवतु तस्यराशिः मीन, वर्ष, विप्र, वैश्य जलचर,
योनि, अश्व, राशीश, गुरुः, गण, मनुष्य, नाड़ी,
आद्य, वर्ग, सर्प, एते गुणा विवाहादौ व्यवहारादौ
च विचारणीयाः शुभम् भूयात् ॥

अथ जन्मकुण्डली



अथ चन्द्रकुण्डली



लग्न परीक्षा और ग्रहों का फल

शब्दे मेषे वृषे सिंहे मकरे च तथा तुले ।

अर्द्धशब्दो घटं कन्या शेषे शब्द विवर्जयेत् ॥

टीका—मेष, वृष, सिंह, मकर, तुल, इन लग्नों में वालकका जन्महो तो होते ही रोवे और कुम्भ, कन्या में रोकर चुप हो जाय अर्थात् थोड़ा रोवे और लग्नों में वालक रोवे नहीं ।

शर्णीर्दये विलग्ने मूर्धा प्रसवोऽन्यथोदयेचरणौ

उभयोदये च हस्तौ शुभहृष्टःशोभनोऽन्यथा कष्टः॥

५, ६, ७, ८, ३, ११ इन लग्नों में जन्म हो तो शिर से पैदा हुआ और १२ लग्न में हाथों के बल पहले दोनों हाथ आये और १, २, ४, ६, १०, इन लग्नों में पैरों की तरफ से जन्म कहना । लग्न पर शुभ ग्रह की वृष्टि हो तो बिना कष्ट पापग्रह की वृष्टि से कष्ट से हुआ ।

**मीने मेषे च द्वे भाये चतस्रो वृषकुम्भयोः ।
तुलायां च सप्त कन्यायां वाणः च धनकर्कयोः। अन्य
लग्ने भवे त्रीणि सूतिकायां विधीयते ॥**

टीका—मीन, मेष, लग्न में २ स्त्री कहै । वृष, कुम्भ में ४ स्त्री कहै । तुल, कन्या में ७ स्त्री कहै । धन, कर्क में ५ स्त्री कहै ।

शशि लग्ने समाधात्रो ज्येष्ठहेशो दिग्म्बरं ।

ते बीच मन्दिरनारी बालकस्य युवा वृद्धः ॥

टीका—लग्न से जहाँ चन्द्रमा पड़े उस बीच में जो ग्रह हों उतनी स्त्री कहै बाल, युवा, वृद्ध ।

पापश्च विधवा नारी क्रूरग्रहे कुमारिका ।

सौभ्यग्रहे सुभागा च सूतकायां विधीयते ॥

टीका—लग्न के और चन्द्रमा के बीच में जो पापग्रह हों उतनी विधवा स्त्री कहै । जो क्रूर ग्रह हों उतनी कुधारी कहै । और जो शुभ ग्रह हों उतनी सुहागन कहै ।

यत्र राहुस्तत्र शश्या मङ्गलं तत्र भंगदः ।

रविस्थाने दीपकश्च शनिः लोहं च जायते ॥

टीका—जहाँ राहु हो वहाँ खाट कहै । जहाँ भंगल हो खाट

पुरानी या पावा फटा हुआ कहै। जहाँ स्थय हो वहाँ दीपक का स्थान कहै जहाँ शनिश्चर हो वहाँ लोहा कहै।

उदयस्थेपि वा मन्दे कुजे वास्तं समागते ।

स्थिते वातः क्षया नाथे शशांक सुत शुक्रयोः॥

टीका—जो शनि लग्नमें हो या ७ मंगल हो या चन्द्रमा ३, ६, २, ७ इन राशियों का होय तो पिता घर नहीं था ऐसा कहना।

राशियों के स्थान

१ मेप, शिर, २ मुख, ३ स्तन, ४ हृदय, ५ उदर, ६ कंठ ७ नामि, ८ लिंग; नौ गुदा, १० जां, ११ घुटना १२ पूँँ। इनमें से जन्म समय जिस राशि में पापयुक्त ग्रह हो उसी जगह तिल या लहसन का निशान बताना।

सिंह कन्या धनेर्मीने कर्कटे च तथा तुले ।

अंतरिक्षे भवेज्जन्म शेषौ भूमौ च जायते ॥

टीका—सिंह, कन्या, धन और मीन कर्क तुल इन लग्नों में बालक का जन्म शैया पर कहै या हाथों पर और लग्नों में पृथ्वी पर कहै।

दशमे छुधजावश्च केन्द्रस्थाने यदा भवेत् ।

सूर्यश्च तथा भौमश्च बालकस्य षडंगुली ॥

सव्यहस्तं करं चैव दक्षिणे करमेव च ।

वामहस्ते भवेद्राज्यं सजातो कुलदीपकः ॥

टीका—दशवें स्थान बुध या गुरु हो या केन्द्र १, ४, ७, १०

में हों या सूर्य मंगल हो तो बालक के ६ उङ्गली कहै बांयेमें
या दांये हाथ में या पैर में । बांये हाथ में छः उंगली अच्छी
होती हैं ।

तनुस्थाने यदा चन्द्रो अथवा पष्ठे वा भवेत् ।
बालकस्य भवेजजन्म तैलं दीपे न दृश्यते ॥
शुक्रः शौर्णिर्दशम्यां च पञ्चम राशिचंद्रमा ।
तस्यबालस्य भवेजजन्म दीपकं परिपूर्णकं ॥
खंडदीपं तथा बुधे अष्टमे च बृहस्पतौ ॥

टीका—तनु स्थानमें या छठे स्थानमें चन्द्रमा होतो दीपक
में तेल नहीं था । शुक्र शनि दशवें स्थान हो, चन्द्रमा पांचवें
होतो दीपकमें तेल भरा हुआ कहै । बुध हो तो आधा दीपक तेल
से भरा हुआ कहै । अष्टम बृहस्पति होतो थोड़ा तेल भरा हुआ
ऐसा कहै । जो लग्नके आरम्भमें जन्म होतो वची पूरी थी और
जो मध्यमें आधी और अन्तमें नहीं रही थी ऐसाकहना चाहिए।

चरलग्ने करे दीपं स्थिरे तत्रैव संस्थिते ।
द्विस्वभावे तथा लग्ने दीपं हस्ते प्रवालयेत् ॥

टीका—जो सूर्य चर राशिमें हों या चर लग्न होतो दीपक
हाथ में उठाया हुआ कहै । स्थिर लग्न में वहीं धरा कहै ।
द्विस्वभाव में उठा के वहीं धर दिया या वची और गेरी हो ।

लग्नेन्दुमध्ये शनिर्मिष्टतैलं सूर्योभवेत्तस्य बृतस्यदीपं
शेषग्रहे कटुमैसतैलं एवं प्रसूताखिलदीपमाहुः ॥

टोका—जो लगनमें चन्द्रमा या शनि हो तो दीपकमें भीठा तेल कहै, सूर्य हो तो घी का कहै और कोई ग्रह होतो कड़वाकहै।

द्वादशे भवने भौमे वामनेत्रं विनश्यति ।

द्वादशे रवि राहुश्च दक्षिणं चक्षु नाशयेत् ॥

टीका—१२ स्थान मङ्गल हो तो बांया नेत्र विगड़ा कहै। और १२ सूर्य राहु हो तो दाहिनी आंख का नाश कहै।

शुक्रश्च तृतीये स्थाने सिंहे मेषे वृद्धस्पतौ ।

दशमे अक्षे भौमे च मूँझे भवति वालकः ॥

टीका—तीसरे शुक्र हो, मेष का या सिंह का गुरु हो और दशमे सूर्य हो या मङ्गल हो तो वालक गूँगा हो।

तुलालि कुम्भो अकुलीर लग्ने वाच्ये प्रसूता गृह वृद्धारे। कन्याधनुर्मीननृयुग्नलग्नने स्यादुत्तरा पश्चिमतो वृषे च। मेषे च सिंहे मकरे च याम्ये निगद्यते सौमुनिद्वारदेशः ॥

टीका—तुल, वृश्चिक, कुम्भ, कर्क इन लग्नों में वालक का जन्म हो तो जचा के घर का दर्वाजा पूरब को बतावे। और ६। १२। ३। इनमें उत्तर को, २ में पश्चिम को, १। ५। १०। में दक्षिण को दर्वाजा कहें।

अर्कसुतः कुजोराहुः पंचमस्थो प्रसूतिर्व ।

लशुनं वामकुक्षौ च गर्गचार्येण भाषितं ॥

टीका—शनि राहु मङ्गल ये ग्रह पांचवें स्थान हों तो वाईं कोक में लस्सन कहना ऐसा गर्ग मुनि कहते हैं।

सिंह लग्ने यदा जातो यामित्रे च शनैश्चरः ।
ब्रह्मपुत्रोपि संजातो म्लेच्छो भवति बालकः ॥

टीका—जो सिंह लग्न में बालक का जन्म हो और सातवें स्थान शनि हो तो ब्राह्मणके यहाँ भी बालक म्लेच्छ हो जाता है।

रिपुस्थाने यदा चन्द्रः पट्टरार्ति नैव लंघते ।

अथवा षष्ठमासं च जातकाय विचारयेत् ॥

टीका—जिसके ६ स्थान में पाप ग्रह के साथ चन्द्रमा हो तो ६ दिन तक कष्ट कहै। या ६ महीने तक जीवे ॥

रवि शशि मंगल वारास्वा कृतिका भरणी युता
श्लेषा छट आठे चौदस्या सो उपजे कन्या धीया ।
आप मरे या माय सतावे, कुल न्ययकरे कलंक लगावे॥

टीका—रवि, शनि, मङ्गल, ये वार और कृतिका, भरणी श्लेषा ये नक्षत्र ६। ८। १४ ये तिथि जो इनमें कन्या का जन्म हो तो या तो कन्या मरे या माता मरे या कुल न्यय हो, या कहीं कलंक लगे ।

आदित्य नवमे तात माता चन्द्र माता चतुर्थके ।
भौमे च तृतीये भ्राता बुध तृतीये च मातुले ॥

टीका—सूर्य से नवमे स्थान में पिता को देखे चन्द्रमा से ४ स्थान माता को देखे । मङ्गल से ३ स्थान में भाई को देखे । बुध से ३ स्थान में माभा को देखे । अच्छा ग्रह हो तो अच्छा फल, बुरा हो तो बुरा फल कहै ॥

चौथ चतुर्दशी नवमी जानों, रवि गुरु मंगल वार-

पहिचानों। जो तीनों में उत्तरा ल है, निश्चै बीज
पराया कहै ॥

टीका—४ । १४ । ६ । ये तिथि सूर्य, गुरु मंगल ये वार और
तीनों उच्चरा नक्षत्र में बालक हो तो और का विन्द कहै ॥

चतुष्पदगते भानौ शोषैर्वीर्यसमन्वितौः ।

द्वित्तिनुस्थैः चक्षव्यमलौभवः कोशवेष्टितौ ॥

टीका—सूर्य चतुष्पद राशि १। २। ४ परार्ध मकर पूर्वार्ध में
होवे और सब ग्रह द्विस्वभाव में बलवान होय तो दो बालक का
जन्म कहै ॥

षष्ठाष्ठमे च मूर्तौ च राहुश्च भवति यदि ।

चतुर्वर्षे भवेन्मृत्यु रक्षति यदि शंकरः ॥

टीका—६। ३। १। राहु हो तो चौथे वर्ष में मृत्यु कहै । जो
महादेव भी रक्षा करे तो भी न जीवे ।

चतुर्थे च गतो राहुः अथवा दशमो भवेत् ।

तस्य बालस्य जन्मेषु दशमेमासि न जीवति ॥

टीका—४या १० स्थान राहु हो तो दशवें महीने में कष्ट कहै।
मीने च लग्ने गुरुर्भार्गवः स्यात् मेषे च सूर्यो मकरे
कुजः स्यात् । महीपति छत्रधरोपि बालः दशापि
जाता नृपतिर्भवेत् ॥

टीका—जो मीन लग्न हो और उसमें शुरु शुक्र पड़े हों और
मेष राशि का सूर्य पड़े, मकर का मंगल पड़े तो बालक नृप हो
या राजा का मन्त्री हो या धनाढ़ी हो ॥

लग्ने शुक्रो बुधो यस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।

दशमेष्वारकोयस्थ सजातो कुलदीपकः ॥

टीका—लग्न में शुक्र या बुध हो केन्द्र, में १४७ १० में गुरु और १० मंगल हो तो बालक कुल में दीपक हो ॥

लग्ने शुक्रो बुधो नास्ति नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ।

दशमेष्वारकोनास्ति सजातः किं करिष्यति ॥

टीका—लग्नमें शुक्र बुध न हो और केन्द्रमें गुरुभी न हो और १० मंगलभी न होतो वो जन्मलेकर क्या करेगा यानी टहलवा लग्नस्थाने यदा भौरी रिपुस्थाने च चन्द्रमाँ ।
कुजश्च दशमस्थाने मृतकः जायते पिता ॥

टीका—लग्न में शनि ६ चन्द्रमा १० मंगल हो तो उसके पिता की मृत्यु हो या कष्ट हो ॥

चतुर्थे कर्मणि सोमः सुखेन प्रसवं कराः ।

त्रिकोणे उस्तंगते पापाः फृष्टतः प्रसवंकराः ॥

टीका—लग्न से ४-१० स्थान चन्द्रमा हो तो माता को कष्ट नहीं हुआ और जो ९-४-७पाप ग्रह हों तो माता को कष्टहुआऽ

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि ।

षष्ठाष्ठमे भवेत् चन्द्रः सर्वारिष्टं निवारयेत् ॥

टीका—जो कृष्णपक्षमें दिनमें और शुक्लपक्षमें रात्रि में बालक का जन्म हो और ६-८ घरमें चन्द्रमा हो तो सबकष्ट दूर करे ॥

लग्नस्थाने यदा शौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमा ।

कुजश्च सप्तमेस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥

टीका—लग्नमें शनि ६ चन्द्रमा ७ मंगल हों तो पिता न जीवे ।

दशमस्थाने यदा भौमः शत्रुः क्षेत्रस्थितो यदि ।

मृतये तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न जीवति ॥

टीका—१० स्थान मंगल हो और शत्रु की राशि में हो उस बालक का पिता शीघ्र मरे ।

त्रिभिरुच्चैभवेद्राज्यं त्रिभिः स्वस्थानि मंत्रिणाँ ।

त्रिभि नर्चै भवेद्वासः त्रिभिस्त भवेत्सठः ॥

टीका—जिसके तीन ग्रह उच्च के पड़े हों वह राजा होता है और जो ३ ग्रह अपने स्थान के हों तो मन्त्री और ३ ग्रहनीच के हों तो दास हो और जो ३ ग्रह अस्त के पड़े हों तो वह मूर्ख होता है ।

जन्म लग्ने यदा भौमः चाष्टमे च वृहस्पतिः ।

वर्षे च द्वादशे मृत्युः यदि रक्षति शंकरः ॥

टीका—जो जन्म लग्न में मंगल और ८ वृहस्पति हों तो १२ वर्ष में मृत्यु हो शंकर भी रक्षा करे तो भी न जीवे ।

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोष्टमैषि वा ।

सद्य एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥

टीका—४ स्थान राहु हो ६ । ८ चन्द्रमा हो तो बालक तत्काल मृत्यु पावे । महादेव भी रक्षा करे तो न जीवे ।

लग्ने क्रूरश्च भवने क्रूरः पातालगोयदा ।

दशमे भवने क्रूरः कष्टे जीवति बालकः ॥

टीका—क्रूर ग्रह का लग्न हो और क्रूर ग्रह ४ स्थान हो । या दशवें स्थान हों तो भी बालक कष्ट से जीवे ।

दशमे भवने राहुः पितामात्रोः प्रपीडनं ।

द्वादशो वत्सरेमृत्युः बालकस्य न संशयः ॥

टीका—१० स्थान में राहु हो तो माता पिता को कष्ट और उसको १२वें वर्ष में मृत्यु तुल्य अरिष्ट हों इसमें संशय नहीं ।

शनिद्वोत्रे यदाभानुभानुद्वोत्रे यदा शनिः ।

द्वादशो वत्सरे मृत्युः बालकस्य न संशयः ॥

टीका—शनि के द्वेत्र में सूर्य और सूर्य के द्वेत्र में शनि हों तो १२ वर्ष में अरिष्ट हो (द्वेत्र स्थान घर को कहते हैं)

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव वृहस्पतिः ।

दशमे ऽङ्गारकश्चैव संज्ञेयः कुलदीपकः ॥

टीका—जिसके जन्म लग्न में बुध, शुक्र हो केन्द्र ४.५, ७, १० में गुरु हो और १० स्थान मंगल हो तो वह बालक कुल में दीपक हो ।

पंचमे च निशानाथो त्रिकोणे यदि वाकुपतिः ।

दशमे च महीसुतः परमायुः स जीवति ॥

टीका—लग्न से चन्द्रमा ५ स्थान त्रिकोण में वृहस्पति हो ५ । ६ । १० । मंगल हो तो उसकी परमायु जानना अर्थात् सौ वर्ष की उमर हो ।

धनस्थाने यदा शौरिः सिंहकेयो धरात्मजः ।

शुक्रो गुरुः सप्तमे च अष्टमे रवि चंद्रमा ॥

ब्रह्मपुत्रो यदि वापि वैश्यासु च सदा रतिः ।

ग्रा तो विंशतिमे वर्षे म्लेच्छो भवतिनान्यथा ॥

टीका—दूसरे स्थान में शनि राहु मंगल हो और सातवें स्थान शुक्र गुरु ही और द स्थान रवि चन्द्र हो तौ ब्राह्मण का पुत्र भी हो तो वेश्यागामी हो और २० वर्ष की उमर में म्लेछ होजाय। अजे सिंहे कुजे शौरी लग्ने तिष्ठति षंचमे । पितरं मातरं हंति भ्रातरं शिशुनः क्रमात् ॥

टीका—जो रवि राहु मंगल शनिश्चर ये ग्रह १।५ स्थान घड़े तो कष्ट देते हैं शनिश्चर रवि हो तो पिता को कष्ट दे। राहु माताको, मंगल भ्राता को। शनिश्चर वालकों कष्ट करता है।

भौमद्वेत्रे यदा जीवः पष्ठासु च चन्द्रमाः ।
वर्षेष्टमेपि मृत्युवै ईश्वरो रक्षति यदि ॥

टीका—मंगल के क्षेत्र में वृहस्पति हो और ६।८ स्थान में चन्द्रमा हो तो ८ वर्ष में वालक को कष्ट कहना जो ईश्वर ही रक्षा करे तौ ही चैते।

दशमेपि यदा राहु जन्म लग्ने यदाभवेत् ।
वर्षे तु षोडषे इयो बुधैमृत्युनर्तस्य च ॥

टीका—१० राहु अथवा लग्न में हो तो १६ वर्ष में अरिष्ट जानना पष्ठे च भवने भोमः राहुश्च सप्तमे भवेत् । अष्टमे च यदा शौरी तस्य भार्या न जीवति ॥

टीका—६ स्थान मंगल हो, और ७ स्थान राहु हो, और ८ स्थान सनि हो, तो उसकी स्त्री को कष्ट कहै।

कन्या की जन्म पत्री में पापग्रह क्रूर ग्रह सातवें स्थानमें ना हों क्योंकि ये वैधव्य योग करते हैं इसका इतना ही देखना बहुत है!

शुभ और अशुभ ग्रह देखना

टीका—चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, शुक्र ये शुभ ग्रह हैं और सूर्य, मंगल, शनि, राहु-केतु ये पाप और क्रूर ग्रह हैं ।

स्त्री कुंडली फलम्

सप्तमे, भार्गवे जाता कुल दोषकरा भवेत् ।
कर्कराशिस्थिते भौमे सौरै भ्रमति वेश्यसु ॥

टीका—सातवें घर में जिस स्त्री के शुक्र हो वो कुल को दोष लगावे कर्क राशि में मंगल हो या शनि हो तो बंध्या हो या घर २ वास करे ।

बाल्ये च जिधवा भौमे पतित्याज्या दिवाकरे ।
तस्मै शौरिः पाप दृष्टे कन्यैव समुपेष्यति ॥

टीका—जिस स्त्री के ७ स्थान भौम हो उसको बालं विधवा जोग कहै सूर्य हो तो पति त्यागन करदे । शनि हो या पाप ग्रह की दृष्टि हो तो उस कन्या का विवाह बड़ी उमर में हो ।

एकएव सुरराज पुरोवा केन्द्रगोनवपंचङ्गो वा ।
शुभग्रहस्य विलोकयुतोवा शेषखेचरबलेन किंवा ॥

टीका—जिस स्त्री के गुरु तो केन्द्र में १ । ४ । ७।१० हो या १।५। हो तो और शुभग्रहों की उन पर दृष्टि हो फिर खोटे ग्रह कुछ नहीं कर सकते ।

भाषा—सूर्य से नौ स्थान पिता का हाल कहना अच्छा या बुरा और चन्द्रमा से ४ स्थान माता का हाल कहना मंगल से ३ स्थान भाई का और शनि से ८ स्थान मृत्यु का कहना ।

बुध से ६ स्थान रोगों का हाल कहना । मामा और शत्रु का कहना । गुरु से ५ स्थान सन्तान का कहना । शुक्र से ७ स्थान स्त्री का कहना । यह दूसरा कायदा है जो ग्रह शुभ पड़े अच्छा कहे पापी या क्रूर पड़े तो खोटा कहे ।

जिस स्थान का त्वामी अपने स्थान से दूसरे स्थान को देखता हो उस स्थान को बढ़ावेगा, पाप ग्रह और क्रूर ग्रह घटावेगा । ये ग्रहों का देखना है जिस स्थान में शुभ ग्रह हो तो उसे बढ़ावेगा और पापी और क्रूर ग्रह का नाश करेगा ।

**मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च राहुर्विनष्ट
तनयां रविजोदरिद्राम् । शुक्रः शशांकतनयश्च
गुरुश्च साध्वीमायुःक्षयं प्रकुरुतेत्र च शर्वरीशः ॥**

जिसके लग्न में सूर्य और मंगल हो वह स्त्री विधवा होती है राहु केतु सन्तान का नाश करता है, शनिश्चर हो तो दरिद्रा होती है और शुक्र, बुध अथवा बृहस्पति होय तो साध्वी (भली हो) और चन्द्रमा हो तो आयु कम करता है ।

**कुर्वन्तु भास्करशनैश्चर राहुभौमाः दारिद्र यदुःख
मतुलं सततं द्वितीये । वित्तेश्वरीमविधवां गुरु
शुक्रसौम्याः नारी प्रभृततनयां कुरुते शशांकः ॥**

टीका—सूर्य शनिश्चर राहु केतु और मंगल यह ग्रह दूसरे स्थान में स्थित हो तो वह स्त्री अत्यन्त दरिद्रा और दुःखित होती है बृहस्पति शुक्र या बुध हो तो वह स्त्री सौभाग्यती और अधिक धनवती होनी चाहिये और चन्द्रमा बहुत पुत्रवती करता है ।

शुक्रेन्दुभौमगुरुसूर्यबुधास्तृतीये कुर्याः सतीं बहु

सुतां धनधोगर्नीं च । कन्यां करोति रविजो वहु
वित्तयुक्ताम् पुष्टि करोति निष्ठं खलु सौहिकेयः ॥

टीका—जिस ल्ही के तीसरे स्थान में शुक्र, चन्द्रमा, मंगल
बृहस्पति सूर्य अथवा बुध इनमें से कोई ग्रह बैठा होय तो वह
ल्ही पतिव्रता अनेक पुत्रवती और धन सम्पन्न वाली होती है। वै
शनि बैठा होय तो उसके विशेष धन होता है, उसी स्थान में
राहु केतु बैठा हो तो शरीर को प्रष्ट करता है।

स्वल्पं एथः चितिजसूर्यसुते चतुर्थे सौभाग्यशील
रहितां कुरुते शशांकः । राहुः सप्तिनिः द्वितांचिति
वित्तलाभम् दद्याद्बुधःसुरगुरुभृगुजश्च सौख्यम् ॥

टीका—चतुर्थ स्थान में मंगल अथवा सूर्य स्थित हो तो
उस ल्ही के दुध स्वल्प अर्थात् थोड़ा होता है। चन्द्रमा, शौभाग्य
और लुशीलता का नोश करता है, राहु केतु हो तो उसके कन्या
ज्यादा होती हैं और उसको भूमि तथा धन का भी लाभ होता
है बुध बृहस्पति और शुक्र हो तो उसे अनेक प्रकार के सुख की
प्राप्ति होती है।

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ—चन्द्रात्मजौ
वहुसुतां गुरुभाग्यवौ च ॥ रोहुर्ददाति मरणं रवि
जश्च शोगं, कन्यानिधानमुदरं कुरुते शशांकः ॥

टीका—पञ्चम स्थान में यदि सूर्य अथवा मंगल हो तो
सन्तान को कष्ट करता है, बुध बृहस्पति और शुक्र हो तो वह ल्ही
अनेक पुत्रवती होती है राहु केतु मरण करता है और शनिश्चर-
ज्यादा रोग उत्पन्न करता है औह यदि चन्द्रमा इस स्थान में
हो तो कन्या ज्यादा होती हैं।

**षष्ठेशनैश्वरकुञ्जौ रविराहुर्जायाः । नारी करोति
शुभगां पतिसेविनीं च । चन्द्रःकरोति विधवामुशना
दरिद्राम् वेश्यां शशाँकतनयः कलहप्रिया वा ॥**

टीका—जिस स्त्री के छटे स्थान में शनीश्चर सूर्य, राहु
केतु वृहस्पति अथवा मंगल इनमें से कोई ग्रह वैठा होय तो
वह स्त्री अच्छी (सदाचरण करनेवाली) और पतिकी अत्यन्त
सेवा करनेवाली होती है छटे स्थान में चन्द्रमा होय तो विधवा
करता है ।

और इसी स्थान में शुक्र के स्थित होने से वह स्त्री दरिद्री
होती है और उस स्थान में बुध वैठा होय तो वह स्त्री वेश्या
अथवा नित्य कलह करने वाली होती है ॥६॥

**सूर्याऽस्तौरिशशिसौम्यगुरु विंदुशुक्रा नारी करोति
सततं निज जन्मलग्नात् । ईशौर्विहीनविधवाँ च
जरा समेतां सौन्दर्यमतृं सुखभोगयुताँ क्रमेण ॥**

टीका—जिस स्त्री के सूर्य सप्तम हो तो वो पतिको त्याग दे,
मंगल हो तो विधवा हो, शनि हो तो बहुत बड़ी का विवाह
हो, चन्द्रया हो तो सुन्दर हो, बुध हो तो सौभाग्यवती, वृह-
स्पति हो तो सर्वं सुख वाली, शुक्र हो तो मोग भोगने वाली
भाग्यवान हो ।

**थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोगं मृत्युं शशाँक
मृगवश्च तथैव राहुः । सूर्यकरोति विधवां शुभगां
महीजः सूर्यात्मजौ बहुसूतां पतिबल्लभा च ॥**

टीका—जिस स्त्री के अष्टम स्थान में वृहस्पति अथवा वुध बैठे हों उसका अपने पति से वियोग रहता है, चन्द्रमा शुक्र तथा राहु केतू स्थित हों तो उसका मरण होता है, सूर्य विधवा करता है, मंगल सदाचरण करने वाली बनता है और शनिश्चर उस स्थान में हो तो उसके पुत्र बहुत हों तथा वह स्त्री अपने पति को प्यारी होती है ।

**चन्द्रात्मजो भृगुदिवाकरसीम्यधिषणाः धर्मस्थिता
विदधते किल धर्मनिष्ठाम् । भौमोरुजं सूर्यसुतश्च
रण्डा नारी प्रसूततनयां कुरुते शशूर्कः ॥**

टीका—जिस स्त्री के वुध शुक्र सूर्य और वृहस्पति नवम स्थान में हों उस स्त्री की वुद्धिको धर्म करने में लगाते हैं मंगल रोग उत्पन्न करता है शनीश्चर विधवा करता है तथा चन्द्रमा सन्तान विशेष उत्पन्न करता है ।

**राहु करोति विधवाँ यदि कर्मणि स्यात् पापे रत्ति
दिनकरश्च शनैश्चरश्च । मृत्युं कजोऽर्थरहिता
कलटाँ चचन्द्रः शेषग्रहा धनवती सुभगा च कर्युः ॥**

टीका—कर्म अर्थात् दशम स्थान में जिस स्त्री के राहु स्थित हो वह विधवा होती है, सूर्य शनि पापमें प्रीति करते हैं मंगल धन का नाश और मृत्यु करता है चन्द्रमा उस स्त्री को कुलटा परपुरुष से प्रीति अन्य ग्रह धनवती और सुभागा करते हैं ।

**आयुः स्थितश्च तपनः करुते सुपुत्रा पुत्रीवतीं
मोहिजोऽर्थवतो हि चन्द्र । आयुष्मतीं सुरगुरु**

तथैव सौम्योराहुः करोति विधवाभृगुर्थयुक्ताम् ॥

टीका—स्त्री के ज्यारहवें स्थान में सूर्य हो तो वह सुपुत्रवती होती हैं, उस ही स्थान में मङ्गल पड़ा हो तो उसे पुत्र की सदैव अभिलाषा वनीरहै और चन्द्रमा धनवती करता है, वृहस्पति आयु की वृद्धि करते हैं, बुध राहु और केतु विधवा करदेते हैं तथा शुक्र अनेक प्रकार के धन का लाभ कराते हैं।

**अन्ते गुरुर्हि विधवाकृदृदिद्रां चन्द्रोधनव्ययकरीं
कुलटां च राहुः । साध्वी भयेत् भृगुबुधौ बहुपुत्र
पौत्रा प्राणप्रसक्तसु हृदा कुजश्च ॥**

टीका—ज्यारहवें स्थान में जिस स्त्री के वृहस्पति हो तो विधवा करते हैं, सूर्य दरिद्रा (धनहीन) कर देता है, चन्द्रमा धन खर्च कराता है राहु केतु कुलटा (व्यभिचारणी) करता है, यदि उस स्थान में शुक्र अथवा बुध हो तो वह स्त्री पति-ब्रता होती है, और मङ्गल अनेक पुत्र पौत्र युक्त करके सुफल बनाता है,

छटी दसूठन बताना

टीका—६ दिन की छटी और १० दिन का या ११ दिन का दसूठन शुभ वार का हो और जन्मपत्री में चन्द्रमा पड़े वही उसकी राशि समझनी चाहिये।

वर्ग देखना लिख्यते

**अवर्गोऽग्नुडो ज्ञेयौ विडालः स्यात्कवर्गकः । चवर्गं
र्हिंहनामास्याद्टवर्गः कुक्कुरः स्मृतः । सर्पाख्यः**

स्यात्तवर्गोपि यवर्गो मूषकः स्मृतः । यवर्गोमृगनामा
स्यात्तथा मेषः शबर्गकः ॥

॥ वर्ग चक्रम् ॥

अ	क	च	ट	त	प	य	श
आ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
इ	ग	ज	ड	द	ब		स
उ	घ	झ	ढ	ঘ	ভ	ব	হ
এ	ঙ	ঝ	ণ	ঞ	ম	০	০
গরुড়	বিলাব	সিংহ	কুত্তা	সপ্ত	মূসা	মৃগ	মেঁদা
वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग	वर्ग

वर्ग बैर देखना

बैरं मूषकमार्जारं तद् वैरं मृगसिंहयोः । बैरं
गरुडसर्पश्च तद् वैरं श्वानमेषयोः ॥

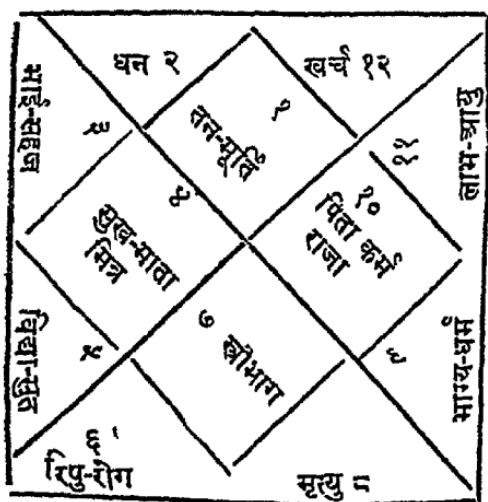
टीका—मूसे का और बिलाब का बैर है । मृग औह सिंह
का बैर । गरुड सर्प का बैर कुत्ते मेंदा का बैर ।

वर्ग फल देखना

स्ववर्गात् पञ्चमे शत्रु शत्रुथे मित्रसंज्ञकः ।
ज्ञानीने ततीयश्च बर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥

टीका—अपने वर्ग से ५ वां वर्ग हो तो वेर जानो चौथा हो तो मित्रता । तीसरा हो तो उदासीन जानना ।

वारह स्थानों के नाम (द्वादश भाव संज्ञा)



ततु १ धर्मनं २
सहो त्याख्यं ३
सुहत ४ पुत्रा
परि ६ योषितः
७ निधनं दधर्म
८ कर्मा १०
५५४ ११व्यया
१२भावा स्ततोः
क्रमात् ॥

टीका—इन वारह स्थानों के नाम ऊपर के चक्र में लिखे हैं
ग्रहों की दृष्टि

टीका—जिस स्थानको जो ग्रह देखता है उसका नाम दृष्टि है । पादैकदृष्टिर्दशमे तृतीय द्विपाददृष्टि नंत्र पंचमेवा । त्रिपाद दृष्टिशतुष्टके च संपूर्णदृष्टिः समसप्तके च तृतीये ३ दशमे १० मंदो नवमे ६ पंचमे ५ गुरु । चतुरा ४ ष्टम ८ भवेत्भौम शोषं सप्त ग्रहा स्मृता ॥

टीका—सब ग्रह अपने स्थानसे तीसरे दशवें घरमें एक पाद दृष्टि से देखते हैं ६ वें ५ वें घर में दो पाद दृष्टि ४ । ८ वें घर में तीन पाद और ग्रहों को वे घर में दृष्टि

होती है ॥ शनि ३।१० वे घर में भी । गुरु ५।६वें घरमें भी मङ्गल ४ । ८ वे घर में भी । संपूर्ण देखते हैं ।

ग्रहों की अवधि

मासं शुक्रबुधादित्याऽश्चन्द्रः पादिनद्यम् ।
भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽवदं साद्ग्वर्षद्ययं शनिः ॥
राहुःकेतुः सदाभुक्ते साद्ग्वर्षे केन्तु वत्सरं ।

टीका—सूर्य, शुक्र, बुध एक २ महीना एक राशि पै मोग करते हैं यानी रहते हैं । चन्द्रमा सत्रा दो दिन रहता है । मङ्गल १॥ महीने बृहस्पति १ वर्ष, शनिश्चर २॥ वर्ष—राहु-केतु-डेढ़ २ वर्ष भोग करते हैं ।

नव ग्रहों की जाति

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियौ भौमभास्करौ ।
सोमसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहु मंदौतथाऽसुरौ ॥

टीका—शुक्र, बृहस्पति की ब्राह्मण जाति है । मङ्गल, सूर्य की क्षत्री । बुध, चन्द्रमा की वैश्य । शनिश्चर, राहु-केतु इनकी राक्षस जाति है ।

राशि भाव संज्ञा

मेष १ सिंह २ मुख ३ बाहु ४ हृदय ५ पेट ६
कमर ७ सूँडी ८ लिंग ९ गुदाः १० जंघा ११
बुटना १२ चरण ।

बारह राशियों के रङ्ग

१ अरुण २ श्वेत ३ हरित ४ पाटल ५ पांडु
 ६ पिंगल ७ चित्रा ८ श्वेत ९ पूर्वार्ध सुवर्ण
 उत्तरार्ध पिंगल १० पिंगल ११ विचित्र १२ भूरा ॥

राशियों के भाव

एक चर दूसरी स्थिर तीसरी द्विस्थभाव इसी प्रकार
 १२ राशियों को गिने इनकी यही तीन संज्ञा हैं ।

ग्रहों के रङ्ग लिख्यते

रक्तावङ्गारकादित्यो श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ।

हरितः बुधौ गुरुः पीत शनिः कृष्णस्तथैवच ।

राहु केतु स्तथा धूम्रं कार येच्च विचक्षणः ॥

टीका—सङ्गल, सूर्य इनका लाल रङ्ग—चन्द्रमा शुक्र का
 सफेद रंग, वृहस्पति का पोला, बुध का हरा, शनि का काला,
 राहु केतु का धुंचे जैजा । ग्रह स्थान कहते हैं । सूर्य तो शरीर
 चन्द्रमा मन, मंगल सत्य, बुध वाणी, वृहस्पति ज्ञान व सुख
 शुक्र, वीर्य अर्थात् कामदेव शनि दुःख । और वलवान् ग्रह पुष्ट
 श्रीर निर्वल ग्रह इलहीन होते हैं ।

टीका—सूर्य राजा, चन्द्रमा मन्त्री, मंगल सेनापति, बुध गुरु
 शुक्र मन्त्री, शनि दूत, जो ग्रह फल देने वाला है वह ऐसे ही
 अधिकारी के द्वारा फल देता है ।

स्वामी देखना

मेपवृश्वक्योभौमः शुक्रोवृष्टुलाधिपः बुधः

कन्यामिथुनयोः पतिः क्रक्ष्य चन्द्रमाः ॥ स्वामी
मीनधनुर्जीविः शनिमंकरकुम्भयोः । सिंहस्याधि-
पतिः सूर्यः फथितो गणकोत्तमेः ॥ कन्याराहेगृहं
प्रोक्तं केतोश्चमीनसंज्ञकम् ॥

१	२	६	६	१०	४	५	६	१२
८	७	३	१२	११	०	०	०	०
भौम स्वामी	शुक्र स्वामी	वुध स्वामी	गुरु स्वामी	श० स्वामी	चन्द्र स्वामी	सूर्य स्वामी	रा० स्वामी	के० स्वामी

उच्च नीच ग्रह देखना

रविर्मेषे तुले नीचो बृषे चन्द्रस्तुवृश्चिके । भौमोश्च
नक्रे कक्षे च मियाँसौम्यो भषेतथा ॥ गुरु कक्षे
च नक्रे च धीने कन्ये सितस्य च । मन्दुस्तुलायां
मेषे च कन्या राहु गृहस्य च ॥ राहुर्युर्मे च चापे
च तमोवत् केतुजं फलं । प्रोक्तम् ग्रहाणामुच्चत्वं
नीचत्वं च क्रमाद्बुधैः ॥

ग्रह	सू०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	रा०	के०
ऊंच	१	२	१०	६	४	१२	७	२	६
नीच	७	८	४	१२	१०	६	१	-	-

टीका—जो गृह उच्च का होता है उससे वो ही ग्रह ७ वीं राशी का नीच का होता है ।

ग्रहों के दान

सूर्याय धेनुन्ताप्रचंगोऽधूमं रक्तवन्दनम् । चंद्रं शंखं
चन्दनं च सितवस्त्रं च तण्डुलम् । कुज वस्त्रं
प्रदाद्रव्या रक्तवस्त्रं गुडौदनं । बुधे कपूरं मुग्धे-
च हरितवस्त्रं हरिन्मणि ॥ पीतवस्त्रद्वयं जीवो
हरिद्रा चणिकंमणिम् । अश्वं शुक्रः सितं देयाच्छुक्ल
धान्यानि यानि च । शत्रौ तैलतिलं देयात्कृष्ण
गोदानमुत्तमम् । राहुशन महिषी ब्रागो माषाश्च तिल
सर्पणौ ॥ अजा मेषश्च दातव्यो केतश्चान्नं च मिथ्रितं
स्वर्णगोविप्रपूजाभिः सर्वेषु शांतिरुचमा ॥

ग्रह दान वस्तु चक्रम्

१०	गुद, लग्ल गेहूँ, लाल कपड़ा, सोना, तोंधा, लाल चन्दन, लाल फूल, धृत, केशर, मूँगा, लाल गो, माणिक यानी मणी कुसुंम ।
२०	सफेद, चाँचल, कपूर, चांदी, धृत, चन्दन श्वेत, श्वेत वस्त्र, दही श्वेत फूल, चूरा, मोती, शंख, मिसरी, सफेद बैल ।
३०	मूँगा, गेहूँ लाल, तोंधा, गुइ, लाल कनेर का फूल, धृत, चाल कपड़ा, लाल चन्दन, मसूर, लाल बैल, सोना, कर्तूरी ।
४०	मूँग कांसे का पात्र, सोना, धृत, हाथीदाँत, हरा वस्त्र, हरी मणी, हरा फूल, धान, हरे फूल, मिसरी, पन्ना, खांड, कपूर, शंख ।

वृ०	हलदी, पुस्तक, पीला कपड़ा, घृत, पीले फूल, पुखराज, चने की दाल, सोना, धोड़ा, कांसी, पीला फल, केशर शक्कर।
शुक्र	सफेद कपड़ा, चावल, गाय, सोना, चांदी, सफेद धोड़ा, चन्दन, सफेद शंख, घृत, बूरा, हीरा, दही मिश्री, सफेद फूल।
शनि	उड्ड, तिल, तेल, काला कपड़ा, भैंस, लोहा, काले जूते, काली गऊ, काला कम्बल, काला फूल, सोना, कस्तूरी, नीलम।
राहु	काली गौ, तिल, तेल, नीला कपड़ा, लोहा, धोड़ा, सरसों, बकरी सतनजा, नील, काला कम्बल, काला फूल, सोना, शीशा।
केतु	केइ, तिल, तेल, सोना, कस्तूरी, भैंडा, छुरी, सतनजा-काला कम्बल लोहा-काले फूल राहु केतु का दान बुध या शनिश्चर को करे।

टीका - ब्राह्मणों साधुओं को और भूखों को भोजन कराने से और पीपल की पूजा करने से वेद ब्राह्मण को प्रणाम करनेसे गुरुजनों की आज्ञा पालन से कथा के पढ़ने सुननेसे हवन, दान, जप करने से सर्व ग्रह प्रसन्न होजाते हैं।

होरा देखना

-वारातु षष्ठ षष्ठस्य, होरा साढ़ द्विनाडिकाः । अर्कशुक्रोवुधश्चन्द्रो मंदोजीवो धरासुतः ॥ गुरुर्बिंवाहे गमने भृगुपुत्र शुभावहा ज्ञाने सौम्यस्य वै चंद्रः सर्व कार्ये शुभप्रदा ॥ युद्धेतु भूमिपुत्रस्य सेवायां भूपतेः रवैः । धनम् च ये तु मन्दस्य शुभा होरा प्रकी

र्तिता ॥ यस्य ग्रहस्य वारेतु यत्कर्म मुनिभिस्मृतम् ।
काल होरा सुतस्यस्यात् तत्त्वकर्म शुभप्रदम् ॥

टीका—जिस दिन जो बार हो उसी बारकी होरा २॥ घड़ी रहती है फिर छठे बारको होरा २॥ घड़ी जैसे रविवारसे शुक्रकी । फिर २॥ घड़ी बुधकी । फिर २॥ घड़ी चन्द्रमाकी । फिर २॥ घड़ी शनिश्चरकी । फिर २॥ घड़ी गुरुकी । फिर २॥ घड़ी मङ्गलकी । इसी रीति से सब दिन की होरा जानो । सोमवार के दिन पहले चन्द्रमा की २॥ घड़ी दिन चढ़े तक होरा रहती है । फिर छठे ग्रह की उसी दिन फिर उससे छठे की ऐसे ही दिन रात्रिमें २४ होरा सातों बारों की होती हैं जरूरी कार्य जिस बारमें करना लिखा है उसदिन वो बार न हो तो उसकी होरा में करलें ॥ जौनसा बार हो २॥ घड़ी की पहिले उसकी होरा होती है फिर छठे छठे की आवेगी गुरु की होरा में विवाह शुभ है । यात्रा में शुक्र की होरा । ज्ञान कार्य में बुध की । सर्व कार्य में चन्द्रमा की । युद्ध में मंगल की । राज सेवा में सूर्य की । धन इकट्ठा करनेमें शनि की होरा ये सब शुभ दायक होती हैं ॥

ग्रह जप संख्या

रवेः सप्त सहस्राणि चन्द्रस्यैकादशैवतु । भौमे दश
सहस्राणि बुधे चाष्टसहस्रकं ॥ एकोनविंशतिर्जीवे
शुक्रस्यैकादशैव तु । त्रयोर्विंशति मर्दे च राहोरष्टा-
दशैव तु । केतोः सप्तसहस्राणि जप संख्याः ॥
प्रकीर्तिताः ॥

टीका—सूर्य का जप ७००० करना चाहिये । चन्द्रमा का

११००० मङ्गल का १०००० बुध का ८००० वृहस्पति का १६००० शुक्र का ११००० शनिका १३००० राहुका १८००० केतु का ७०००, इस प्रकार जप कराने चाहिये ।

ग्रह दान समय

बुधस्य घटिका पंचशौरिमध्याह्नमेव वृ । चन्द्रे जीवचे सन्ध्यायां भौमेच घटिकाद्वयं ॥ राहुकेत्वो अर्धसात्रे सूर्यशुक्रे उरुणोदये । अन्यकाले न कर्तव्यं कृते दानान्तु निष्फलं ॥

टीका—बुध का ५ घड़ी दिन चढ़ेः दान करना । शनिश्चर का दुपहरी में । चन्द्रमा और वृहस्पति का सन्ध्याको मङ्गलका २घड़ी दिन चढ़े तक । राहु-केतुका आधी रातको सूर्य और शुक्र का सूर्य उदय पर, और समयकरे तो निष्फल होता है, और छाया दान कांसेकी कटोरी में घृत भरकर सूर्य उदयपर होनाचाहिये ।

अथ वर्ण देखना

मीनालिकर्कटापिप्राः क्षत्रीमेषो हरिर्धनुः ।
शूद्रोयुग्मं तुलाकुंभौ वैश्यौ कन्या वृषो मृगः

अथ वर्ण चक्रम

मीन राशि का	बृशिक का	कक्ष का	त्राह्णण वर्ण
मेष का	सिंह का	धन का	क्षत्री वर्ण
मिथुन का	तुला का	कुम्भ का	शूद्र वर्ण
कन्या का	वृष का	मकर का	वैश्यवर्णहोता है

अथ वर्ण फलम्

नोत्तमामुद्गहेतकन्यां ब्राह्मणी च विशेषतः ।
 मिथ्यते होनवर्णश्च ब्रह्मणा रक्षितो यदि ॥
 विप्रवर्णे च या नारी शूद्र वर्णे च यः पतिः ।
 श्रुतं भवेति वैधव्यं शक्रस्य दुहिता यदि ॥

टीक—जो उत्तम वर्ण की कन्या और नीच वर्ण का उरुष हो तो पुस्त की मृत्यु हो इस वास्ते उत्तम वर्ण की कन्या से विचाह करना वर्जित है । ब्राह्मण वर्ण की विशेष करके मनै है । ब्राह्मण वर्ण की कन्या और शूद्र वर्ण का पति हो तो इन्द्रकी भी पुत्री हो तो भी विधवा होय ।

अथ वश्य देखना

मकरस्य पूर्वभागो मेषसिंह धनुवृष्ट्याः ।
 चतुष्पदाः कीटसंज्ञः कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ॥३६॥
 तुला च मिथुन कन्या पूर्वाङ्ग धनुषश्च यत् ।
 द्विपदास्तु मृगाङ्ग तुकुम्भमीनौ जलाश्रितौ ॥३७॥

टीका—मकरराशि का पहला अर्ध भाग (उत्तराषाढ़के तीनों चरण और श्रवण के ढंढ चरण पर्यन्त का चन्द्रमा) मेष, सिंह, आधा धनका पिछला भाग वृष्ये चतुष्पद (चौपाये) को संज्ञा जानिये और कर्क राशि की कीट संज्ञा है, वृश्चिक की सर्प संज्ञा है और तुला, मिथुन, कन्या और आधा धन का पहला भाग इनको द्विपद जानिये, मकर का पिछला भाग कुम्भ, मीन को जलचर जानिये ।

अथ वैश्व फलम्

**हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जल
जोश्च भद्र्याः । सर्वे पि सिंहस्य वशे विनाऽलिं-
ग्नेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥**

टीका—सिंह के विना मनुष्य गणियों के सब वश में हैं जल चर राशि तो मनुष्यों का भोजन ही है और वृश्चिक को छोड़ सिंह के सब वश में हैं और सब मनुष्यों के व्यवहार से जानो अर्थात् वर की राशि के वश में कन्या की राशि हो तो शुभ है।

अथ तारा देखना

**जन्मभाद् गणयेद्धीमान् क्रमाच्च दिनभावर्धि ।
नवमिस्तु हरेद्धागं शेषं तारा विनिर्दिशेत् ॥**

टीका—जन्म नक्षत्र से व्याह के दिन के नक्षत्र तक गिने उसमें नौ का भाग दे शेष बचे सो तारा जानिये ॥

अथ तारों के नाम

**जन्म संपद्विपत्त्वेम प्रत्यिरः साधको वधः ।
मैत्रातिमैत्रं ताराः स्युस्त्रिरावृत्या नवैव हि ॥**

टीका—जन्म तारा, सम्पत्ति, विपत्ति, क्षेम, प्रत्यारि, साधक वध मैत्र, अति मैत्र, ये नौ तारों के नाम हैं ॥

तारा शुभाऽशुभ फलम्

जन्मतारा द्वितीया च चतुष्टाष्टमी तथा ।

नौमी षष्ठी शुभा तारा॒ः शेषा॒स्तिस्त्रो॑शुभावहा॒ः ॥

टीका- जन्म तारा, संपत्, क्लेम, साधक, मैत्र, अति मैत्र, ये छः तारे शुभदायक हैं विपत्ति, प्रत्यरि, वध, ये तीन तारे अशुभ होते हैं ।

अथ योनि देखना

अश्विनी वारुणश्चाश्वो रेवती भरणी गजः ।
पुष्यश्च कृतिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः ॥
आर्द्रा मूल मपिश्वानं मूषकः फाल्गुनी यज्ञा ।
मार्जारो दितिरा श्लेषा॒ गोजानिरुत्तराद्वयम् ॥
महिषः स्वातिहस्तौच मृगो ज्येष्ठा॑नुरुधिका॑ ।
व्याघ्रश्चित्रा॑ विशाखा॑ च श्रुत्याषाढ़ौ च मर्कटः ॥
वसुभाद्रपदौ सिंहो॑ नकुलो॑भिजिद्विश्वयोः ।
यौनयः कथिता भानां वैरमैत्री विचार्यताम् ॥

अथ योनि चक्रम्

अश्विनी शतभिष्पाका घोड़ायौनी	रेवती, भरणी हाथी की	पुष्य, कृतिका वकरी	रोहणी मृगशिर नाग	आर्द्रा, मूल श्वान
पूर्वा॑ फाल्गुणी मध्या॑ मूरा॑	पुनर्वसु,॑श्लेषा॑ विलाव	उत्तरा॑ फा॑ उत्तरा॑ भाद्र॑ गो	स्वात हस्त भैस	अनुरुधा॑ ज्येष्ठा॑ मृग
चित्रा॑-वि० भेदिया	पूर्वाषाढ़ा॑ श्रवणा॑ वन्द्र	धनिष्ठा॑, पूर्वा॑ भाद्रपद॑ की सिंह	अभिजित उत्तराषाढ़ा॑ नवल	इस प्रकार योनी देखना

अथ योनि वैरं देखना

गोव्याप्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैर्णच वभ्रुरुगम् ।
 वैरं वानरमेषकं च सुमहत्तद्विडोलोन्दुरु ॥
 लोकाना व्यवहारतो निगदितं ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं ।
 दभ्यत्योन्नपभृत्ययो रपिसदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः ॥

योनि वैरं चक्रम्

गायका	हाथीका	घोड़ेका	कुत्तेका	नेवलेका	बन्दरका	बिलावका
भेहिये का	शेरका	भैंसेका	हिरनका	सर्प का	मैडेका	चूहे का
वैर	वैर	वैर	वैर	वैर	वैर	वैर

ग्रह शत्रु मित्रं देखना

शत्रु मंदसितौ समश्च शशिजो मित्राणिशेषा रवेः ।
 तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ, शेषा समाः
 सितगोः । जीवेन्दूषणकराः कुजस्य सुहृदौ शौरिः
 सिताकर्णी समौ ॥ मित्रो सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः
 शत्रसमाश्चापरे । सूरेः सौम्य सितावरी रविसुतो-
 मध्यः परो त्वन्यथा सौम्याकर्णी सुहृद, समौ कुजगुरुः

शुक्रस्य शेषावरी ॥ शुक्रज्ञौ सुहृदौ समौसुखुरुः
सौरेस्तथान्येरयः । ये प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभव-
नात्तेऽमी मया कीर्तिताः ॥

ग्रह शत्रु मित्र चक्रम्

ग्रह	रवि	चंद्रमा	मङ्गल	बुध	गुरु	शु०	शनि
मित्र	च०मं० बू०	र०बु०	र०च०	र०शु०	र०मं० च०	बु०शु०	बु०शु०
सम	बू०	म०बू० शु०श०	शु०श०	ब०शु० म०	शनि	ब०मं०	गुरु
शत्रु	श०शु०	०००	बुध	चंद्रमा	बु०शु०	र०च०	र.चं.मं.

अथ गण देखना

अश्विनी मृगरेवत्योर्हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः ।
अनुराधा श्रुतिः स्वाती कथ्यते देवतागणः ॥
त्रिसःपूर्वाश्चोत्तराश्च तिसोऽप्यार्दा च रोहिणी ।
भरणी च मनुष्याखो गणश्च कथितो बुधैः ॥
कृत्तिका च मधा श्लेषा विशाखा शततारका ।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणःस्मृतः ॥

अथ गण चक्रम्

अश्विनी	सृगशिर	रेवती	हस्त	पुष्प
पुनर्वसु	अनुराधा	श्रवण	स्वाति	देवता गण
पूर्वाफालगुनी	पूर्वाषाढ़ा	पूर्वभाद्रपद	उत्तरा फाल०	उत्तराषाढ़ा
उत्तरा भाद्र०	आद्रा	रोहिणी	भरणी	मनुष्य गण
कृतिका	मघा	श्लेषा	विशाखा	शत भिषा
चित्रा	ज्येष्ठा	धनिष्ठा	मूल	राजसगण

अथ गण फलम्

स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।

मर्त्यराजसयोमृत्युः कलहो देवरक्षसोः ॥

टीका—जो स्त्री पुरुष दोनों का एक ही गण हो तो उनमें ज्यादा प्रीति हो । और जो देवता और मनुष्य गण हो तो मध्यम प्रीति हो । मनुष्य और राजस गण हो तो मृत्यु हो । देवता और राजस गण हो तो क्लेश रहे ॥

एकाधिपत्ये राशीश मैत्र्यां दुष्ट भकूटके ।

नाड़ी नक्षत्रशुद्धिश्चेद् विवाहःशुभदस्तदा ॥

टीका—वर और कन्या दोनों की गणि का स्वामी एकही

ग्रह हो अथवा दोनों राशि में मित्रता हो और नाड़ी नक्षत्र शुद्ध रहें तो दुष्ट भकूट आदि में भी विवाह होता है ।

अथ नाड़ी चक्रम्

आदि	अ०	आ०	पु०	उ०फा०	ह०	ज्य०	मू०	श०	पु०भा०
मध्य	भ०	सृ०	पुच्छ	पु०फा०	चि०	अ०नु०	पु०पा०	ध०	उ०भा०
अन्त	क०	रो०	ज्ञेपा	म०	स्वा०	वि०	उ०पा०	अ०	रे०

✽ अथ नाड़ी देखना ✽

आदिमध्यान्तकेवापि अन्तमध्यादिभानिच । अश्विन्या दिक्रमेणैव रेवत्यन्तं सुसंलिखेत ॥ ऊर्ध्वगां वेद रेखाः स्युस्तिर्यग्रेखा दश स्मृताः । सर्पाकारंलिखेद्वानां नाड़ीचक्र बदेद्वुधः ॥

टीका—आदि—मध्य, अन्त्य अन्त्य मध्य, आदि इस प्रकार अश्विनी रेखती तक गिने ४ रेखा खड़ी और १० रेखा तिर्छी इसी प्रकार सत्तार्हस कोठों को नाड़ी चक्र कहते हैं ॥

नाड़ी दोष देखना

नाड़ीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रीये ।
गणदोषश्चवैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान् ॥

टीका—नाड़ी का विचार ब्राह्मण को अवश्य करना चाहिये वर्ण का विचार क्षत्री को करना चाहिये । गण का विचार वैश्य को करना चाहिये । योनी का विचार शूद्र को करना चाहिये ।

अथ नाड़ी फलम्

एक नाड़ीस्थ नक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम् ।

सेवायांच भवेद्वानिर्विवाहेचाशुभं भवेत् ॥

टीका—जो वर कन्या दोनों की एक नाड़ी हो तो दोनों की मृत्यु हो और नाड़ी के वेद में विवाह करे तो हानि हो ॥

आदि नाड़ी वरं हन्ति मध्य नाड़ी च कन्यकाम् ।

अन्त्यनाड़ी द्वयोर्मृत्युर्नाड़ीदोषं त्यजेद् बुधः ॥

टीका—जो आदि नाड़ीका वेद होय तो वरको अरिष्ट करे और मध्य नाड़ीका वेद होय तो कन्याको कष्टकरे । अन्त्य नाड़ी का वेद लगे तो दोनों की मृत्यु हो ॥ वेद नाड़ीकोही कहते हैं ॥

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते ।

अन्यर्वपति वेदेषु विवाहो वर्जितः सदा ॥

टीका—जो वर कन्या दोनों का एक ही नक्षत्र का जन्म होय तो एक नाड़ी का दोष न मानिये । अन्य नक्षत्र में जन्म होय तो विवाह वर्जित है ।

अथ गोचरं ग्रह देखना

त्रिष्टै कादशे भौमो राहुः केतुः शनिः शुभः ।

षष्ठाष्ठमे द्वितीये वा चतुर्थे दशमे बुधः ॥

द्वितीये पञ्चमे जीवः सप्तमे नवमे शुभः ।

एकादशे ग्रहाः सदे सर्वकार्येषु शोभना ॥

टीका—३ । ६ । ११ स्थान में मङ्गल राहु केरु शनि
शुभ हैं ॥ ६ । ८ । २ । ४ । १० तुष्ट शुभ है २ । ५ । ७।९
तृहस्पति शुभ है ११ स्थान सब ग्रह शुभ दायक होते हैं ।
द्विजन्मनि पंचमसप्तमगाः चतुरष्टकद्वादशरा धर्म-
युताः । धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रवि राहु
शनैश्चरभूमिसुताः ॥

टीका—२ । १ । ५ । ७।४।८।१२।९ स्थानों में सूर्य मङ्गल
राहु शनिश्चर वैठे तो धनका और अन्नका नाश करते हैं ।

१ अर्थ द्वादशा लग्नभाव फलम्
लग्नेशः सप्तमे यस्य तस्य भार्या न जीवति ।
प्रवासी च विकामी च पिता तस्य ऋणी भवेत् ॥
लग्नेशोभ्युदितो लग्ने मृजीयोऽस्तङ्गतो यदि !
जीवत्येव तदा ऽवश्यं शस्त्रविद्धोपि मानवः ॥ १

टीका—जो लग्नेश लग्न में उदय हो और लग्नका मालिक
लग्न में ही वैठा हो और अष्टमेश अस्त हो तो अर्थात् आठवें
घर का मालिक अस्त हो तो वो वालक जरूर जीवे शस्त्र का
छेदा भी नहीं भरे और लग्नेश सप्तम स्थान में हो तो उस
मनुष्य की स्त्री नहीं जीवे और कामना निष्कल हो और
उसका पिता ऋणी हो ।

२ अर्थ धनभाव फलम्

धनेशः केन्द्रगोवापि धनसौख्यं महद्वेत् ।
त्रिकस्थं वा ऽथ महजे धनसौख्यं न जायते ॥

टीका—जो धनेश दूसरे घर का मालिक केन्द्र १ । ४ । ७ ।
१० इन स्थानों में पड़े तो वो धनवान् और ३ । ६ । ८ ।
१२ । घर में पड़े तो धन का सुख नहीं हो ।

३ भ्रातृ भाव फलम्

सहजे सहजाधीशै भ्रातृ सौख्यं प्रजायते ।
केन्द्रे पि तद्वहुज्ञेयं त्रि कस्थे चाशुभं भवेत् ॥

टीका—जो तीसरे स्थान का मालिक ३ । १ । ४ । ७ । १०
इन स्थानों में पड़े तो भाई का सुख हो दा। १२ में पड़े तो
भाई का सुख नहीं हो ।

४ मातृ भाव फलम्

शनिभौषकयोर्ध्ये यदि तिष्ठति चन्द्रमाः ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥
तथेर्शः स्यात् शुभे राशौ पापग्रहैर्विवर्जितं ।
केन्द्रे चेन्मातुः सौख्यं स्यादन्यत्र नाशयेत्तथा ॥

टीका—जो शनि मङ्गलके बीच चन्द्रमा चौथे स्थान में पड़े
तो माता नष्ट कहै दशवें स्थान हो तो षिता नष्ट कहै, और जो
चौथे स्थान का मालिक केन्द्र में १ । ४ । ७ । १० में पड़े और
पाप ग्रहों से वर्जित हो तो माता का सुख कहै। अन्यथा नहीं ।

५. पुत्रभाव फलम्

सुतेशः सप्तमे यस्य तस्य गर्भो विनश्यति ।
अन्यत्र यदि पुत्रेशः सुखं त्रिकं विहायवा ॥

टीका—जो पाँचवे घर का मालिक सातवें स्थानमें हो तो गर्म नष्ट हो यदि ६ । ८ । १२ इन स्थानों को छोड़कर और स्थानों में होवे तो पुत्र का सुख कहै ।

६ रिपुभाव फलम्

षष्ठेशो लग्नगेहस्थो रिपु हंता नरो भवेत् ।
केन्द्रेचेदु रिपु भिः किंचित् व्यया ॥ षट्रिपु गेनहि ॥

टीका—जो छठे स्थान का स्वामी लग्न में हो तो दुश्मन के नाश करने वाला हो यदि वह और ग्रह केंद्र में हो तो दुश्मनों का भय ज्यादा रहे और ६ । ८ । १२ । इन घरों में हो तो दुश्मन नष्ट कहना और मामाओं को भी नष्ट करता है ।

७ स्त्रीभाव फलम्

सप्तमेशः केन्द्रगो वा पित्तादिभिर्विकारवान् ।
स्त्रीसौख्यं विजानीयात् भ्रातृवान् धनवानपि ॥
अन्यत्रयदि गेहस्थे स्त्री विहीनो नरो भवेत् ।
धने सहजे ॥ थलामे वा स्त्रीसौख्यं महद भवेत् ॥

टीका—जो सप्तमेश अर्थात् ७ वें स्थान का मालिक केन्द्र १ । ४ । ७ । १० इन स्थानों में हो तो पित्तादि विकार युक्तहो और स्त्री का सुख भी अच्छा हो और भाई का सुख, धन का सुख बढ़ता है और इनके सिवा और स्थानों में हो तो 'स्त्री' को सुख नहीं हो और जो ३ या ११ स्थान में हो तो 'स्त्री' का सुख अच्छा हो ।

८ मृत्युभाव फलम्

अल्पायुर्दिननाथस्य शत्रौ लग्नाधिपे यदि ।

समत्वे मध्यमायुः स्यान्मित्रेदीर्घायुरादिशेत् ॥

टीका—जो लग्नेश नाम लग्न का स्वामी सूर्य का शत्रु हो तो अल्पायु ३२ वर्ष की उमर कहै और जो सूर्य से (सम) हो तो मध्यमायु ६४ वर्ष की उमर कहै और जो (मित्र) हो तो पूर्ण आयु ६६ वर्ष की उमर कहना ।

९ धर्मभाव फलम्

धर्मेशोधर्मगेहस्थो धर्मवान् भाग्यवांस्तथा ।

केंद्रेष्ठि च तदागेवोऽन्यत्रस्थोप्यशुभो भवेत् ॥

टीका—धर्म स्थान का मालिक धर्म स्थान में हो वा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० इन स्थानों में पड़े तो धर्मवान् व भाग्यवान् हो और जगह पड़े तो अशुभ है ।

१० कर्मभाव फलम्

कर्मेशो लग्नगे वापि राजतुख्यो नरो भवेत् ।

पितृसौख्यं विशेषण लक्ष्मीः पूर्णा च जायते ॥

टीका—कर्मेश १० स्थान का मालिक लग्नमें हो तो राजा के समान आचरण करने वाला मनुष्य हो, पिता का पूर्ण सुख और धन बहुत हो ।

११ लाभभाव फलम्

लाभेशो लग्नगे वापि केन्द्रे वाप्यथवा भवेत् ।

दिने दिनेपि लाभं तु त्रिके हानिः प्रजापते ॥

टीका—जो लाभ स्थान का मालिक लग्न में हो अथवा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में पड़े तो दिन प्रति दिन लाभ ही हो और जो ८ । ६ । १२ हो तो लाभ की हानि कहे ।

खर्च भाव फलम्

व्ययेशो च त्रिकस्ये वा सर्वसपद्युतोनरः ।
केन्द्रेवाऽथत्रिलाभे वा दरिद्री जायते ध्रुवम् ॥

टीका—जो वारहवे स्थान का मालिक ६ । ८ । १२ पड़े तो सम्पूर्ण सुख हो और केन्द्र १ । ४ । ७ । १० वे पड़े वा ३ । ११ वे पड़े तो दरिद्री हो ये निश्चय जानो जिसके चन्द्रमा से २ और १२ वे कोई ग्रह नहीं हो तो वो मनुष्य दरिद्री होता है यदि चन्द्रमा को वृहस्पति देखता हो तो उसका दरिद्री योग नहीं कहना ।

ग्रह बाहन चक्रम् ग्रह शान्ति रत्न चक्रम्

सूर्य अश्व	चन्द्रमा मृग	मङ्गल मेंढा	सूर्य तुन्नी	चन्द्रमा मोती	मङ्गल मूँगा
बुध सिंह	गुरु हाथी	शुक्र घोड़ा	बृघ पैन्ना	गुरु पुष्प	शुक्र हीरा
शनि वैल	राहु चीता	केतु नाका	शनि नीलम	राहु लस्सन	केतु मरकतमणि

बाहन सवारी को कहते हैं ॥

इन चीजों के देने से ग्रह प्रसन्न हो जाते हैं ।

अथ भाग देखना

पौष्णादिकं पटकमुशन्ति पूर्वमाद्रादिकं द्वादश
मध्यभागम् । पौरन्दराद्यं नवकं भवक्रमं परं च भागं
गणको विद्यधाः ॥

टीका—पौष्णाजो कहिये रेवती इसको आदि लेकर ६ नक्षत्र
रेवती, अश्वनी, भरणी, कुतिका, सोहिणी मृगशिर ये ६ नक्षत्र
पूर्व भाग के हैं और आद्रा को आदि लेकर १२ नक्षत्र आद्रा,
पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मधा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त
चित्रा, स्वाति, विषाखा, अनुराधा ये मध्य भागके हैं और पौरंदर
कहिये ज्येष्ठा इसको आदि से लेकर ६ नक्षत्र ज्येष्ठा, मूल, पूर्वषाढ़
उत्तरषाढ़, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष्ठा, पूर्वमाद्रपद,
उत्तरमाद्रपद ये पर भाग के हैं ।

भाग फल देखना

पूर्वभागे: पतिः श्रेष्ठो मध्यभागे च कन्यका ।
परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसो ॥

टीका—पूर्व भागी नक्षत्रों वाला लड़का श्रेष्ठ होता है मध्य
भाग वाले नक्षत्रों की कन्या श्रेष्ठ होती है और जो दोनों पर
भाग के हों तो बड़ी प्रीति रहती है ।

अथ ग्रहनपुन्सक देखना

बुधसूर्यसुतौ नपुंसकाख्यौ शशिशुक्रौ युवती नराश्च

**शेषाः । शिखभूखयो मरुदगणानामधिपा भूमि-
सुतादयः क्रमेण ॥**

टीका—वृध शनि चपुन्दक हैं चन्द्रमा शुक्र स्त्री हैं सर्व,
मङ्गल वृहस्पति ये पुरुष हैं जन्ममें वलवान ग्रहका रूप कहना ।

अथ भकूट मैलन देखना

मरणं पितृनात्रोश्च लंग्राह्य लवण्चक्षम् ।

वरस्प पंचमे कल्या कल्याया नवमे वर ॥

एतत्रिकोणं ग्राह्यं पुत्रपौत्रतुखावहम् ।

षष्ठिके भवेन्मृत्युर्तन तस्य विचारयेत् ॥

टीका—जो वरकी राशिसे कल्याकी राशि ६वें होयतो उस
के पिता की मृत्यु हो और जो कल्याकी राशी ८ वर की राशी
५ पांचवें होय तो उसकी माता की मृत्यु हो, और जो वर की
राशी मे पांचवें कल्या की राशी हो और कल्या से नवे वर की
राशी हो तो यह त्रिकोण शुभ होता है। पुत्र पौत्रके सुखको देने
वाली हैं । ६-वें होवे तो मृत्यु हो । अतः यत्न कर विचारियो।

अथ पाये देखना ।

जन्मेरसेरुद्र सुवर्णं पादे द्विपंच नवमं रजतंशुभम् च ।

त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं बलिष्ठमृत्यैष्टसूर्यैऽतिलोहकष्टम्

टीका—अगर चन्द्रमा लग्न में १ या लग्नसे ६ या ११ होतो
सोने के पाये जानिये और २ । ५ । ९ हों तो चाँदी के पाये
जानिये और ३ । ७ । १० । हों तो तवि के पाये जानिये अगर

सर्वोपरिक्रम

न वर्गवणौं न गणौ न योनिः द्विर्द्वादशेचैवषडाष्ट
के वा । तारा विरुद्धं नवं पञ्चमं स्थाद् राशीश
मैत्री शुभदो विवाहे ॥

टीका—वर्ग वर्ण, गण, योनी, राशि, षडाष्टक, तारा, नाड़ी
नवें, पांचवें इतने गुणों में से कोई भी मत मिलो और वर
कन्या का एक स्वामी हो या दोनों में मित्रता हो तो जानो सब
चीज़ मिलगई यह विवाह शुभ दायक होता है ।

अथ मङ्गली देखना

लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे ।
पत्नी हन्ति स्वभर्तारं भर्ता भार्या हनिष्यति ॥

टीका—१ । १२ । ४ । ७ । = इन स्थानोंमें जिसके मङ्गलहो
वो मङ्गली होता है जो वर कन्या मङ्गली हों और उनका विवाह
होतो शुभ है जो वर मङ्गली और कन्या सादी या कन्यामङ्गली
वर सादा हो तो अशुभ है जो सादा हो उसी की मृत्यु
लिखी है ।

मङ्गली दोष दूर होना

यामित्रे च यदा सौरिल्लग्ने वा हितुकेऽथवा ।
अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥

टीका—जिसके ७, १, ४, ८, १२ इन स्थानों में शनिश्चर हो
तो मङ्गली का दोष उसको नहीं होता ।

अथ भद्रा देखना

दशम्या च तृतीयायां कृष्णे पक्षे परे दले ।
 सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टः पूर्वदले स्मृता ॥
 एकादश्यां चतुर्थ्याम् च शुक्ले पक्षे परे दले ।
 अष्टम्यां पूणिमायां च विष्टः पूर्वदलेस्मृता ॥
 ॥ भद्रा वास चक्रम् ॥

तिथि	१०	३	कृष्ण पक्ष में	भद्रा क्षेपर दल में वास करते हैं ।
तिथि	७	१४	कृष्ण पक्ष में	भद्रा क्षेपूर्व दलमें वास करते हैं ।
तिथि	११	४	शुक्ल पक्ष में	भद्रा पर दल में रहते हैं ।
तिथि	८	१५	शुक्ल पक्ष में	भद्रा पूर्व दल में रहते हैं ।

चंद्रमा के साथ भद्रा का वास देखना
 मेष मकर वृष कर्कट स्वर्गे^१ कन्या मिथुन तुला
 धनुर्नार्गे । कुम्भ मीन अलि केसरि मृत्यौ विचरति
 भद्रा त्रिभुवनमध्ये ॥

भद्रा चक्रम्

मेष १	मकर १०	वृष २	कर्क ४	के चंद्रमा में	स्वर्ग में भद्रा रहते हैं ।
कन्या ६	मिथुन ३	तुल ७	घन ६	के चंद्रमा में	पाताल लोक में भद्रा रहते हैं ।
कुम्भ ११	मीन १२	वृश्चि. ८	सिंह ५	के चंद्रमा में	सूख्य लोक में भद्रा रहते हैं ।

पूर्व नाम पहिला और पर नाम पिछला है ।

अथ भद्रा फल देखना

स्वर्गे भद्रा शुभम् काये पाताले च धनागमम् ।
मृत्युलोके यदा विष्टिः सर्वकार्यं विनाशिनी ॥

टीक—जो स्वर्ग लोक में भद्रा हों तो शुभ काम करे । और पाताल की भद्रा में लाभ हो । मृत्यु लोक की भद्रा में सर्व कार्य का नाश होता है ।

यावत भद्रा जो पत्रे में लिखी रहती हैं तो जानो कि वीत गई जितनी घड़ी पल लिखी उतने ही घड़ी पल दिन चढ़े तक । और जो उपरांत भद्रा जितनी घड़ी पल लिखी हों उतनी घड़ी पल में ३० घड़ी और जोड़े फिर जोड़में जितनी घड़ी पल आवें जब वे सब घड़ी पल बीत जावें तो जानो कि भद्रा बीत गई ।

कन्या व पुत्र बतलाना

दम्पती पुत्रसंयुक्तौ द्विगुणौ चेन्दुसंयुतौ ।
पञ्चधनौ कन्यकायुक्तौ पञ्चविंशति शोधितौ ॥
वामे पुत्रम् विजानीयाद दक्षिणे कन्यकां तथा ।

टीका—जो कोई बूझे कि मेरे कितने लड़के और लड़की हैं तो खी पुरुष यानी दोमें जितने पुत्र हों मिला दे फिर दुगने करके एक और मिलावे फिर पांचगुणा करके कन्या भी मिलादे फिर २५ घटादे शेष जो बचे उनमें बाँड़ तरफ का जो जोड़ है वो तो पुत्र और दाहनी तरफ की कन्या जाननी चाहिये ।

स्त्री पहले मरे या पुरुष यह देखना ।
 अक्षराणि द्विगुणितानि मात्रा च चतुर्गुणा ।
 एकोकृत्य त्रिभिरभक्तं शेषं ज्ञेयं च लक्षणम् ॥
 एकं च पुरुषं हन्ति द्वितीयं नारी तथैव च ।
 शून्ये च पुरुषं ज्ञेयं एवं प्रश्नस्थ लक्षणम् ॥

टीका—स्त्री पुरुष के नामके अद्वर गिनकर दुगने करे और मात्रा चौमुनी करके उन सघको एक जगह मिलावे फिर तीनका भाग दे एक बचे तो पुरुष मरे दो बचे तो स्त्री मरे और शून्य बचे तो भी पुरुष मरे ।

जीवते की कुण्डली है या मरे की ।
 जन्मांकं प्रश्नाँकरन्ध्रांकयुक्तं लग्नेशगुण्यं । रन्ध्रं
 शभक्तं विषमे जीवितस्यैव समे च मृत्युमादिशेत् ॥

टीका—जन्म लग्न के अंक प्रश्न लग्नके अङ्क और जन्मलग्न से आठवें स्थान के अङ्क एक जगह करके जन्म लग्नेशके साथ शुणा करे और अष्टमेश का भाग दे जो विषमं १।३।५ बचे तो जीवतेकी और सम २,४,६ बचे तो मरे हुयेकी कुण्डलीजाननी।

संक्रान्ति पुण्य काल फलम् ।

संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः पुरुणां मताः षोडशा
 षोडशोषणगोः । निशी थतोऽवर्गपरत्र संडक्रमे
 पूर्वा परा हन्ति न पूर्वभागयोः ॥

टीका—संक्रांति के पहले और पीछे १६ घड़ी पुण्य काल माना जाता है। आधीरात्र से पहिले बैठी हो तो दिन के तीसरे भागमें पुण्य काल मानना। और आधीरातके बाद अर्के तो दूसरे दिन के पूर्व माम पहिले सबरे अगले दिन माने, और ठीक आधीरात बैठे तो दोनों दिन मानना चाहिये।

**त्रिंशतिः कर्कटेनाड्यो मकरस्य दशादिकाः ।
तुलामेषस्य विंशास्यात् शेषः षोडश षोडश ॥**

कर्क की संक्रांति का ३० घड़ी पुण्यकाल होता है। और मकर की संक्रांति का ४० घड़ी पुन्यकाल माना जाता है। तुला मेषकी संक्रांति का २० घड़ी पुन्यकाल माना जाता है। और राशियोंकी जो संक्रांति रही उनका १६ घड़ी पहिले या पीछे पुण्यकाल जानो।

आदि भृत्य अन्त भोगनी चक्रम्

२	५	८	४	इन राशियों की संक्रांति आदि भोगनी			
१	७	०	०	इन राशियों की संक्रांति मध्य भोगनी			
३	६	६	१०	११	१२		इन राशियों की अन्त भोगनी है

याप्युत्तरा पुण्यतमा मयोक्ता सार्यं भवेत्सा यदि सापि पूर्वा । पूर्वा तु योक्ता यदि सविभाते साप्युत्तरा रात्रिनिशीथिनो स्यात् । अर्वाड्यनिशीथे यदि संक्रमः स्यात्पूर्वेन्हि पुण्यं परतः परेन्हि ॥

टीका—जो संक्रांति अन्त भोगनी चक्र में लिखी हैं वो सायंकालमें अकेै तो आदि भोगनी हो जाती हैं और जो आदि भोगनी लिखी हैं वो प्रातःकाल में अकेै तो वो अन्त भोगनी हो जाती हैं और जो आधीरात से पहले अकेै तो वो आदि भोगनी उसकापुण्यकाल पहले दिन । आधीरात से पीछे अकेै तो अन्त भोगनी अगले दिन जानो । जो ठीक आधी रात पै वैठेतो दोनों दिन उसका पुण्यकाल जानों । अर्क नाम वैठने का है ।

अथ संक्रांति मुहूर्ति भेद

संक्रान्तौ मुहूर्ति भेदा हर पवनयमे वारुणे सार्परौद्रे
एषा पञ्चेन्दुसंज्ञा गुरुकरपितृभे चाग्निदस्ते च सौम्ये ।
त्वाष्टेै मैत्रे च मूले श्रुतिवशुवपुषा त्रीणिपूर्वाख्यरामे
ब्राह्मैऽदित्ये छिद्रैवे भवति शरकृता दुक्तरा त्रीणि
ऋचम् । वाणवेदैः समर्धं स्यान्मध्यस्थं व्योमरामयोः
मूर्तौ पंचदशो याते दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥

टीका—आद्री, भरणी, स्वाति, शतभिषा, श्लेषा, ज्येष्ठा जो इन नक्षत्रोंमें संक्रांति वैठे तो १५ मुहूर्तीै जानो श्रजामें दुर्भिक्ष पड़े पुष्य, हस्त, मधा, कृतिका, अथिनी, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा श्रवण, मूल, धनिष्ठा, रेवती, तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंमें अकेै तो ३० मुहूर्तीै जानो इसका फल साधारण है । रोहणी पुनर्वसु, विशाखा तीनों उत्तरा इन नक्षत्रोंमें अकेै तो ४५ मुहूर्तीै जानों इसका फल बहुत उत्तम और श्रेष्ठ है ।

पंचद्वयद्वि कृताष्ट रामरसभु यामादि घट्यःशराः ।
 विष्टेराश्यसमद्गजेन्द्र रसरामाद्रव्याश्ववाणाब्धिषु॥
 याम्येष्वल्त्यघटी त्रयंशुभकरं पुच्छ तथा वासरे
 विष्टस्तिथ्य पराद्वजां शुभकरी रात्रोतु पूर्वाद्वजां

क्र क्र	तिथि	०४	०५	११	१५	०३	०७	१०	१४
प्रहर	०५	०२		०७	०४	८८	०	०६	०१
आदि	आ०	आ०		आ०	आ०	आ०	आ०	आ०	आ०
घ.मु०	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५
प्रहर	०८	०६	०६	०३	८७	०२	०५	०४	
अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त
घ.पू०	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३

सद्ग्रां के मुख की घड़ी त्याज्य और पुच्छ की शुभ काम में लीन हैं ।
 नोट—प्रहर की गणना तिथि के आरम्भ से करनी चाहिये ॥

अथ संक्रांति समय फलम् ।

सूर्योदये विपत्ति जगतां मध्यान्हे सकलशस्य
 विनाशकारिणी । अस्तंगते फलां तृसुं च सौख्यं
 सुभिक्षुं मंजुलां निशिचार्द्व रात्रौ ॥

टीका—जो सूर्य निकलने पै संक्रांति बैठे तो प्रजाको भारी
 और दोपहर में बैठे तो नाश के करने वाली हो । जो सूर्य छिपे
 पै बैठे तो राजा को अशुभ हो । जो रात्रिमें बैठे तो शुभ दायक
 जाननी चाहिये ॥ इति जातक प्रकरणम् ॥१॥



विवाह प्रकरण

भाषा टीका भाग दूसरा



अथ सगाई का मुहूर्त

धरणीदेवोऽथवा कन्यकासहोदरः शुभदिने गीत
वाद्यादिभिः संयुक्तः । वरवृत्तिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना
श्रुवयुतैर्वन्हिपूर्वात्रयै अर्चयेत् ॥

टीका—पिरोहित या ब्राह्मण या कन्या का छोटा भाई या
बड़ा भाई शुभ दिन वर का वर्ण करे यानी तिलक करे । वस्त्र
यज्ञोपवीत आदि लेकर गाजे बाजे के साथ रोहिणी तीनों
उच्चरा कृतिका तीनों पूर्वा ये नक्षत्र और शुभ वार, चन्द्रमा, बुध,
शुक्र, गुरु होने चाहिये परन्तु सगाई के पहिले दोनों टेवे वर
कन्या के मिला लेने चाहिये जो नहीं मिलाते हैं उनको चाहिये
कि विवाह सुझाने में टेवे न दें वर कन्या के नाम से सुझावे
या जन्म नाम के से सुझावे या दोनों नाम बोलते हीं या दोनों
नाम जन्म के हीं तो शुभ है ।

**जन्मपत्र मिलाने में जो जो गुण
चाहिये सो लिखते हैं ।**

वणो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकं ।
गणमैत्रं भक्षटं च नाड़ी चेते गुणाधिकाः ॥

टीका—वण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, गण मैत्री,
भक्षट, नाड़ी ये मिलाने चाहिये ।

अथ विवाह सुभाना

दैवज्ञं पूजयेत्पूर्वम् फलं ताम्बूलं गृह्णते ।
विप्राय भेटकं दद्याद्विवाहे प्रश्न कारयेत् ॥

टीका—कन्या का पिता या कन्या का भाई जब विवाह करना चाहें तो पहिले परिषद के पास जावे, नारियल या सुपारी, पान, फूल, चावल दक्षिणा, ब्राह्मण की भेटकर तब प्रश्न करे तो वो विवाह शुभ दायक होता है ।

ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यर्थर्वणः ।
ब्रह्मवाक्यं सदा नित्यं हन्यन्ता तव शत्रवः ॥

टीका—चारों वेदों का यही सिद्धान्त है कि ब्राह्मणों के आशीर्वाद से तुम्हारे शत्रुओं का नाश हो ।

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां गृहगौचरे ।
जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत् ॥

टीका—विवाह में और शुभ काम में यात्रा में घर बनामे

प्रतिष्ठा में गोचर ग्रह देखने में और जितने शुभ काम हैं सब में जन्मराशि प्रधान है ।

देशोग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ।

नाम राशि प्रधानत्वं जन्म राशि न चिंतयेत् ॥

टीका—देश, गांव घर के विषयमें, नौकरी और व्यापारके विषय में नाम राशि से देखे जन्म से नहीं ।

जन्मभं जन्मधिष्ठयेन नामधिष्ठयेन नामभम् ।

व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ॥

टीका—वर का जन्म नक्षत्र हो तो कन्याका भी जन्मका नक्षत्र हो या दोनों का बोलता नाम हो । एकका जन्मका एक का बोलता हो तो अशुभ होता है ।

जन्ममासे जन्मभे न च जन्मदिनेपि च ।

ज्योष्टे न ज्योष्टगर्भस्य विवाहं कारयेत् क्वचित् ॥

टीका—जन्मका मास जन्म का दिन जन्म का नक्षत्र प्रथम गर्भ वाले की उत्पत्ति का विवाह ज्येष्ठ में हृवर्जित है ।

ज्येष्ठ विचार देखना

न कन्यावरयोज्येष्ठे ज्योष्टयोः पाणिपीडनम् ।

द्वयोरेकतरे ज्येष्ठे न ज्योष्टो दोषमावहेत् ॥

टीका—जो वर कन्या दोनों प्रथम गर्भ के हों ज्येष्ठ के महीने में व्याह नहीं करे और जो एक जेठा हो तो विवाहकरने में कुछ दोष नहीं, जेठा उसे कहते हैं जो पहिले पैदा हुआ हो यानी तीन ज्येष्ठ नहीं मिलने चाहिये ।

सिंहे गुरौ गते कायों न विवाहः कदाचन ।
मेषस्थि ते दिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः ॥

टीका—सिंह की बृहस्पति में विवाह न करे मेष के सूर्य में सिंह की बृहस्पति हो तो विवाह करने में कुछ दोष नहीं होता है ।

विवाह के नक्त्र देखना

रोहिण्युत्तरेवत्यो मूल स्वातिमृगो मधा ।

अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मङ्गलप्रदाः ॥

टीका—रोहणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाति, मृगशिर, मधा, अनुराधा, हस्त ये म्यारह नक्त्र विवाह के हैं ।

विवाह के मास देखना

माघे धनवती कन्या फाल्गुने शुभगा भवेत् ।

बैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरय्यन्य बल्लभा ॥

टीका—माघ के महीने में विवाह करे तो कन्या धनवती हो फाल्गुनी में सौभाग्यवती, बैशाख में तथा ज्येष्ठ में विवाह होय तो पति को प्यारी हो ।

आषाढे कुलवृद्धिः स्यादन्ये मासाश्च वर्जिताः ।

मार्गशीर्षमपोच्चति विवाहे केऽपि कोविदाः ॥

टीका—आषाढ में विवाह करे तो कुल की बृद्धि हो, और महीने में विवाह वर्जित है, मार्गशिर के महीने को भी कोई २ आचार्य शुभ कहते हैं ।

**विवाह में तिथि वार नक्षत्र वर्जित ।
अमावस्या च रिक्ता च वारवेला च जन्मभूम् ।
गणडान्तं क्रूरवाराश्व वर्जनीयोः प्रयत्नतः ॥**

टीका—अमावस्या और रिक्ता तिथि ४। ९। १४ वारवेला और जन्म का नक्षत्र और क्रूर वार रवि, शमि मङ्गल और गडान्त, नक्षत्र ये विवाह में वर्जित हैं ॥

**विवाह वर्जित योग देखना ।
भद्राकर्कटयोगं च तिथ्यन्तं यमघन्टकम् ।
दग्धां तिथि च कुलिकं च विवर्जयेत् ॥**

टीका—भद्रा, कर्कट, योग और तिथी के अन्त की २ घड़ी यमघन्टक योग दग्धातिथि और नक्षत्रके अन्त की ३ घड़ी और कुलिक योग, ये विवाह में वर्जित हैं ।

**मासांतादि देखना ।
मासान्ते दिनमेकन्तु तिथ्यन्तं घटिकाद्वयंम् ।
घटिकानां त्रयं भान्ते विवाहे परिवर्जयेत् ॥**

टीका—मासान्त कहिये संक्रांति के अन्त का एक दिन तिथ्यन्त कहिये तिथि के अन्त की दो घड़ी, भाति कहिये नक्षत्र के अंत की ३ घड़ी ये विवाह में वर्जित हैं ॥

**मासान्ते प्रियते कन्या तिथ्यन्ते स्याद् पुत्रिणी ।
नक्षत्रान्ते च वैधव्यं विष्टौ मृत्युद्धर्योर्भवेत् ॥**

टीका—महीनेके अन्त में कन्यादान करेतो कन्या की मृत्यु हो तिथि के अन्तमें कन्यादान करे तो अपुत्रणी हो नक्षत्रके अन्तमें विवाह होयतो विधवा होय भद्रामें विवाह होतो वरकन्या दोनों की मृत्यु हो सो यत्न कर विचारिये ।

विवाह में किस २ का बल देखना ।

वरस्य भास्कर बलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम् ।

द्वयोचंद्रबलं ग्राह्य विवाहे नान्यथा भवेत् ॥

टीका—वर को सूर्य का बल देखे, कन्या को बृहस्पति का बल देखे वर कन्या दोनों को चन्द्रमा का बल देखे ।

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ।

विवाहितो वरा मृत्यु प्राप्नोत्यत्रे न संशयः ॥

टीका—जो वर की राशि से सूर्य ४ । ८ । १२ । होतो विवाह न करे जो करे तो वर की मृत्यु हो इसमें झूँठ नहीं है ।

जन्मन्यथ द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेषि वा ।

नवमे च दिवानाथे पूज्या पाणिपीडनम् ॥

टीका—जो वरकी राशिसे सूर्य १ । २ । ५ । ७।९ होतो पूजा का विवाह होता है । सूर्य का जप दान पूजादिक करने से विवाह शुभ होता है ।

एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेषिवा ।

वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥

टीका—जो वर की राशि से ११ । ३ । ६ । १० सूर्य हो तो शुभ दायक और कल्याण का करने वाला होता है ।

सूर्य बल चक्रम् ।

=	४	१२	सूर्य	अशुभ होता है
१	२	५	७	६ पूजाका
११	३	६	१०	शुभ होता है

गुरु बल देखना ।

अष्टमे द्वादशे वापि चतुर्थे वा वृहस्पतौ ।
पूजा तत्रा न कर्तव्या विवाहे प्राणनाशकः ॥

टीका—कन्या की राशि से वृहस्पति ४=१२ हो तो अशुभ होती है, ग्रास धात के करने वाली है ।

षष्ठे जन्मनि देवेज्ये तृतीये वशमेषि वा ।
भूरिपूजापूजितः स्यात्कन्यायाः शुभकारकः ॥

टीका—जो कन्या की राशि से वृहस्पति ६ । १ । ३ । १० होय तो बहुत सी पूजादान जप आदि करने से शुभ होता है ।

एकादशे द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेषि वा ।
नवमे च सुराचाये कन्यायाः शुभकारकः ॥

टीका—जो कन्या की राशि से वृहस्पति ११ । २ । ५ । ७ होतो कन्या को विवाह में शुभदायक होता है ।

गुरु बल चक्रम् ।

११	२	५	७	९	शुभ होता है
६	१	३	१०	गुरु	पूजा का है
४	८	१२	बृहस्पति	अशुभ होता है	

उच्चादि गुरुफलम् ।

स्वाच्छे स्वभे स्वमैत्रेवा स्वांशेवर्गोत्तमेषि वा ।
रिस्फाष्टतूर्यगोपीष्टो नीचारिस्थः शुभोप्यसत् ॥

टीका—जो उच्च का बृहस्पति हो या अपने घर का हो या द्विगोत्तमका हो या मित्र के घर का हो या अपने नवांसक में हो तो ४ । = । १२ इनमें भी दोष नहीं माना जाता ॥

भृष्टचापकुलीरस्थो जीवोवाप्यशुभोवरः ।

अतिशोभनतां याति विवाहोपनयासदिषु ॥

टीका—विवाह और यज्ञोपवीत में मीन, धन कर्क जो इन राशि का बृहस्पति अशुभ भी हो तो भी शुभ मानना ॥

कन्या की संख्या देखना ।

अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा त्वं रोहिणी ।

दशवर्षा भवेत् कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥

टीका—आठ वर्ष तक कन्या की गौरी संज्ञा जानो । नव वर्ष तक रोहिणी संज्ञा । दश वर्ष में कन्या संज्ञा जानो । इसके ऊपरांत रजस्वला नाम स्त्री संज्ञा जानो ।

रजस्वला दोष देखना ।

**संप्राप्तैकादशो वर्षे कन्या या न विवाहिता ।
मासे मासे पिता भ्राता तस्याः विपति शोणितम्॥**

टीका—जो ग्यारहवें वर्ष में कन्या का विवाह नहीं हो तो महीने २ प्रति जो रजस्वला हो उसके दोष का भागी पिता और बड़ा भाई होता है ।

**द्वादशैकादशो वर्षे नस्याः शुद्धिर्न जायते ।
पूजाभिः शकुनैः वर्णपि तस्या लग्नं प्रदापयेत् ॥**

टीका—जो ग्यारह वारह वर्ष की कन्या होय और वृहस्पति भी अच्छा न हो तो लग्न ही विचार पूजा दान करके विवाह कर दे ।

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठभ्राता तथैव च ।

त्रयश्च नरकं यांति दृष्टा कन्यां रजस्वलाम् ॥

टीका—जो रजस्वला कन्याको माता, पिता, बड़ा भाई देखें तो नरक के अधिकारी होते हैं ।

गुर्विन्द्रिकबला गौरी गुर्विन्दुबल रोहिणी ।

रवीदुबलजा कन्या प्रौढा लग्नवला स्मृता ॥

टीका—गौरी जो है उसको वृहस्पति चन्द्रमा सूर्य तीर्णोंका बल देखे तो शुभ है । रोहिणी को गुरु और चन्द्रमा का बल देखे, कन्या को सूर्य और चन्द्रमा का बल देखे, प्रौढ़ा नाम १२ वर्ष की या इससे ऊपर की लग्न बल ही विचार के विवाह करदे ।

गौरी ददन्नागलोके बैकुण्ठे रोहिणी ददेत् ।

कन्या ददन्मृत्युलोके रौरवं तु रजस्वलाम् ॥

टीका—गौरी का दान करे तो पाताललोक में सुख पावे रोहिणी का दान करे तो वैकुण्ठ लोकमें सुख पावे कन्याका दान करे तो मृत्यु लोक में सुख प्राप्त हो और जो रजस्वला का दान करे तो नर्क में पड़े ।

जीवो जीवप्रदाता च द्रव्यदाता च चन्द्रमा ।

तेजोदाता भवेत्सूर्यो भमिदाता महीसुतः ॥

जीवहीना मृता कन्या सूर्यहीनो मृतो वरः ।

चन्द्रेहीनेधता लक्ष्मीः स्थानहानिःकुजम्बिना ॥

टीका—बृहस्पति जीव के दाता हैं चन्द्रमा धन के दाता हैं सूर्य तेजके दाता हैं मङ्गल भूमि के दाता हैं ॥ बृहस्पति हीन होयतो कन्या की मृत्यु हो । सूर्य हीन होय तो वरकी मृत्यु हो । चन्द्रमा हीन होय तो लक्ष्मी की हानि हो । मङ्गल हीन होयतो घर की हानि करे ।

०दश दोष देखना लिख्यते ।

लत्ता पातो युतिवेदो यामित्रं बुधपञ्चकम् ।

एकार्गलोपग्रहौ च कांतिसाम्यं निगच्यते ॥

दग्धातिथिश्च विज्ञेया दश दोषा महाबलाः ।

एतान्दोपाच परित्यज्य लग्नं संशोधयेद् बुधः॥

टीका—अब दस दोष कहते हैं । १ लत्ता, २ पात, ३ युति ४ वेद, यामित्र, ६ बुध पञ्चक, ७ एकार्गल, ८ उपग्रह

६ क्रांतिसाम्य, १० दग्धातिथि, ये दस दोष विवाह में बलवान हैं इनसे बचाय के लग्न साधना चाहिये ।

दश दोष मानना ।

लत्ता मालवके देशो पातं च कुरुजांगले ।
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥

टीका—लत्ता दोष मालव देश में माना जाता है, पातं दोष कुरु जांगल देश में, एकार्गल दोष काश्मीर देशमें माना जाता है और वेध दोष सब जगह मानना चाहिये ।

यामित्रं चामरे देशे युतिदोषो कलिंगके ।
उपग्रहं च कैलाशे दग्धा विद्रुमदेशके ॥

टीका—या मित्र दोष अमर देशमें माना जाता है, युति दोष कलिंग देशमें, उपग्रह दोष कैलाश देशमें माना जाता है । दग्धा दोष विद्रुम देश में माना जाता है । और ३ दोष सब जगह मानने चाहिये ।

वेघ, वृथ पंचक, दग्धातिथि, क्रांतिसाम्य, युतिये ६ दोष जरूर देखने चाहिये और दोष २ देश में माने जाते हैं ।

अथ युति दोष देखना ।

यत्र गृहे भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत् ।
युतिदोषस्तदं ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् ॥

टीका—जिस नक्षत्र का चन्द्रमा हो और उसी नक्षत्र पर

और कोई ग्रह होयेतो युति दोष होता है परन्तु शुक्र के बिना संयुक्त हो तो शुभ, अन्यत्र अशुभ होता है

युति दोष फलम् ।

रविणा संयुतो हानिभौ मेन निधनं शशी ।

करोति मूलनाशं च राहुकेतुशनिश्चरैः ॥

टीका—जो सूर्य चन्द्रमा के साथ हो तो हानि करे, भौम होय तो सूत्यु करे और राहु, केतु, शनीश्चर होय तो मूल नाश करे ।

वर्गात्तमगतश्चन्द्रः स्वोच्चे वा मित्रराशिगः ।

युतिदोषश्च न भवेद्यप्तयोः श्रेयसी सदा ॥

टीका—जो चन्द्रमा वर्गात्तम का हो अथवा उच्च का हो या मित्र राशि का हो तो युति दोष का नाश करे । ज्ञी पुरुष दोनों सुखी रहें ।

अथ वेघ दोष देखना ।

एक रेखास्थितिवेधो दिननाथादिभिर्घैः ।

विवाहे तत्र मासंतु न जीवति कदाचन ॥.

टीका—जिस नक्षत्र का लग्न हो और उसी नक्षत्र की रेखा से जो नक्षत्र विधा हो और उसी नक्षत्र पर सूर्य आदि कोई ग्रह होय तो उसको वेघ कहिये । विवाह के एक महीने पीछे सूत्यु करे ।

अश्वनी पूर्वफालगुण्या भरणीं चानुराध्या ।
अभिजिच्चापि रोहिण्या कृत्तिका च विशाख्या ॥

मृगश्चोत्तरपादेन पूर्वा पाढा तथाद्रक्का ॥

पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ।

धनिष्ठया तथा श्लेषा मध्यापि श्रवणेन च ॥

रेवत्युत्तरफाल्गुन्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात् ।

स्वात्याशतभिषा विद्वा चित्रया पूर्वभाद्रपात् ॥

विद्वान्येतानि नामानि विवाहे भानिकोविदैः ॥

टीका—अश्विनी से और पूर्वफाल्गुणी से एक रेखा है ।

ऐसे जो दोनों ठौर एक रेखा हो तो वेघ होता है ऐसे अद्वाईस नक्त्र को जानिये । ये वेघ पंचशाला चक्र में समझले ।

वेघ फलम्

रविवेधेच वैधव्यंकुज

वेधेकुलच्छयम् । बुध वेधे

भवेद्व्याप्रब्रज्या गुरु

वेधतः । अपुत्राशुकवे-

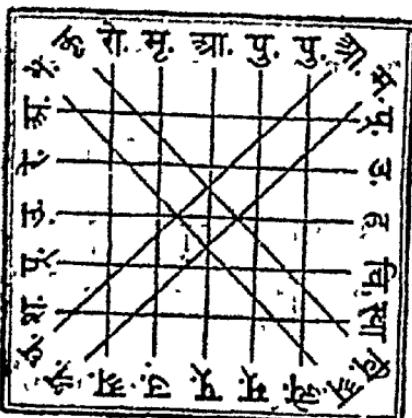
धेच सौरेचन्द्रेचदुः-

खिता । परपुरुषरता-

राहोः केतोः स्वच्छ-

दचारिणी ॥

वेघ चक्रम्



टीका—जो सूर्य का वेघ लगे तो विधवा हो मंगल का वेघ लगे तो कुलच्छय होय बुध का लगे तो व्याप्रज्या होय, गुरु का वेघ लगे तो सन्यासिनी हो शुक्र का वेघ लगे तो पुत्र न हो, शनिश्चर चन्द्रमा का वेघ लगे तो दुस्री हो, राहुका वेघ लगेतो

पर पुरुष गामनी हो, केतु का वेद लगे तो अपनी इच्छानुसार चलने वाली हो ।

शनिराहुकुजा दित्या यदाजन्मक्ष्यं संस्थिताः ।

विवाहिता च या कन्या सा कन्या विधवा भवेत् ॥

टीका—शनि, राहु, भौम, सूर्य इनमें से कोई ग्रह विवाह समय में जन्म नक्षत्र पर होय तो कन्या विधवा होय ।

अथ यामित्र दोष विचार ।

चतुर्दर्शो च नक्षत्रे या मित्रं लग्नमासमृतम् ।

शुभयुक्तां तदिच्छन्ति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥

टीका—जो लग्न के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रह होय तो यामित्र दोष होता है जो सौम्य ग्रह हो तो शुभ दायक है। और पाप ग्रह होय तो वर्जित करे ॥

यामित्र फलम् ।

चंद्रश्चादिभूर्गुर्जीवो यामित्रो शुभकारकाः ।

स्वर्णानुमंदारा यामित्रो न शुभप्रदाः ॥

टीका—जो चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति, और शुक्र ये ग्रह जन्म के नक्षत्र से चौदहवें यामित्र पै होय तो शुभदायक है और जो शनि, केतु तथा सूर्य, भौम, चौदहवें यामित्र पै हों तो अशुभ होता है ।

चंद्रद्वालग्नतो वापि ग्रपो वर्ज्या श्च सप्तमे ।

तत्रस्थिता ग्रहाननुनं व्याधिवैधव्यकारकः ॥

टीका—चन्द्रमा से वा विवाह लग्न की राशि से सातवें कोई ग्रह होय तो व्याधि और वैधव्य करे ।

अथ मृत्यु पंचक देखना ।

धार्यातिथिर्मासि दशाष्टवेदाः १५।१२।१०।८।
संक्रातितोयात् दिनैश्चयोज्याः । ग्रहैर्विभक्तायति
पंचशेषो रोगस्तथाग्निर्दृपचौं रमृत्युः

टीका—अब पंचक देखना कहते हैं तिथि कहिये १५ मास कहिये १२ दश १० अष्ट च वेद ४ संक्राति के जै दिन गये हों तिनको मिला करके हका भाग दे जो ५ वचे तो पंचक जानिये ऐसेही पांचों अङ्गका विचारके देखे १५ जोड़के हका भाग देकर ५ वचे तो रोग । १२ जोड़ ६ का भाग देकर ५ वचे तो अग्नि पंचक १० जोड़के ६ का भाग देकर ५ वचे तो राज पंचक । ८ जोड़के ६ का भाग देकर ५ वचे तो चोर पंचक । ४ जोड़के ६ का भाग देकर ५ वचे तो मृत्यु पंचक जानना चाहिये ।

पंचक देखने की दूसरी रीति ।

१।१०।१६।२८ इनमें मृत्यु पंचक होता है ॥

संक्राति के जै दिन गये हो उनको गिनके उसमें ४ और जोड़ दे फिर उसमें नौ का भाग दे ५ वचे तो मृत्यु पंचक जानिये, जैसे संक्राति का एक दिन गया उसमें ४ और जोड़ दे तो ५ होगये तो मृत्यु पंचक जानिये और जो १० अंसगये हों तो उसमें ४ और जोड़े १४ हुये उसमें नौ का भाग दिया तो ५ वचे मृत्यु पंचक जानो जो १६ दिन गये ४ और जोड़े २३

हुये उसमें नौ का भाग दिया नौ दूनी १८ । ५ बचे मृत्यु पंचक जानो जो २८ अंश गये ४ और जोड़े ३२ हुये ६ का भाग दिया नौती २७ गए ५ बचे मृत्यु पंचक जानो । रोग पंचक देखना हो १५ और जोड़कर ६ का भाग दे ५ तो रोग पंचक अग्नि पंचक देखना हो तो १२ जोड़े राजपंचक देखना हो तो १० जोड़कर ६ का भाग दे चौर पंचक देखना हो तो ८ जोड़ कर नौ का भाग दे । मृत्यु पंचक देखना हो तो ४ जोड़ कर नौ का भाग दे ।

एके मृत्यु द्व्योर्जन्हि श्वतुर्थेराजं पंचकम् ।

षष्ठे चौर अष्टमे रोगं वाणमेवं विचारयेत् ॥ १ ॥

टीका—संक्रातिका एकअंश जाने पर मृत्युबाण होता है दूसरे पर अग्नि । चौथे पर राज । छठे पर चौर । आठवे पर रोग होता है ।

पंचकं चक्रम् ।

रोग	अग्नि	राज	चौर	मृत्यु	५वाण
सूर्य	मङ्गल	शनिश्वर	शुक्र	बुध	वार
रात्रि	दिन	दिनं	रात्रि	सन्ध्या	समय
उपनयन	घर	राजसेवा	यात्रा	विवाह	वर्जित
यज्ञोपवीत	बनाना				

पंचकं वर्जितं देखना ।

यद्यक्षर्वारे किल रोगपंचकं सोमे च राज्यं त्तितिजे च वन्हिः । सौरे च मृत्युर्धिषणे च चौरोविवाह काले परिवर्जनीयाः ॥

टीका—रविवार को जो रोग पंचक लगे और सोमवारको राज पंचक । भोमवार को अग्नि पंचक शनिश्चर को मृत्युपंचक भूगु को चोर पंचक ये विवाह में वर्जित हैं ।

रोग चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवाराज्याग्निपञ्चकम् ।

उभयोः सन्ध्ययोमृत्युरन्यकाले न निंदिताः ॥

टीका—रोग, चोर पंचक रात्रि को अशुभ हैं और राज्य अग्निपंचक दिन में वर्जित हैं दोनों की सन्धि में मृत्यु पंचक निन्दित है और समय वर्जित नहीं है ।

क्रांतिसाम्य देखना

ऊर्ध्वास्तिसस्तिरस्त्रो मध्ये मीनम् लिखेद्बुधः ।

सूर्योचन्द्रमसौ दृष्ट्यौ क्रांतिसाम्यं निगद्यते ॥

मीनः कन्यक्या बुक्तो मेष सिंहे न सङ्गतः ।

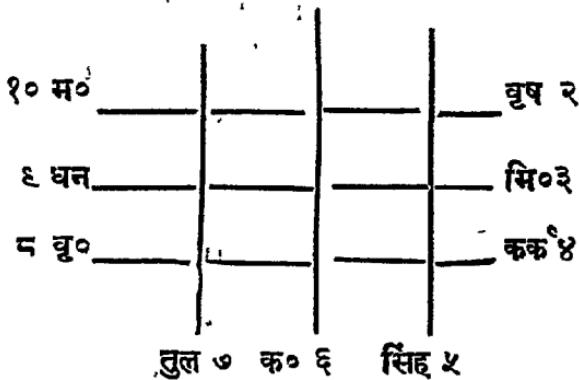
मङ्गरेणवृषः क्रांतिश्चापोपि मिथुनेन च ।

कर्केण वृश्चिको विद्वा वेधश्च तुलकुम्भयोः ।

क्रांतिसाम्ये कृतोद्घाहो न जीवति कदाचन ॥

टीका—क्रांति साम्य देखने की ये रीति है कि सूर्य चन्द्रमा एक रेखा पर हों तो उसे क्रांति साम्य कहते हैं जैसे मीन राशि का तो सूर्य है और कन्या का चन्द्रमा हो तो क्रांति साम्य होता है मीनके सूर्य में जिस दिन कन्या के चन्द्रमा हों तो उसी रोज क्रांति साम्य होगा और कन्या के सूर्य में मीन के चन्द्रमा हो तो भी क्रांति साम्य होगा ऐसे ही १२ राशियों को इस नीचे के चक्र में समझ लेना चाहिये ।

कृ० ११ मीन १२ मेरे १



क्रांतिसाम्य चक्रम्

१२ सू०	७ सू०	४ सू०	३ रु०	१० सू०	१ सू०
६ चं०	११ चं०	८ चं०	६ चं०	२ चं०	५ चं०
क्रांति०	क्रांति०	क्रांति	क्राँति	क्राँति	क्रांति

क्रांतिसाम्य फलम्

क्राँतिसम्ये च कन्याया यदि पाणि ग्रहो भवेत् ।

कन्या वेधव्यतां याति ईशस्य दुहिता यदि ॥

टीका—जो क्रांति साम्य में विवाह हो तो महादेव जी की कन्या हो तो भी विधवा हो ।

दग्धातिथि चक्रम्

मीन चाषे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।

मेषकर्कटयोः पष्ठी कन्या युग्मेषु चाष्टमी ॥

दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।

एतास्तुतिथयोदग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥
यः कश्चित्तिथयोदग्धाः मुनिभिः कथितास्फुटां ।
तिथिदग्धा कृष्ण पक्षे शुक्लेचन्द्रेण रक्षति ॥

दग्धा तिथि चक्रम् ।

मीन के सूर्य में	बृंप सूर्य में	मेप सूर्य में	कन्या सूर्यमें	वृश्चिक सूर्यमें	मकर सूर्यमें	सूर्य
धन के सूर्य में	कुंभसूर्य में	कर्कसूर्यमें	मिथुन सूर्यमें	सिंह	तुला	सूर्य
२	४	६	८	१०	१२	दग्धा तिथि

ये दग्धा तिथि शुभ काम में वर्जित हैं इन्हें त्याग दे । यह दग्धा तिथि कृष्णपक्ष में वर्जित हैं । शुक्लपक्ष में शुभ हैं । ऐसा कोई मुनि कहते हैं ।

लग्न शुद्धि देखना ।

केंद्रे सप्तमहीने च द्वित्रिकोणे शुभाशुभम् ।

धने शुभप्रदशन्नन्द्रः पापाष्ठेच शोभना ॥

तृतीयैकादशो सर्वे सौम्या पापा फल प्रदा ।

ते सर्वे सप्तमस्थाने मृत्युदाः वरकन्ययोः ॥

टीका—केन्द्र स्थान कहिये १।४।७।१० त्रिकोण कहिये ५।४ जो इन स्थानों में शुभ ग्रहहोय तो श्रेष्ठ है और २। स्थान चन्द्रमा शुभ होता है और ६।स्थान पापग्रह शुभहोते हैं और ३।१।१ स्थान सर्व ग्रह शुभ होते हैं और सातवें स्थान सर्व ग्रह अशुभ होते

हैं । और शुक्ल पक्ष की पंचमी से कृष्णपक्ष की पंचमी पर्यन्त तक का चन्द्रमा श्रेष्ठ बलि होता है और कृष्णपक्ष की छठ से ३० अमावस तक का चन्द्रमा अशुभ होता है ।

ग्रहों का फल देखना ।

शनिः सूर्यश्च लग्नोस्ते चन्द्रो लग्नोष्टमे रिपौ ।
कुजो लग्नेऽष्टमे चास्ते शुक्रे व्युन्नेऽष्टमेरिपौ ॥
गुरुः मृत्यौ सैंहिकेयो लग्ने सूर्ये च सप्तमे ।
बुधोऽष्टमे च यामित्रे विवाहे प्राणनाशकः ॥
क्रूरयोरंतरं लग्नं चंद्रम् च परिवर्जेयेत् ।
वर हन्ति ध्रुवं लग्नं शीतरश्मश्च कन्यकांम् ॥

टीका-शनि सूर्य जो लग्न से सातवें होय और चन्द्रमा १ । ६ । ८ और भौम १ । ८ । ७ और शुक्र ७ । ८ । ६ वृहस्पति ८ राहु १ । ७ । ४ और बुध ८ । ७ यह इन स्थानों में विवाह समय प्राण के नाश करने वाले हैं और क्रूर ग्रह के मध्य चन्द्रमा होय तो अथवा लग्न होय तो वर्जिनीय है वर की शीघ्र ही मृत्यु का दाता है चन्द्रमा कन्या की मृत्यु करता है ।

लग्नदेकादशे सर्वे लग्नपुष्टिकरा ग्रहाः ।
तृतीये चाष्टमे सूर्यः सूर्यपुत्रश्च शोभनः ॥
चंद्रोधने तृतीये च कुजः षष्ठे तृतीयके ।
बुधेज्यौ नवपद्मद्वित्रि चतुः पंच दशे स्थितौ ॥

**शुक्रोद्वित्रिचतुःपञ्च धर्मकर्मतनुस्थितः ।
राहुर्दशोष्टषटपंच त्रिनवद्वादशे शुभः ॥**

टीका—लग्नसे ग्यारहवें स्थान सब ग्रह शुभ हैं सूर्य और शनि ८ । ३ । और चन्द्रमा २ । ३ । और भौम ३ । ६ । और बुध बृहस्पति ६ । ६ । २ । ३ । ४ । ५ । १० और शुक्र २ । ३ । ४ । ५ । ६ । १० । इन स्थानों में शुभ हैं और राहु केतु ये १० । ८ । ६ । ५ । ३ । ६ । १२ । इन स्थानों में शुभदायक हैं । १२वें स्थान में मार्गी ग्रह और दूसरे स्थान में वक्री ग्रह होते लग्न पर कर्तरी दोष होता है इसीप्रकार सब स्थानोंपर जानना ।

अथ गोधूली देखना ।

**यदा नास्तङ्गतो भानुगोधूल्या पूरितं नभः ।
सर्वमङ्गलं कार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥**

टीका—जब तक सूर्य अस्त न हो और गौओं की खुरका धूल आकाश में पूरित हो रही हो तो, यह घटी सकल उचम कार्यमें मङ्गल की दाता है इसको गोधूलि कहते हैं ।

**यत्र चैकादशशचन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयकः ।
गोधूलिकः सविज्ञेयःशेषा धूलिमुखाःस्मृताः ॥**

टीका—जो ग्यारहवें स्थान चन्द्रमा हो अथवा दूसरे तीसरे होय तो उचम गोधूली कहा है वाकी स्थान में चन्द्रमा होने से धूली मुख कहते हैं ।

**कुलिकः क्रांतिसाम्यं च लग्ने षष्ठाष्टमे शशि ।
तदा गोधूलिकस्त्याः पंचद्वौषेषच दूषितः ॥**

टीका—कुलिक्योग और क्रांतिसाम्य और लग्न में द और द चन्द्रमा हो तो गोधूली लग्न में विवाह नहीं करना, लग्न पांच दोष कर दूषित है। लग्नमें और उन्हें दवें मङ्गल हो तो गोधूली भज्ज हो जाता है इसमें वर को हानि होती है।

अंशस्य पतिरंशे च तन्मित्रं वा शुभोपि वा ।

पंश्यतोवा शुभोज्ञेयः सवे दीषाश्च निष्फलाः ॥

टीका—अंशका पंति जो है नवांश का स्वामी अपने नवांशक में हो अंथवा स्वामी का मित्र और शुभ ग्रह होय अथवा इनकी दृष्टि लग्न पर होय तो दोषों को निष्फल करता है।

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सवे यस्य केन्द्रे वृहस्पतिः ।

मत्त मातंगयूथानां शर्तं हन्ति च केसरी ॥

टीका—जो केन्द्र स्थान १ । ४ । ७ । १—इन स्थानों से वृहस्पति अकेले हों और सब ग्रह अरिष्टकारक हों तो क्यों कर सकते हैं जैसे अकेला सिंह सैकड़ों हाथियों का समूह हन डारे ऐसे ही वृहस्पति सब दोषों को दूर कर देते हैं।

अथ कन्यादान का लग्न देखना ।

**दिने सदान्धा वृषमेष सिंहारात्रौ च कन्या मिथुनं
कुलीरः । मृगस्तुलाली बधिरो पराह्ने संध्यासु
कुब्जा घटधन्विमीनाः ॥**

टीका—वृष, मेष, सिंह, ये लग्न दिन में अन्धे हैं और कन्या मिथुन, कर्क ये रात्रि में अन्धे हैं। मकर, तुल, वृश्चिक दुपहरी में बहरे हैं। धन, मीन, कुम्भ संध्या में कुबरे हैं।

लग्न फल देखना ।

दिवान्धो वरहन्ता च रात्र्यन्धोधननाशकः ।
दुःखदो वधिरो लग्नः कुठजो वंशविनाशकः॥

टीका—दिन के अंधे लग्न में कन्यादान होय तो वर की हानि हो । रात्रि के अंधे लग्न में फेरे हों तो धनकी हानि हो । और वहरे लग्न में पाणि ग्रहण हो तो दुःख हो । और कुन्नरे लग्न में कन्यादान हो तो वंश का नाश करे ।

अथ योग वर्जित लिख्यते ।

परिघाद्व व्यतीपातं वैधृतिं सकलं त्यज्येत् ।
विष्कुम्भे घटिकाः पञ्च शूले सप्त प्रकीर्तिताः ॥
षट् गंडे चातिगंडे च नव व्याघातवज्रयोः ।
एते तु नव योगाश्च वर्ज्या लग्ने सदा बुधैः ॥

टीका—ये नव योग सिद्ध हैं तिनकी घड़ी पंडितजनों ने चर्जित करी हैं । परिघ की ३० घड़ी और व्यतीपात, वैधृत सम्पूर्ण त्याग करे हैं । विष्कुम्भ की ५ शूलकी ७ गंड, अतिगंड की ६ व्याघातकी ६ वज्रकी ६ ये घड़ी शुभ काममें वर्जित करदे ।

योग फल देखना ।

व्यतीपाते भवेन मृत्युर्गरणाते मरणं प्रुवम् ।
अग्निदग्धो भवेद्वजे रुजश्चैवापि गरणके ॥

वैधव्यं वैदृतीचैव विष्कुम्भे कामचारिणी ।
वीर्यहीनोऽतिगण्डे च व्याघाते मृतवत्सका ।
परिधे च भवेहासी मद्यमाँसरता सदा ॥

टीका—व्यतिपातमें विवाह करे तो वर की मृत्यु हो । और गण्डांतमें करे तो दोनों की मृत्यु हो । वज्रमें करे तो आग लगे-गण्डमें करे तो रोग हो वैदृतमें विधवा हो । विष्कुम्भमें कामातुर हो । अतिगण्डमें धातुक्षय होय । व्याघातमें मृतवत्साहो बालक मर मर जांय । परिधि में पराई दासी हो और मांस मदिराका सेवन करने वाली हो ये निषिद्ध योग हैं इन्हें विवाहमें वर्जित करदे ।

कन्यादान का लग्न शुद्ध देखना ।

व्यये १२शनिःख १०५वनिजस्तृतीये ३ मृगु स्तनो
१ चन्द्र खला न शस्ता लग्नेट् क्विग्लौ॒श्च रिपौ
मृतोऽलौलग्नेट् शुभाराश्च मदेवं सर्वे ॥

टीका—विवाह लग्न से १२वें शनि १०वें मङ्गल तीसरे शुक्र लग्नोंमें चन्द्रमा पापग्रह और लग्नेश शुक्र चन्द्रमा ६। ८वें स्थान में तथा लग्नेश शुक्र, बुध, बृहस्पति, चन्द्रमा, मङ्गल अष्टम स्थान में शुभ नहीं होते हैं ।

बार्ता—शुभदायक अच्छा विवाह सुझा के फिर शुभ तिथि शुभवार देखके । चिठ्ठी लिखना । ब्राह्मण के यहां पंडित करके लिखे या मिश्र करके । चत्रिय के यहां सिंह करके । वैश्य के यहां लाला करके । शूद्र के यहां चौधरी करके लिखे ।

विवाह की चिट्ठी लिखना ।

स्वस्ति श्रीसर्वोपमा योग्य सकलगुण निधान
 गङ्गाजल निर्मल यमुनाजल शीतल पवनपवित्र
 शुभ चरित्र षट् कर्म सावधान शुभस्थान मीरापुर
 को लाला हेतराम व लाला हरसहाय जी व
 समस्त दाल गोपालन को मेरठ से एतान योग
 लिखितं लाला नैनसुखमलजी व समस्त वाल
 गोपालन की रामराम वंचना अत्र कुशलं तत्रास्तु
 अग्रे वृत्तान्तं वाच्यं वरनाम चिरञ्जीव लाला
 हीरालालजी राशि कर्क सूर्यबल ११ चंद्रबल ७
 कन्याकी राशि धन ६ गुरुबल २ चंद्रबल ११ अग्रे
 सम्बत् १६६० वैशाख सुदी ११ रविवार का विवाह
 श्रेष्ठ है सो आप प्रमाण करना ॥ शुभम् ॥

जब चिट्ठी रह जाय फिर लग्न भेजना छ ६ । ११ । १५
 दिनका अच्छे शुभ वार तिथि देखकर लग्न लिखना चाहिये ।

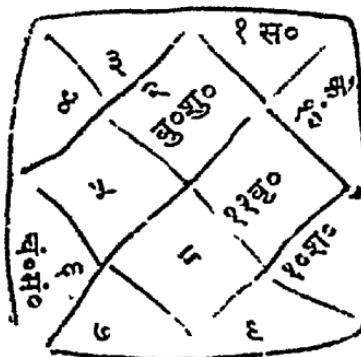
अथ लग्न लिखना ।

श्रीगणेशायनमः । ॐ यं ब्रह्म वेदान्तविदो
 वदंति परं प्रधानं पुरुषं थान्ये । विश्वोद्गतेः
 कारणमीथरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ।

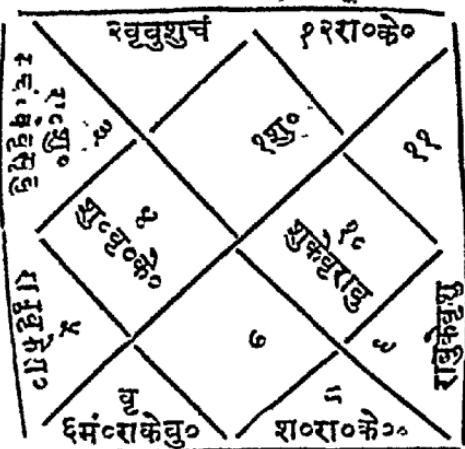
जननीजन्मसौख्यानां वर्धती कुलसम्पदाम् ।
पदवी पूर्वपुण्यानां लिख्यते लग्नपत्रिका ॥

अथ शुभ सम्बत्सरेऽस्मिन श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये सम्बत् १६६० शाके शालिवाहनैस्य १८२५ मासानां मासोत्तमे मासे उत्तमे वैशाख मासे शुभे शुक्ले पद्मे शुभतिथौ ११ एकादश्यां गुरुवासरे ३५ घड़ी १८ पल हस्तनाम नक्षत्रे पॅथ । १३ व्याघ्रातनाम योगे १२ । २४ ववनाम कण्ठे ०७।२१ तत्र दिनमानं ३२।५७ रात्रिमानम् २८।०३ अहोरात्रयोरैक्यम् ६० । ०० तत्र मेषाक्ष गतांशाः २३ शेषांशाः ७ तत्रोष्टस् ४ । २० तत्र समये वृष्णलग्नोदये एवं पञ्चांगशुद्धौ वरनाम चिरंजीव हीरालालजी राशि कक्ष सूर्यबल २ चन्द्रबल ३ कन्याकी राशि १० गुरुबल १० चंद्रबल ६ सूर्यबल चंद्रबलगुरुबलत्रिबल सहितलत्तादिदशदोषरहितं पाणिग्रहणं शुभम् मङ्गलं ददाति ॥ कन्या के बानसमौड़े ६ पहलावान वैशाख सुदी ६ सौमवार से होगा बर के बान समौड़े ११ पहलावान वैशाखशुद्धि ४ शनिवार से करना ॥इति शुभम् ॥ बुधशनि सौमवार से तेल बान आरम्भ करें ॥

लग्न कुण्डली



लग्न शुद्धिचक्र



वान देखना ।

कोदण्डकण्ठीवृषकम्भपञ्चकन्याधाटे मीनमेषेचा सप्त ।
मृगालियुगमेनव तैल कर्कमन्यत्रतैलंपत्तिनाशनं च॥

टीका—कोदण्ड कहिये धन कण्ठी कहिये सिंह वृष कुम्भ इनके ५ वान होते हैं कन्या घटी कहिये तुल मीन मेष इनके ७ वान होते हैं, मृग कहिये मकर अलि कहिये वृश्चिक मिथुन कर्क इनके ९वान होते हैं और तरह वान नहीं होते । कन्याकीराशि से वान देखे उससे दो वान वर के ज्यादा बढ़ा कर लिखदे जिस दिन वान करे वह दिन देखले कौन से वार को वान करना अच्छा है ॥

तैल चढ़ाने के दिन ।

तैलाभ्यङ्गे रवौतापः सौमे शोभा कुजेमृतिः ।
बुधेधनं गुरौहानिः शुक्रे दुःख शनौ सुखम् ॥

टीका-रविवार को तेल चढ़ावे तो ताप चढ़े सोमवार को अच्छा मङ्गल को कष्ट, बुध को धनका लाभ और गुरु को धन की हानि, शुक्र को दुख, शनि को सुख हो ।

तेल दोष दूर करने का उपाय ।

अर्के पुष्पं गुरौ दूर्वा भूमिपुत्रो रजस्तथा ।
भार्गवे गोमयं दद्यात् तैलाभ्यङ्गानदूषितः ॥

टीका-रविवार को तेल चढ़ावे तो तेल में फूल गेरले, गुरु को दूर्वा, भौमको गंगारज, शुक्रको गोवर, इनके मिलानेसे तेल का दोष दूर हो जाता है इसमें शंसय नहीं है ।

अथ कर्तरी दोष देखना ।

लग्नाच्चंद्रादृद्धयोद्दिस्थःपापखेटो यदा भवेत् ।
कर्तरीवर्जनीयास्तु विवाहोपनयादिषु ॥
न कर्तरी यदादोषः सौम्यः सूर्यादिः जायते ।
शुभग्रहयुतो लग्नः क्रूरस्थो नास्ति कर्तरी ॥

टीका-चन्द्रमा से १२ स्थान तथा दूसरे स्थान जो पाप ग्रह हों तो कर्तरी दोष होता है विवाह यज्ञोपवीत में वर्जित हैं, उन्हीं स्थानों में सौम्य ग्रह हो तो दोष नहीं और क्रूरग्रह हो तो भी दोष नहीं माने ।

अथ होलाष्टक देखना ।

शुक्लाष्टमी समारभ्य फालगुनस्य दिनाष्टकम् ।
पूर्णिमामवर्धिं कृत्वा त्याज्यं होलाष्टकं बुधैः ॥

शतरुद्रा विपाशायामैरावत्यां त्रिपुष्करे ।
होलाष्टकं विवाहादौ त्यज्यमन्यत्र शोभनम् ॥

टीका—फालगुण शुक्ला ८ से पूर्णमासी तक होलाष्टक होते हैं सो शतरुद्रा नदी के तीर और विपासा नदी के तीर और ऐरावत नदीके तीर और पुष्कर नदी के तीर इन देशोंमें विवाहादिक और शुभ काम में चर्जित हैं और देशों में नहीं हैं ।

चन्द्रमा देखना ।

अर्के न्दुश्च वरे श्रेष्ठः कन्यायां न कदाचन ।
वरस्य शुभदो नित्यं कन्यका पतिनाशनम् ॥

टीका—किसी २ आचार्य का ये मत है कि विवाह में १२ चन्द्रमा वर को हों तो श्रेष्ठ है, कन्या को नहीं । वर को शुभ है जो कन्या को १२ चन्द्रमा हो तो उसके पति का नाश करे ।

सासू सुसरे का सुख देखना ।

श्वश्रूः सितोर्कः श्वशुरस्तनुस्तनुर्जामित्रयः स्याद्—
यितोमनः शशि । एतद्वलं सँप्रति भाव्यतां त्रिकस्तेषां
सुखं संप्रवदेङ्गावाहतः ॥

टीका—शुक्र तो सासू और सूर्य सुसरा और लग्न शरीर और सप्तमेश भर्ता चंद्रमा मन विवाह लग्न में जो ग्रह चक्षिष्ठ होगा उसी की तरह सुख होगा जैसे शुक्र बलवानहो तो सासू का सुख रहे और सूर्य बलवान हो तो सुसर का सुख रहे इत्यादि

अथ गौना सुभाना ।

धातृयुग्मं हयोमैत्रं श्रुतियुग्मेकत्रयम् ।
 पुनर्वसुद्वृद्ध्यं पूषा मूलं चायुत्तरात्रयम् ॥
 विषमे वत्सरे मासे मार्गे मेषे च फ़ाल्गुने ।
 मकरे मिथुने मीने लग्ने कन्या तुला धनुः ॥
 भौमार्किवर्जिताः वाराणश्च द्विरागमे ।
 षष्ठी रिक्ता द्वादशी च अमावस्या च वर्जिता ॥
द्विरागमनं चक्रम् ।

रो०	मू०	अश्व०	ज्ञ०	श्र०	०	ये नक्षत्र गौने में शुभ हैं
ध०	ह०	चि०	स्वा०	तीनों	०	ये भी नक्षत्र शुभ हैं
पुष्य	रे०	मू०	उ०३	०	०	ये भी नक्षत्र शुभ हैं
मार्ग	वैशा	फा०	गुन	०	०	ये भी महीने शुभ हैं
१०	३:	१२	६	६	६	ये लग्न शुभ हैं
६	४	१४	६	१२	३०	ये तिथि त्याज्य हैं
मङ्गल	शनि	०	०	०	०	ये वार वर्जित हैं

दोहा—इष्ट घड़ी छः गुनी करे, सूर्य अंश मिलाय।

भाग तीस का देयके गई लग्न मिल जाय ॥

अर्थ—पहिले इष्ट निकाल कर रखले फिर इष्ट की घड़ी को ही का गुणा कर जितने सूर्य के अंश गये हों वे मिलाकर २० का भाग दें। जितना आवे जिस राशि का सूर्य हो उससे गिनते जो लग्न आवे वह बीत गया जानना चाहिये।



अथ

मुहूर्त प्रकरण

तृतीय भाग
चन्द्रमा वास फल देखना ।

१	लद्धमी प्राप्ति
२	मन सन्तोष
३	धन सम्पत्ति
४	कलहागमः
५	ज्ञान वृद्धि
६	उत्तम सम्पत्ति
७	राजसन्मान
८	मृत्युभव
९	धर्म लाभ
१०	मनवांछित फल
११	सर्व लाभ
१२	हानि करते हैं

आद्यः चन्द्रः श्रियं कुर्यात् मन स्तोपं द्वितीयके । तृतीये धन सम्पत्ति चतुर्थे कलहागमम् ॥ पञ्चमे ज्ञानवृद्धिच्च पष्ठेसंपत्ति-रुत्तमाम् । सप्तमे राज सम्मानं मरणम् चाष्ठमेतया ॥ नवमेधर्म लाभं च दशमे मानसेप्तिम् एकादशे सर्वलाभं द्वादशोहानि मेव च ॥

टीका—अब कन्या और वर दोनों को चन्द्रवल कहा है । सो इस चक्र में पंडित जन भली प्रकार से सभ लें ।

गोधूलि मास निर्णय ।

पिंडोभूतोदिनकृति हेमन्ततौ स्यादधास्ते । तपन
समय गोधूलिः । संपूर्णास्ते जलधरमालाकाले
त्रेधायोज्या सकलशुभे कार्यादौ ॥

टीका—हेमन्त काल के ४ महीने में जब सूर्य गोला कार
अस्त समय हो तब गोधूली लग्न होता है । और तपन समयमें
४ मास अधास्त सूर्य के समय गोधूली जानो । जल धर माला
काल अर्थात् वर्षा के ४ मास में सम्पूर्ण सूर्य के अस्त समय में
गोधूली जानो । सब कामोंमें शुभ है ।

जन्म चन्द्रमा देखना ।

जन्मक्षस्थे शशके तु पञ्च कर्मणि वर्जयेत् ।

यात्रा युद्धं गृहर रम्भे विवाहेत्तौरकर्मणि ।

टीका—जन्म के चन्द्रमा में इतने काम बर्जित हैं यात्रा,
युद्ध, विवाह, हजामत बनवाना और नये घरमें प्रवेश करना ।

अथ चन्द्रमा वास फलम् ।

मेषे च सिंहे धनु पूर्वभागे वृषे च कन्या
मकरे च याम्ये । मिथुन तुलाकुम्भ सु पश्चि
मायां कर्कालि मीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥

अर्थ—१ । ५ । ६ । के चन्द्रमा का पूर्व में २ । ६ । १० का
दक्षिण में ३ । ७ । ११ का पश्चिम में ४ । ८ । १२ का उत्तर
दिशा में चन्द्रमा का वास रहता है ।

सन्मुखे अर्थं लाभोय पृष्ठे चन्द्रे धनक्षयः ।

दक्षिणे सुखमम्पत्तिवांमे तु मरणा भवेत् ॥

टीका—सन्मुखके चन्द्रमा में लाभ हो पीठ पीछे के चंद्रमा में धन की हानि, दाहिने चंद्रमा सुख सम्पति करे, बाये चंद्रमा मृत्यु करते हैं ॥

तीनों लोकों में चन्द्रमा वास फलम् ।

तिथिश्च त्रिगुणीकृत्ये एकं च पर मेजयेत् ।

शिवनेत्रैर्हरे द्वागं शेषं चन्द्र विधीयते ॥

टीका—तिथियों को तिगुनी करके उसमें एक और मिलावे शिव नेत्र जो हैं तीन उनका भाग दे फिर चंद्रमा वास देखे ।

एकस्मिन् वसते स्वर्गे युग्मे पाताल मेव च ।

शून्ये हि मृत्युलोके तु चन्द्रवासः प्रकीर्तिः ॥

टीका—एक बचे तो स्वर्गमें वास जानना, दो बचे तो पाताल में, शून्य बचे तो मृत्यु लोक में ।

पाताले चैव चन्द्रे च पञ्च कर्माणि वर्जयेत् ।

तद्वाग कृपवार्नास्ति अन्ननास्ति च मेदनी ॥

यात्रायां कुशलं नास्ति पठने नास्ति अक्षरं ।

टीका—जो पाताल में चन्द्रमा का वास हो तो इतने काम न करे, तालाव घनाना, कुंवा खोदने में, जल नहीं हो, खेती लगाने में अन्न नहीं हो या यात्रा करने में कुशल नहीं हो और पढ़ने में अक्षर नहीं आवे ।

यात्रा कार्यप्रवेशे च गृहारमे च कायेत् ।

कूपादौतु विशेषेण सर्वकार्येषु शिक्षयेत् ॥

टीका—यात्रा में, मकान बनाने में, कूप, बावड़ी खोदने में, चाग लगाने में और जितने शुभदायक काम हैं सब में चन्द्रमा का बल जरूर देखें।

चन्द्रमा रङ्ग वाहन देखना ।

मेषे वृश्चिके सिंहे रक्तकु जरवाहनम् ।

मिथुने युग्मे धनोचैव पीतं तुरगं भवेत् ॥

वृषे तुले कर्कटे च बाहनं वृषभस्मृताम् ।

मकरे कुम्भेकन्यायाँ कृष्णर्ण महिषी वाहनम् ॥

चन्द्रमा रङ्ग वाहन चक्रम्

मेष	वृश्चि	सिंह	लाल रङ्ग	वाहन हाथी
मिथुन	मीन	धन	पीला रङ्ग	घोड़ा सवारी
वृष	तुल	कर्क	श्वेत रङ्ग	बैल सवारी
मकर	कुम्भ	कन्या	काला रङ्ग	मैंसा सवारी

घात चन्द्रमा देखना ।

मेषे आदि वृषे पंच मिथुने नवमस्तथा ।

कक्षे द्व्यरसः सिंहे कन्यायाँ दश वर्जिताः ॥

तुला त्रिणि अलौ सप्त धन वेदा मृगे वसु ।

कुम्भे रुद्रोरविमीने घात चन्द्रः प्रकीर्तिः ॥

अथ घात चन्द्र चक्रम् ।

मे०	वृ०	मि०	कर्क	सिंह	क०	तुल	दृ०	घन	म०	कुम्भ	मीन	चन्द्रमा
१	५	६	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	घात

घात चन्द्रमा वर्जित ।

प्रयाणकाले युद्धे च कृष्णौ वाणिज्यसंग्रहे ।

वादे चैव ग्रहारम्भे वर्जयेत् घातचन्द्रकम् ॥

टीका—यात्रा में युद्ध में खेती में वाणिज में घर बनाने में घात चन्द्रमा वर्जित है ।

घात चन्द्रमा फल ।

रोगे मृत्यु रणे भङ्गो यात्राकाले च वन्धनम् ।

विवाहे विधवा नारी घात चन्द्रफलं स्मृतम् ॥

टीका—घात चन्द्रमा में वीमार हो तो मृत्यु हो युद्ध करे तो भङ्ग हो यात्रा करे तो वन्धन हो । विवाह करे तो विधवा होय यह घात चन्द्रमा का फल है ।

सन्मुख चन्द्रमा फलम् ।

करणभगणदौषं वार संकांतिदोषम् ।

कुतिथि कुलिकदोषं यामयामाद्ददौषम् ॥

कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषम् ।

हरति सकलदोषं चन्द्रमा सन्मुखस्थः ॥

टीका—करण नक्षत्र वार संक्रान्ति तिथि योग यामाद्वार्द्धमङ्गल
शनि राहु रवी इतने दोषों को सन्मुख चन्द्रमा करता है।

पुष्य नक्षत्र फलम् ।

न योगीयोगं न च लग्नीलग्नम् न तारिका चन्द्र
बलं गुरुश्च । न योगिनी राहु नैवलिष्टो कालः
एतानि विघ्नानि हरंति पुष्यः ॥

टीका—योगनी अच्छी न हो, चंद्रमा भी अच्छा नहो, तारा
अच्छा न हो गुरुबल भी अच्छा नहो और चन्द्रबल भी अच्छा
न हो भद्रा, राहु ये भी अच्छे नहों परन्तु पुष्य नक्षत्र उस दिन
हो तो इतने दोषों को दूर करता है।

सिंहो यथा सर्वचतुष्पदाना तथैव पुष्यो बलवानु
द्धनां । चन्द्रेविरुद्धे प्यथगोचरेपि सिद्धयंति
कार्याणि कृतानि पुष्यै ॥

टीका—जैसे सिंह चौपायों में बलवान होता है ऐसे ही
पुष्य नक्षत्र बलवान होता है चन्द्रमा भी विरोधी हो और योचर
भी विरुद्ध होतो पुष्य नक्षत्रमें कार्य नहीं विगड़ता है पुष्य नक्षत्र
का किया काम सिद्ध होता है।

समस्तकम्मैणित्कालपुष्यो दुष्यो विवाहे मद
मूर्च्छितत्वात् । सहस्र पत्रप्रसवे न तस्मादिहोपि
मुक्तौ भुवि लोकसंघेः ॥

टीका—सबही कार्यमें पुष्यनक्षत्र शुभ होते हैं परन्तु विवाहमें अशुभ है क्योंकि ब्रह्मा ने अपनी पुत्री का विवाह पुष्य में ही किया था सो पुत्री को देख कर वीर्य स्वलित हो गया। इस वास्ते ब्रह्मा ने श्राप दे दिया ये चार्ता वहाँ की है जहाँ साठ हजार वाल ऋषि पैदा हुये थे।

सिद्धयोग देखना ।

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरो पूर्णा तिथिङ्गेया सिद्धयोगः प्रकीर्तिताः ॥

सिद्धयोग चक्रम् ।

शु० १-६१-१	बु० २-७-१२	श० ४-८-१४	मौ० ३-८-१३	गु० ५-१०-१५	सिद्धि तिथि
नन्दा	भद्रा	रिक्ता	जया	पूर्णा	योग

मृत्युयोग देखना ।

नन्दा सूर्ये मङ्गले च भद्रा भार्गवचन्द्रयो ।
बुधे जया गुरो रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥

मृत्युयोग चक्रम् ।

र० मं	च० शु०	बु०	ब०	श०
नन्दा १-६-११	भद्रा २-७-१२	जया ३-८-१३	रिक्ता ४-१४-६	पूर्णा ५-१०-१५

पंचक देखना ।

धमिष्ठापंचकेत्याज्यं त्रृण काष्ठादिसंग्रहे ।
त्याज्या दक्षिणादिग्रथात्रा गृहाणांबादनं तथा ।

टीका—धनिष्ठा आधे को आद लेकर, धनिष्ठा, शतमिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, रेवती ये पांच नक्षत्र पंचक के हैं इनमें त्रृण, काष्ठ आदि नहीं ग्रहण करना। दक्षिण की यात्रा नहीं करना घर नहीं छावना छत नहीं गेरना।

शुक्र के इच्छने का फल देखना ।

इसमें कौन काम वजित है शुक्र का अस्त पत्र में लिखा रहता है ।
वापीकूपतङ्ग यज्ञगमनं चौरं प्रतिष्ठाप्रतम् ॥
विद्यामन्दिरकर्णवेधनं महादानं गुरोःसेवनम् ॥
तीर्थस्नानविवाहवेदहवनं मन्त्रोपदेशः शुभः ।
दूरेणैव जिजीविषुः परिहरेदस्ते गुरौ भार्गवे ॥

टीका—धावड़ी, कूवा, तालाब, बाग, यज्ञ, मकान, गवन, चौर, देवालय, मकान की प्रतिष्ठा, कान विधाना और जो महादान, सुवर्ण का दान करना और गुरु सेवा, तीर्थ यात्रा करना, विवाह करना, देवता का हवन करना, नया व्रत करना, मन्दिर बनाना, मुण्डन, जनेऊ, विद्यारम्भ और जो शुभ कार्य हैं, सो शुक्र के और वृहस्पति के इच्छने में नहीं करने चाहिये। जो जीवने की इच्छा करे तो दूर से ही त्यागन करे ।

शुक्र दोष परिहार देखना ।

एवं ग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राजविग्रहे ।

विवाहे तीर्थयात्रायां शुक्रदोषो न विद्यते ॥

टीका—गांव के गांव में या शहर के शहर में, दुर्भिक्ष में राज विग्रह में तीर्थ यात्रा में सन्मुख शुक्र का दोष नहीं मानना चाहिये ।

पितृगृहे चेत्कुचपुष्पसंभवस्त्रीणां न दोषः प्रति
शुक्रसम्भवः । भूमगिरोवत्सवशिष्ठ कश्यपात्रीणां
भरद्वाजमुनेः कुले तथा ॥

टीका—जो पिता के घर स्त्री को कुच पुष्प अर्थात् रजस्वला हो तो शुक्रके अस्त व शुक्र के सन्मुख आने जाने का दोष नहीं है जो स्त्री इन गोत्रोंकी हैं भृगु, अङ्गिरा, वृत्स, वशिष्ठ, कश्यप, अत्री, भरद्वाज, इन ऋषियों के गोत्रवाली को भी आने जाने का दोष नहीं है ।

चीज बेचने खरीदने का मुहूर्त ।

पर्वा विशाखा भरणीषु कृतिका श्लेषासु वै
विक्रयणः शुभदिने । चित्रांतिमः स्वातिशताश्व
वासवे श्रुतौ च वस्तुक्रयणः वरं भवेत् ॥

टीका—तीनों पूर्वा, विशाखा, भरणी, कृतिका, श्लेषा तथा शुभ दिन, शुक्र, गुरु, चन्द्र, बुध इन वार में वस्तु बेचना । चित्रा, रेती स्वाति, शतभिषा, अश्विनि, धनिष्ठा, श्रवण इन नक्षत्रों में और वृहस्पति, शुक्र, सोमवार बुध इन वारों में खरीदना शुभ है ।

अथ चन्द्र ग्रहण देखना ।

भानोः पंचदशे ऋत्ते चन्द्रमा यदि तिष्ठति ।
पौर्णमास्यां निशाशेषे चन्द्रग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा १५ वें नक्षत्र पर हो तो पूर्णमासी को चन्द्रमा ग्रहण होता है और केतु चन्द्रमा एक राशि पर हो तो चन्द्र ग्रहण होता है ।

सूर्य ग्रहण देखना ।

माघो न ग्रस्तनक्षत्रात् षोडशं यदि सूर्यम् ।

अमावस्यादिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—मावस के दिन सूर्य चन्द्रमा एक राशि पर हों और मावस के दिन सूर्य नक्षत्र और दिन नक्षत्र एक हो तो पङ्कवाकी संधि में सूर्य ग्रहण होता है । सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनिये उसमें से ११ निकाल दे शेष १६ नक्षत्र बचे तो निश्चय वो ही सूर्य ग्रहण है ।

दोहा—चन्दा से रवि सातवें, रवि राहु एकन्त ।

पूनों में पङ्कवा मिले, निश्चय ग्रहण पङ्कन्त ॥

रवि से राहु सातवें, शशि रवि हो एकन्त ।

मावसमें पङ्कवा मिले, निश्चय ग्रहण पङ्कन्त ॥

ग्रहण का सूतक देखना ।

सूर्यग्रहेतु नाशनीयात् पूर्वं याम चतुष्टयम् ।
चन्द्रग्रहेतु यामस्त्रीन् बालबृद्धाऽतुरैर्बिना ॥१॥

टीका—सूर्य ग्रहण से चार पहर पहिले और चंद्र ग्रहण से तीन पहर पहिले सूतक लग जाता है उस समय धालक वृद्ध और रोगी इनके अतिरिक्त और को मोजन नहीं करना चाहिये ।

चन्द्रमा का निकलना; छिपना

तिथि गुणितं रजनी परिमानं यम रहितं सित
कृष्ण विमिश्रम् । वाण शशाँकै विभाजित लब्धं
प्रति दिवस चन्द्रोदय यस्तम् ॥

टीका—जिस तिथि को चंद्रमा का निकलना व छिपना देखना हो उस तिथि को जितनी रात्रि हो उसे उसी तिथि के अङ्कों से गुणा करे जो गुणनफल आवे उसमें कृष्ण पक्ष में २ जमा करदे और शुक्ल पक्ष में २ घटादे फिर उसे १५ से भाग दे जो लिंग मिले कृष्ण पक्ष में उतनी रात्रि गये चंद्रमा निकलेगा और शुक्ल पक्ष में उतनी रात्रि गये छिपेगा ।

शुभ कर्मों में सूतक पातक देखना

एकविंशति यज्ञेषु विवाहे दश वासरान् ।

श्राद्धे पाक परिकृया न दोषे मनुव्रवीत् ॥

टीका—यज्ञ में २१ दिन पहिले, विवाह में दस दिन पहले और श्राद्धमें पक्वान तैयार हो जाने पर कोई दोष नहीं लगता यरन्तु घर के मनुष्य अलग रहें ।

गृहण कौनसी राशि को गहता है ग्रासस्तृतीयोष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभदः

**सुनित्यं । त्रिकोणगो मध्यफलचन्द्रभात्योक्तः
सुनिष्टश्च बुधैस्तु शेषाः ।**

टीका—जिस राशि पै सूर्यहो उससे अपनी राशि तक गिने जो ३,८, ४, ११, उत्तम ५, ६, मध्यम १२, ७, १०, १, २, ६ के अधम जैसी राशि हो वैसा फल जानो, ग्रहण होने के दिन से ३ दिन पहिले के और ३ दिन पीछेके शुक्र इवने के भी ३ दिन पहिले के और उदय से ३ दिन पीछेके सब कार्यमें वर्जित हैं ।

**द्विपंचमे नवमे शुक्ले श्रेष्ठश्चन्द्रोहि उच्यते
अष्टमे द्वादशे कृष्णे चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते ॥**

टीका—किसी किसी आचार्यका येभी मत है कि २,५,६, शुक्लपञ्च के चन्द्रमा हैं । ४,८,१२, कृष्ण पञ्च के चन्द्रमा उत्तम हैं ।

ओषधि करने का मुहूर्त

**पौष्णद्वये चादितिभद्रये चहस्तत्रये च श्रवणत्रयेच ।
मैत्रेच मूलेच मृगे च शस्तंभैषज्यकर्म प्रवदन्तिसन्तः ॥**

टीका—रे, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, ह, चि, स्वा, श्र, ध, श, ऽ, त्रु, मृ०, मृ०, इन नक्षत्रों में द्वार्ह करने से जल्दी रोग दूर होता है ।

घात प्रकार देखना

घाततिथिर्घातवारं घातनक्षत्रलग्नकम् ।

यात्रायाँ वर्जयेत् प्राज्ञैरन्यकर्मसुशोभितम् ॥

टीका—घात तिथि, घात वार घात नक्षत्र घात लग्न घात चन्द्रमा इनको यात्रा में वर्जित करदे और कामोंमें शुभ हैं ।

यात्रा सुहृत्त देखना ।

यात्रायां दक्षिणे राहुर्योगिनीवामतः शुभौ ।

प्रष्ठतो द्वयमाख्यातम् चन्द्रमाः संमुखे शुभः ॥

टीका—दाहिनी तर्फ राहु, योगिनी वाये और ये दोनों पीठ पीछे चन्द्रमा सम्मुख ये शुभदायक हैं ।

सर्वदिग्गमने हस्तः पूषाश्वौ श्रवणो मृगः ।

सर्वसिद्धिः करः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥

टीका—अब सर्व दिशाओं की यात्रा के नक्त्र कहते हैं। ह०, रे०, अ०, श०, मू०, पृष्य ये नक्त्र सर्व सुख देने वाले हैं और अधिक शुभ हैं जैसे कि विद्या विषय वृहस्पति शुभ है इनके अलावा और नक्त्र वर्जित हैं ।

अथ हवन करने का सुहृत्त ।

सैका तिथिर्वरियुता कुतासाः शेषेगुणेऽभ्रेभुवि
वन्हिवासः । सौख्याय होमः शशियुग्म शेषे
प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥

टीका—तिथि, बार को एक जगह करके एक और मिलावे और ४का भागदे, ३ या शून्य बचे तो अग्निका वासा पृथ्वी में होता है सुख देने वाला है औ १२ बचे तो अग्नि का वासा पाताल में होता है प्राण और धनका नाश हो ऐसे क्रम से जानना

अथ ग्रह के मुख में आहुति जाना ।

तरणिविद्यभृगु भास्करि चन्द्रमाः कुजसुरे
ज्यविद्युन्तुदकेतवः रविभतोदिनभङ्गणयेत्तथा
प्रतिखगं तृतीयं न्यसेत ॥

टीका—सूर्यके नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र तक गिने जिस दिन हवन करना हो, तीन २ नक्षत्र पर एक २ ग्रह को बाटे जो शुभ ग्रह के मुख में आहुती जाय तो शुभ और पाप ग्रह के मुख में जाय तो अशुभ जानना । वह क्रम यह है कि ३ नक्षत्र तो सूर्य के, ३ बुध के, ३ शुक्र के, ३ शनि के ३ चन्द्रमाके, ३ मङ्गल के, ३ वृहस्पति के ३ राहु के ३ केतु के ॥

योगिनी देखना ।

प्रतिपत्सु नैवम्यां च पूर्वस्याँ दिशि योगिनी ।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता ॥
त्रयोदश्याँ च पंचम्याँ दक्षिणस्याँ शिवप्रियाः ।
द्वादश्यां च चतुर्थां च नैऋतकौणगामनी ॥
चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमायां च योगिनी ।
पूर्णिमायां च सप्तम्यां वांयुकोणे तु पार्वती ॥
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा भवेत् ।
ईशान्यां दिशि चाष्टम्यां योगिनी समुदाहृता ॥

टीका—पड़वा और नवमी को योगिनी पूर्व में वास करती हैं। अग्निकोण में ३।१। दक्षिण में ५।१३ नैऋत्य में १२ ४ पश्चिम में १४।६ वायव्य में १५।७ उत्तर में १०।२ ईशान में ३।०।८ ऐसे योगिनी वास कहिये।

योगिनी फल ।

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी ।
 दक्षिणे धनहंत्री च समुखे मरणप्रदा ॥ मासस्य
 प्रतिपत् श्रेष्ठा द्वितायाकामकारिणी॥आरोग्यदा
 तृतीया च चतुर्थी कलहप्रदा । पंचमी च
 श्रियायुक्ता षष्ठी कलहकारिणी । भक्षपान
 समायुक्ता सप्तमी सुखदा सदा । अष्टमी
 व्याधिदा नित्यं नवमी मृत्युदा स्मृता । दशमी
 भूरिलाभास्याच्चैकादशी च हेमदा । द्वादशी
 प्राणसन्देहो सर्वसिद्धां त्रयोदशी । शुक्ला
 वा यदि वा कृष्णा वर्जनीया चतुर्दशी । पौर्णि
 मायाममायां च प्रस्थानं नैव कारयेत् । तिथि
 क्षये च मासान्ते ग्रहणान्ते दिनत्रयम् ।

टीका—यात्रा में बांये योगिनी सुखदायक हैं पीछे की मनो कामना देने वाली है। दाहिने हानिकारक है। सन्मुख की मृत्यु करती है। महीने के शुरूकी पड़वा श्रेष्ठ है। २ काम काज में श्रेष्ठ है। ३ आरोग्य प्रदा। ४ क्लेश देने वाली। ५ लक्ष्मी

प्रद । दक्षलाहप्रिय । ७भोजनप्रद । ८व्याधिप्रद । ९मृत्युप्रद ।
 १० लाभप्रद । ११ स्वर्गप्रद । १२प्राणसन्देह । १३ सर्व सिद्धी
 प्रद । १४ अवश्य त्याज्य है । १५ । ३० और तिथि घटने
 के दिन मासान्त में कहीं बाहर गांव को भूल के भी न जावे ।
 ग्रहण के अन्त के तीन दिन त्याग के जाना चाहिये ।

अथ योगिनी चक्रम् ।

इ०	पूर्व	आ०
८३०	१६	३११
८०	२१०	योगी
१५७	६१४	४१२
वा०	प०	नै०

काल विचार ।

आदित्यउत्तरे कालं सौमे वायव्यमेव च ।
 भौमे च पश्चिमे कालं बुधे नैऋतमेव च ॥
 गुरुश्च दक्षिणौ कालं शुक्रो हानिस्तथैव च ।
 शनौ पूर्वे तथा कालं एवं कालाः प्रकीर्तिताः ॥

काल चक्र विचार ।

२०	च०	म०	बु०	बृ०	श०	पूर्व
उत्तर	वायव्य	पश्चिम	नैऋत	दक्षिण	अन्ति	

इन २ बारों में कालका वासा, इन २ दिशा में रहता है
इनमें कहीं को न जाय ।

यात्रावार फलम् ।

ताम्बूलं रविवारे च सौमे ओदनमेव च ।
भौमे धात्रिफलं भद्रं बुधे मिष्टान्न भोजनम् ॥
गुरो तु दधिसंयुक्तं शुक्रे तु तीक्ष्णमेव च ।
आमिषं शनिवारे तु कृत्वा यात्रा ब्रजेन्नरः ॥

यात्रावार चक्रम् ।

रविवार	चन्द्रवार	मङ्गल	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
पान चावल	भात चावल	आंवला	मीठा	दही	चरपरा	उड्ड

जिस वारमें यात्राको जाय यदि यह चीज खाकर जायतो शुभ है

दिशाशूल परिहार ।

सूर्ये वारे गृतं पीत्वा गच्छेत्सौमे पयस्तथा ।
गुडमंगलवारे च बुधवारे तिलानपि ॥
गुरुवारे दधिङ्गेयं शुक्रवारे यवानपि ।
माषान् भुक्त्वा शनिवारे शूलदोषौ पर्शातिये ॥
टीका—रविवार को जाय तो वी खाकर जाय । चन्द्र को दूध
मंगल को गुड, बुध को तिल, गुरु को दही, शुक्र को जौ
शनिश्चर को उड्ड ये खाकर यात्रा करे तो दिशाशूल का दोष
नहीं होता ।

अथ राहु विचार ।

रविवारे च नैऋत्यां सोमे उत्तरमेव च ।
 आग्नेयां मङ्गलं चैव बुधे पश्चिममेव च ॥
 गुरौ ईशानकं प्रोक्तं शुक्रे दक्षिणमेव च ।
 शनौ वायव्यकोणेषु एवं राहुः प्रकीर्तिः ॥

राहुचक्र विचार ।

रविवार	चन्द्रवार	मङ्गल	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
नैऋत	उत्तर	आग्नि	पश्चिम	ईशान	दक्षिण	वायव्य

रवि विचार ।

यामे युग्मे च रात्रो च यामे पूर्वादिगोरविः ।

यात्रास्मिन्दक्षिणे वामे प्रवेशो पृष्ठके द्वयम् ॥

टीका—पहर रात्री रहेसे पहर दिन चढे तक सूर्य नारायण पूर्व में बास करते हैं । फिर दो पहर दक्षिण में । फिर एक पहर दिन रहे से एक पहर रात्री गये पश्चिम में । फिर २ पहर गये उत्तर में । स्त्रे यात्रा विषय दाहने वाये शुभ है । वर प्रवेश में सत्मुख और पीठ पीछे शुभ है ।

अथ गर्भाधान मुहूर्त ।

शुभे त्रिकोणो केन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभके ।
 पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्माषु रात्रिषु ॥

टीका—जो त्रिकोण ५ । ६ केन्द्र १ । ४ । ७ । १० इन स्थानों में सौम्य ग्रह हों और ३।८।११ इन में पाप ग्रह हों तो ऐसे लग्न में और रजोधर्म से अर्थात् । ६ = । १० १२ । १४ । १६ युग्मरात्रि में पुत्र की इच्छा वाला स्त्री प्रसङ्ग करे ॥

नाम धरने का मुहूर्त ।

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रये मैत्र द्वये मृगे ।

मूलोत्तराधनिष्ठास्युः द्वादशौ कादशो दिने ॥

अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बुधशशांकयौः ।

भानौ गुरौ स्थिरे लग्नेवालनामकृतं शुभम् ॥

टीका—पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वांति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मृगसिर, मूल, उत्तरा तीनों, धनिष्ठा ये नक्षत्र और ११ । १२ दिन बुध चंद्रमा रवि० गुरु इन चारों में और २।५।८।११ इन लग्नों में वालक का नाम धरिये ॥

प्रसूतिस्नान मुहूर्त ।

रोहिण्युत्तरेवत्वो मूर्ल्यखात्यनुराधयोः ।

धनिष्ठा च त्रयः पूर्वाज्येष्ठायां मृगशीर्षके ॥

एतास्त्याज्याः सदा भानौ प्रसूतिस्नानकोविदैः ॥

वारे भोमार्कयोः जीवे स्नानमुक्तं सदैव हि ॥

टीका—रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाति, अनुराधा धनिष्ठा, तीनों पूर्वा, ज्ये०, मृ० ये चौदह नक्षत्र त्याग के जितने और नक्षत्र रहें सो लीजे और मङ्गल गुरु० रवि० ये वार

प्रस्तुति स्नान के लिये शुभ हैं ६ । = । १२ । ४ । ६ । १४ ये तिथी न हों ॥

कुर्वा पूजने का मुहूर्त ।

मूलादितो द्वयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः ।

जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमंदार्कभूमिजाः ॥

टीका—मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, मृगशिर, हस्त, येनक्षत्र शुभ हैं । शुक्र, शनि, रवि, भौमयेवार त्यागके प्रस्तुति को कूप जलाशय पूजन उत्तम हैं और शुभ तिथी होनी चाहिये ॥

स्त्री नवीन वस्त्र धारणम् ।

हस्तादिपंचकेऽश्विन्याँ धनिष्ठायाँ च रेवती ।

गुरा॒ शुक्रे॑ बुधे॑ वारे॑ धार्याँ स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥

टीका—हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, इन्द्रिया, अश्विनी धनिष्ठा, रेवती और गुरु शुक्र, बुध, इन वारों में हियों को नये कपड़े पहनावे ।

पुरुष नवीन वस्त्र धारणम् ।

लग्ने मीने च कन्यायाँ मिथुने च वृषःशुभः ।

पूषा पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ॥

टीका—मीन, कन्या, मिथुन, वृष, इन लग्नों में रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में पुरुषों को नवीन वस्त्र पहरावे तो शुभ है ।

नवान्न भोजन व वस्त्र का मुहूर्त ।

नवान्नभोजनं ग्राह्यं वस्त्रे प्राक्तमशेषतः ।
वाराधिकौ सूर्यभौमौ नक्षत्रं श्रवणो मृगः ॥

टीका—नवीन अन्न का भोजन और नवीन वस्त्रधारणकरने के लिए मङ्गल रवि ये वार और श्रवण, मृगशिर यह नक्षत्र उत्तम हैं ।

अन्नप्राशन मुहूर्त ।

आद्यान्नप्राशने पूर्वा सर्पद्री वरुणोयमः ।
नक्षत्राणि परित्यज्य वारे भौमार्क नन्दनौ ॥
द्वादशी सप्तमी रिक्ता पर्वनन्दास्तु वर्जिताः ।
लग्नेषु च भषोग्राह्यो वृषःकन्या च मन्मथः ॥
शुक्ले पद्मे शुभे योगे संग्राह्यः शुभचन्द्रमाः ।
मासे षष्ठाष्टमे पुंसां स्त्रियोमासि च पञ्चमे ॥

अब वालकके अन्न प्राशन विषय इतने वर्जित है—तीनोंपूर्वा रखेपा, आद्रा, शतभिषा, भरणी रेवती, । ये नक्षत्र और भौम शनि ये वार १२ । ७ । ४ । ६ । १४ । ३० । १५ । १६ । ११ ये तिथि ये सब वर्जित हैं और मीन, वृष, मिथुन, कन्या ये लग्न शुभ हैं और शुक्लपक्ष विषय उत्तम शुभ योग में कीजेओर शुभ चन्द्रमा हों छटा और आठवां मास पत्रके अन्न प्राशनमें श्रेष्ठ हैं और कन्या को पाँचवे मास में खिलावें ।

अथ चूडा कम् मुहूत् ।

पुनर्वसुद्वयं ज्येष्ठा मृगश्च श्रवणद्वयम् ।

हस्तत्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ॥

लग्नं गोस्त्रीधनं कुंभं मकरो मन्मथस्तथा ।

सोम्यवारे शुभे योगे चूडाकम् स्मृतं बुधैः ॥

टीका—पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिर, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त चित्रा, स्वाति, रेवती, ये नक्षत्र और शुक्लपक्ष उत्तरायण सूर्य और बृष कर्क, कुम्भ, धन, मकर, मीन ये लग्न, चन्द्र, बुध, शुक्र ये बार शुभ योग सर्वाङ्ग श्रेष्ठ हैं जन्म मास और रिक्ता तिथि ये चूडाकम् और भूषण धारण में वर्जित हैं ।

अथ मुँडन मुहूत् ।

हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वाश्च मृगपञ्चमे ।

मूले पौष्णे च नक्षत्रे बुधाऽके गुरुशुक्रयोः ॥

टीका—हस्त से तीन ह० चि० स्वा०, आ० ध० पू० तीनों मृगशिर आ० पुन० पुष्य श्ले० मू० रे० ये नक्षत्र और रवि, बुध, शुक्र गुरु ये बार शुभदायक हैं ।

विद्यारम्भ मुहूत् ।

देवोत्थाने मीने चापे लग्ने वर्षे च चमे ।

विद्यारम्भोत्र बर्ज्यश्च षष्ठन ध्यायरिक्तकाः ॥

रिक्तायां च अमावस्या प्रतिपञ्च विवर्जयेत् ।

बुधेन्दु वासरे मूर्खः शनिर्भोगो मृतपदः ॥

विद्यारम्भे गुरु शेषो मध्यमौ मृगु भास्करौ ।
बुधे सौमे च विद्यायाँ शनिभौमौ परित्यजेत् ॥

टीका—देवोत्थान कहिये कार्तिक शुक्ला ११ से आषाढ़ शुक्ला १२ तक और मीन, धन, ये लग्न पाँचवे वर्ष में विद्या पढ़ना आरम्भ करना चाहिए ॥ ६ ॥ अमावस्या ॥१॥६॥१४॥४ ये तिथि वर्जित हैं और बुध चन्द्रमा में विद्या आरम्भ करे तो मूर्ख हो, गुरुवार श्रेष्ठ है शुक्र रवि मध्यम हैं बुध सौम उप विद्याको करे हैं, शनि, भौम सबत्र त्याज्य है । ह० चि०स्वा०श्र०घ० तीनों पूर्वा अ०मृ०आ० शु० पृ० अश्ले० मू० रे० ये नक्षत्र शुभ हैं ।

अथ यज्ञोपवीत मुहूर्त ।

पूर्वाषाढाश्विनी हस्तत्रये च श्रवणत्रये ।
ज्येष्ठा भगे मृगे पुष्ये रेवत्याँ चोत्तरायणे ॥
द्विनायायाँ तृतीयायाँ पंचम्याँ दशमीत्रये ।
सूर्ये उके गुरो चन्द्रे बुधे पक्षे तथासिते ॥
लग्ने वृषे धनुः सिंहे कन्या मिथुनयोरपि ।
ब्रतवंधे शुमे योगे ब्रह्मक्षत्रिविशापितेः ॥

टीका—पूर्वाषाढ़ अ० ह० चि० स्वा० श्र० घ० शत० ज्ये० पूर्वाषा० मृ० पुष्य रे० उत्तरायण स्वर्य । २ । ३ । ५ । १० । ११ । १२ । १३ । ये तिथि रवि शु० गु० बुध, चन्द्रमा ये वार शुक्ल पक्ष और वृष, धन सिंह, कन्या, मिथुन ये लग्न और शुभ योग में जनेऊ ले इनमें ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, तीन जाति को कहा है (वेद में) तीनों जाति के जुदे २ भेद कहे हैं ।

ब्राह्मण को गर्भ से पाँचवें वर्ष में या आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये इसी प्रकार क्षत्रिय को छठे व चत्त्वारहवें वर्ष में और वैश्यों को आठवें व बारहवें वर्ष में यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये । अगर किसी कारण से यह समय व्यतीत हो जाय तो फिर १६वें वर्ष में ब्राह्मण को और २२वें वर्ष में क्षत्री को २४वें वर्ष में वैश्य को यज्ञोपवीत लेना लिखा है । इन वर्षों के बीत जाने पर गायत्री का अधिकारी नहीं रहता है ।

कर्णा छेदन मुहूर्त ।

श्रुतित्रये दितिङ्नद्वे मैत्रे हस्तत्रयोत्तरे ।
भग्ने विधि युगे मूले पूषाश्वे सौम्यवासरे ।
द्विस्वभावे धटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते ।
चैत्रपौषी हरिस्वापं वर्षं च युगलं त्यजेत् ॥

टीका—श्र०ध०श० पुष्य पु० अनु० ह० तीनों उ० पूर्वी फाल्गुणी रो० मृ० मू० रे० अ० ये नक्षत्र और सौमवार चं० द्व० शु० शु० ये० वार शुभ हैं और मिथुन, धन, कन्या, मीन कुम्भ ये लग्न शुभ हैं वैशाख फाल्गुण मार्गशिर माघ ज्येष्ठ आषाढ़ ये महीने शुभ हैं और १ । ३ । ५ । ७ ये वर्ष शुभ हैं चैत्र पौष आषाढ़ शुक्ला ११ से कार्तिक शुक्ला ११ तक और सम वर्ष २ । ४ । ६ । ८ त्याज्य हैं । जन्म दिन से १२ या १६ वें दिन अथवा ६, ७, ८ महीने विषम वर्ष अति शुभ हैं ।

नींव धरने का मुहूर्त ।

पूर्वाषाढ़ा दितिङ्नद्वै विधि युग्मे करत्रयम् ।

उत्तराफाल्गुनी हस्तत्रये मूले च रेवती ॥
 मैत्राशिवनी च लग्ननानि सिंहकन्याधटोवृषः ।
 मिथुनोमक्षरो ग्राह्यो वास्तुकर्मणि कोविदैः ॥
 श्रावणश्चाथ वैशाखः कार्तिकफाल्गुनस्तथा ।
 मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तुकर्मणि शस्यते ॥
 वज्रव्याधातशूलानि व्यतीप्रातश्च गण्डके ।
 विष्णुम्भे परिघोवज्ञो वारे भौमे च भास्करे ॥

टीका—पूर्वायाह पुनर्वसु, पुष्य, मुगशिर, श्रवण, धनिष्ठा,
 शतभिषा, उत्तरा, फाल्गुण, हस्त, चित्रा, स्वात, मूल, रेवती,
 अनुराधा, अश्विनी ये सब नक्षत्र सिंह, कन्या, कुम्भ, वृष, मिथुन
 मकर ये लग्न चन्द्रमा, बुध, गुरु, शुक्र ये वार, श्रावण, वैशाख
 कार्तिक, फाल्गुणी, मार्गशिर ये महीने सब शुभ हैं । वज्र व्याधोत्
 शुक्ल, व्याधिपात, गंड, विष्णुमः, परिघ, ये योग और मङ्गल
 रवि ये वार त्याग कर घर की नींव धरिये ।

वापी कूप देव प्रतिष्ठा मुहूर्त ।

आद्रा शतभिषा इश्लेषा विशाखा भरणीद्वयम् ।
 त्याज्या च द्वादशीरित्का षष्ठी चेंदुक्षयोऽष्टमी ॥
 प्रति पञ्चतिथिर्वारौ त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ॥
 देवमूर्तिप्रतिष्ठायां स्थिरे लग्नोत्तरायणे ॥

टीका—वावडी, कृष्ण, तालाब, देवता, इनकी प्रतिष्ठा देखना
 आद्रा, शतभिषा, इश्लेषा विशाखा, भरणी, कृतिका,

ये नक्षत्र १ । १२ । ३० । ८ । ६ । ४ । ९ । १४ ये तिथि
और शनि मङ्गल ये वार त्याग दे शेष शुभ हैं । वृष, सिंह,
वृश्चिक कुम्भ ये लग्न शुभ हैं उत्तरायण सूर्य हों । रवि, चन्द्रमा
बुध, गुरु, शुक्र ये वार भी शुभ हैं ।

गृह प्रवेश मुहूर्त ।

विशाखा भरणी हेया श्लेषाख्यां च मघातथा ।
अमावस्या च रिक्ता च वारे भौमे रवौ तथा ॥
गृहप्रवेशो वैशाखे श्रावणे फाल्गुने तथा ।
आश्विनेच स्थिरेलग्नेग्राह्यः पक्षोबुधैः सितः ॥

दीक्षा-विशाखा भरणी, श्लेषा, मघा ये नक्षत्र ३० । ४ ।
९ । १४ ये तिथि, भौम, रवि ये वार गृह प्रवेश विषय वर्जित हैं । वैशाख और श्रावण, फाल्गुन, आश्विन ये मास वृष, सिंह,
वृश्चिक, कुम्भ ये स्थिर लग्न और शुक्ल पक्ष, चन्द्रमा, शुक्र गुरु, बुध, शनि ये वार इनमें गृहे प्रवेश उत्तम हैं ।

अथ क्षौर कर्म मुहूर्त ।

पुनर्वसुद्वयं क्षौरे श्रुतियुग्मं करत्रयम् ।
रेवतीद्वितयं ज्येष्ठा मृगशीर्षं च गृह्यते ॥
क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी ।
उत्तरा कुतिका वारा भानुभौमशनैश्चराः ॥
रिक्ताष्ट्यष्टमी हेया क्षौरे चन्द्रक्षयानिशि ।
संध्याविष्टश्च गंडांते भोजनांते च गोगृहे ॥

टीका—पुनर्वं सु, पुष्प, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाति, रेवती अश्विनी ज्येष्ठा मृगशिर ये नक्षत्र शुभ हैं। और बाकी प्राणहर्ता हैं, तिन्हें त्यागके मधा, अनुराधा, रोहिणी उच्चरा तीनों कृतिका और भौम, शनि, रवि ये बार ४, ६, ८, १४। ३० ये तिथि रात्रि और संध्या के समय अरु गँडांत नाम मूल आदि नक्षत्र और भद्रा में भोजन करके और गौशाला में भी ज्ञोर कर्म न करे।

अथ हल चलाने का मुहूर्त ।

अनुराधा चतुष्कं च मधादितियुगे करे ।
 स्वातिश्रुति विधिद्वन्दे रेवत्यामुत्तरात्रयम् ॥
 गोस्त्री भषे हलंकार्यमहेयाः सूर्यःशनिःकुञ्जः ।
 षष्ठी रिक्ता द्वादशी च द्वितीयाद्वय पर्व च ॥
 त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिपंच त्रिभिःपंचत्रिभिद्वयम् ।
 सूर्यभादिनैभं यावद्वानिवृद्धिर्हले क्रमात् ॥

टीका—अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, मधा पुनर्वं सु पुष्प, हस्त, स्वाती, श्रवण, रोहिणी, मृगशिर, रेवती, तीनों उच्चरा ये नक्षत्र हल चलाने को शुभ हैं वृष, कन्या, मीन, ये लग्न लीजे और रवि, शनि, मङ्गल ये बार ६। ४। १४। ६। १२। २। १५। ३० ये तिथि त्याज्य हैं और सूर्यके नक्षत्र से उस दिनके नक्षत्र बक गिनिए सो इस क्रम से हल चक्रमें समझलीजे प्रथमतीनमें हानि फिर दूसरे तीन में वृद्धि हानि इस प्रकार से हल चक्र से समझ लीजे।

हल चक्र ।

अनु०	ज्यै०	मू०	पू०	म०	पु०	पु०	ह०	हल
स्वा०	श्र०	रो०	मृ०	उ०	३	रे०	नक्षत्र	शु०
२	६	१२	लग्न	उत्तम	चं०	बु०	बृ०	३—
शु०	वार	१३	५	आष	१०	११	१३	३—
३	३	३	५	३	५	३	२	५—
हा०	बृ०	हा०	बृ०	हा०	बृ०	हा०	बृ०	२५

सब चीजों का मुहूर्त ।

तिथि वारं च नक्षत्रं नामाच्चरसमन्वितम् ।

द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं रससप्तष्टभाजितम् ॥

आदि शूल्ये भवेद्वानि मध्य शूल्ये रिपोर्भयम् ।

अन्त्यशूल्ये भयेवेन्मृत्युः सर्वांके विजयी भवेत् ॥

टीका—तिथि वार नक्षत्र और नाम के अन्दर सबको जोड़े फिर उनको दूने करके ६ का भाग दे फिर तिगुणा करके सातका भाग दे फिर उनको चौगुना करके आठ का भाग दीजिये जो प्रथम जगहमें शूल्य आवे तो हानि हो । मध्यमें शूल्यहोतोशत्रु भय अन्त में शूल्य हो तो मृत्यु हो और जो तीनों में शेष शूल्य बचे तो विजय होय ।

अथ स्वर विचार देखना ।

शशिप्रवाहे गमनादिशिस्तं सूर्यप्रवाहेनहि किविन्नापि ।

प्रष्टुर्जयः स्याद्वहुमानभागे रिक्ते च भागेविफलं समस्तम्
दक्षिणे दुःखदःशुक्रः सन्मुखे हन्ति लोचनम् ।
वामे पृष्ठे शुभो नित्यं रोधयेच्चास्तगः शुभम् ॥

टीका—जो चन्द्र स्वर कहिए वांया चले तो यात्रा कीजे और
श्वर्य स्वर कहिए दाहिना चले तो शुभ है और गणित कहिये
वराने बाले का पृच्छक कहिये पूछने का एक स्वर चलता होय
तो सर्व काम सिद्ध हो जो सुष्मणा कहिए एक का सीधा और
दूसरे का उल्टा चले तो सब काम निष्फल हों दक्षिण से यात्रा में
जो शुक्र दाहिने हो तो दुख हो, सन्मुख नेत्र पीड़ा करे और
बाँये या पीछे पढ़े तो शुभ है ।

पशु खरोदने व बेचने का मुहूर्त ।

पुष्यं भाद्रपदायुम्मं मैत्रं श्रवणमश्विनिः ।
हस्तोत्तरामृगस्वातिस्तथा श्लेषा च रेवती ॥
आह्याणिभानि चैतानि क्रयबिक्रयणे बुधैः ।
चन्द्रभार्गवं जीवे च वारे शकुनमुत्तमम् ॥

टीका—पुष्य, पूर्वी, भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, अनुराधा, श्रवण
अश्विनी, हस्त, उत्तरा, तीजों मृगशिर, स्वात, श्लेषा, रेवती ये
नक्षत्र खरोदने, बेचने में शुभ हैं और चन्द्रमा, शुक्र, गुरु ये धार
और शुभ शकुन देखिये गा तब गाय भैंस धोड़ादि और पशु
खींबिए और बेचिये ।

मन्त्र उपदेश करने का मुहूर्त ।

मन्त्रस्वीकरणं चैवे बहुदुःखफलप्रदम् ।

वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ब्रुवम् ॥
आषाढे बन्धुनाशः स्यात् ३ विषेतु शुभावहम् ।
प्रजाहानि भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने ॥

टीका—अब मंत्र दीक्षा लेने का शुभाशुभ कहते हैं। जो चैत्र मास में दीक्षा लेय तो बहुत दुख पावे वैशाख में लेवे तो रत्न लाभ, ज्येष्ठ में लेवे तो मृत्यु हो, आषाढ में भाई का नाश आवण में लेवे तो शुभ हो, भाद्रपद में लेवे तो सन्तान का नाश और आश्विन मास में मन्त्र दीक्षा लेवे तो सब सुख को प्राप्त हो ।

कार्तिके वृद्धिः स्यान्मार्गशीषे शुभप्रदः ।
पौषेतज्ज्ञानहानिः स्यान्माधे मेधाविवर्धनम् ॥
फालगुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्तितम् ।
दीक्षाकर्मफलं मासेश्वेतेषु च शुभाशुभम् ॥

टीका—कार्तिक मास में मंत्र दीक्षा ले तो घन की वृद्धि हो मार्गशिर में लेवे तो शुभ हो पौष में ज्ञान हानि हो माध में ज्ञान की वृद्धि है फालगुण में मन्त्र लेवे तो सौभाग्य और शश बढ़े ।

गांव में या नगर में रहने का मुहूर्त ।
ग्रामनाम्ना भवेहृक्षो तदाद्याः सप्त मस्तके ।
पृष्ठे सप्त हृदे सप्त पादयोः सप्त तारकः ॥
मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः ।
हृदये सुखसम्पत्तिः पादे पर्यटनं फलम् ॥

टीका—जिस गांव में या शहर में बसना चाहे उस गांव के

नामके अक्षर से नक्षत्र कर लीजे । जो नक्षत्र गांव का पावे उसके पहिले प्रथम नक्षत्र पर्यन्त अद्वाईस जानिये उसमें से गांव का नक्षत्र आदि लेके सात नक्षत्र गांव के माथे पर दीजे और ७ पीठ पर, ७ हृदय पर, ७ पांवों पर, तब अपने नक्षत्रसे देखिये, जो माथे पर पड़े तो धंश में धनी होय, सन्मान पावे । पीठ पर हानि, और हृदय पर सुख सम्पत्ति, पांवों में गिरे तो पर्यटन करावे ।

अथ रोगी स्नान मुहूत् ।

मधोत्तराब्रह्म भुजङ्ग पोष्णौः पुनर्वसुस्वाति विहीन
भेषु । रिक्ताभिः हिने हिमागो च शुक्रे बुधेवारः
स्नानमरोगजन्तोः ।

टीका—मधा, उचरा तीरों, राहिणी, श्लेषा रेवती, पुनर्वसु स्वाति, इनका त्याग करना रिक्ता तिथि ४ । ६ । १४ इनको त्याग, चन्द्रमा, शुक्र, बुध ये बार त्याग करे और नक्षत्रों में और वारों में रोगी स्नान करे । बादमें यथाशक्ति ब्रह्मभोजकरे ।

यात्रा का मुहूत् ।

उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च वृद्धस्पतिः ।
अंगिरामनउत्साहो विप्रवाक्यम् जनाद्दनः ॥

टीका—गर्ग मुनिका तो यह वाक्य है कि ५ घड़ी रात रहे यात्रा करे तो शुभ है । और वृद्धस्पति जी का यह वाक्य है कि

सुगन् देख के यात्रा करे । अङ्गिरा ऋषि का यह वाक्य है कि मनमें आनन्द हो जमी यात्रा करे । और जनार्दनका यह वाक्य है कि ब्राह्मण की आज्ञा लेके यात्रा करे तो शुभ है ।

प्रस्थान करना ।

**यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधुं च स्थापयेत्कलम् ।
विप्रादि के तथा सर्वे स्वर्ण धान्यवरादिकम् ॥**

टीका—ब्राह्मण को तो जनेऊ धरना चाहिए, चतुरीको शस्त्र वैश्य को मीठा शूद्र को फल, और जातियोंको अब या सौना । प्रस्थान उसे कहते हैं कि यात्रा करने के दिन नहीं जाना हो तो पहिले दिन कुछ चीज दूसरे के यहां धर दे । सो ऊपर लिखी चीज रखनी चाहिए ।

यात्रा के समय शकुन देखना ।

इन्धनं च तथागारं गुडः सर्पिस्तथाऽशुभम् ।

अभक्तो मलिनोमन्द तथा नग्नश्च ब्राह्मणः ॥

टीका—यात्रा में घर से निकलते ही लकड़ी, अग्नि, गुड़, धी, तेल, नग्नसिर, फकीर, हीजड़ा, छोंक, नग्न, ब्राह्मण, घर से निकलते ही अशुभ हैं ।

अच्छे शकुन देखना ।

श्रुतिं विप्र निनादश्च नद्यावर्तः सकौतुकः ।

सुभगा स्त्री शुभः शब्दो गम्भीरः सुमनोहरः ॥

टीका—वेद पढ़ते ब्राह्मण। गाना गाती या नाचती वेश्या

गौ, हाथी, धींवर भरा हुआ जल का घड़ा या मशक भरी हुई। भज्जी भरा डला लिये। बाजा, धंदा वजता हुआ, फूल और फूलेहार माली मोतियोंकी या फूलोंकी माला पहरे कन्या। स्त्री सुहागन गोद भरी हुई। ये शकुन शुभ दायक हैं।

दिशाशूल देखना ।

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वा दक्षिणां च दिशां गुरौ ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमांच बुधे भौमे तथोत्तरे ।

टीका—शनिश्चर को और सोमवार को पूर्व में दिशाशूल जानो, ब्रह्मस्पति को दक्षिण में रवि और शुक्र को पश्चिम में। बुध और मङ्गल को उत्तर में दिशाशूल जानिये। यात्रा समय ये त्यागने चाहिये।

अनुत्तराधात्रयं हस्तो मृगाश्वो च दितिद्वायम् ।
यात्रायां रेवती शस्ता निंद्याद्रीः भरणीद्वयम् ॥
मधोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्ये च मध्यमाः ।
षष्ठो रिक्ता द्वादशी च पर्वाणि च विवर्जयेत् ॥
लग्नं कन्या मन्मथश्च मकरश्च तुलाधरः ।
यात्रा चन्द्रबले कार्या शकुनं च विचारयेत् ॥

टीका—अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्त, मृगशिर, अश्विन, पूर्ण शुनर्वसु, रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं। आद्री, भरणी, कृतिका, मध्या, उत्तरा तीनों विशाखा, श्लेषा यह अशुभ हैशेष नक्षत्र अध्यम हैं। ६ । ४ । ६ । १२ । १४ । ३० । १५ ये तिथि और व्यतीपात

योग वर्जित हैं । कन्या, मिथुन, तुल, मक्ख ये लग्न शुभ हैं ।
चन्द्रवल और शङ्कुन विचार कर यात्रा कीजे ।

नित्य दिशा देखना ।

तिथि वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
नवमिश्च हरेद्वाग् शेषं दिनदशोच्यते ॥
रविश्चन्द्रो भौमराहु गुरुमन्दश्चके हितौ ।
क्रमेण तादिशा ज्ञेया फलं पूर्वोक्तमेवहि ॥

टीका—तिथि वार नक्षत्र अपने नामके अक्षर सब इकड़ूकेर
के ६ से भाग दे । १ वचे तो सूर्य की दशा जानना २ वचे तो
चन्द्रमा की, ३ वचे तो भौमकी । ४ वचे तो राहुकी । ५ वचे तो गुरुकी ।
६ वचे तो शनि की । ७ वचे तो बुधकी । ८ वचे तो केतु की ।
शून्य वचे तो शुक्र की । फल इसका ऐसा जानो जैसा वर्ष में
मुग्धा दशा का है ।

जन्म तारा चतुर्गुणया तिथिवारसमन्विता ।
अष्टमिस्तु हरेद्वाग् शेषांके च दशा स्मृता ।
रविचन्द्रकुजज्ञाश्च गुरुशुक्रशनिः क्रमात् ।
शून्यशेषे यदा जातो राहोरपि दशा स्मृता ॥

टीका—जन्म नक्षत्र को दिन नक्षत्र तक गिने फिर चौगुण
करे तिथि वार मिलावे आठका भाग दे जो १ वचे तो रवि २ वचे
तो चंद्रमा ३ वचे तो भौम ४ वचे तो बुध ५ वचे तो गुरु ६
वचे तो शुक्र, ७ वचे तो शनि पूरा भाग लगेतो राहु और केतुकी
दशा जाननी चाहिए ।

चौखट का मुहूर्त ।

सूर्यन्दायगमैः शिरस्थ फलं लक्ष्मीस्ततः कौणमैः
नागैरुद्वसनंततो गजमितैः शाखासु साख्य भवेत् ॥
देहत्याँ गुणमैः सृतिगृहपतेर्मध्यस्थितैः वेदमैः ।
सौख्यं चक्रमिदं विलोक्यसुधिया द्वारं निधेयं शुभम् ॥

टीका—सूर्य के नक्षत्र से ४ तो शिर के हैं उनमें चौखट लगावे तो लक्ष्मी को प्राप्ति हो और तिस के अगले ८ कौणके हैं ये ऊजड़ करे, किरं अगले ८ शाखाओं के सुखकारी हैं अगले ३ देहलीके मृत्युकारक हैं। अगले ४ मध्यके सौख्य कारक हैं ॥

घर का दर्वाजा लगाने का मुहूर्त ।

भवेत्पूषणी मैत्रपुष्ये च शक्ता-करे हस्त चित्रा
नले चाहिते च । गुरौ शुक्र चन्द्राऽकि सौम्येषु वारे
तिथौ नन्द पूर्णा जया द्वार शाखा ॥

टीका—रे०, अनु०, पुष्य०, ज्यै०, ह०, चि०, स्वा०, पुन० यह
नक्षत्र गु०, शु०, चन्द्र, शनि ये वार हों, १ । ६ । ११ । ३ ।
१३ । दा ५। १०१५ ये तिथि हों । राशि दाशा १२ । ११
ये लग्न, दरवाजा लगाने में शुभ हैं ।

कुवां खोदने का मुहूर्त ।

हस्तस्तिसो वासवं वारुणं च शैव पित्रश्यं त्रीणि

चैवोत्तराणि । प्रजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपा-
रम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ॥

टीका—ह०, च०, स्वा०, ध०, श०, आ०, म०, उ० तीनों
रो० ये नक्षत्र और च०, बु०, गु०, शुक्र ये बार २०३।५।७।१०
।१३।१५ इन तिथियों में कुआँ बनाना व खोदना शुभ है ।

पुनः द्वितीय क्रम देखना ।

कूपचक्रं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले ।
रोहिण्यादि लिखेचक्रं यावन्तिष्ठति चंद्रमा ॥
एकमध्ये द्वयं पूर्वे तृतीये उग्निमेव च ।
याम्ये बाणसंगयश्च नैऋतेष्ठमेवच ॥
पश्चिमे युग्मवायुश्च उत्तरे त्रयीर्वितः ।
ईशाने त्रयो दातव्या वृद्धं रक्षादनुकमात् ॥
मध्येशीघ्रजलं स्वादु पूर्वे भूमौ च खण्डितम् ।
आग्नेयां च जलं प्रोक्तं यान्येच निर्जलं भवेत् ॥
नैऋत्यां च जलं प्रोक्तं पश्चिमे क्षारमेव च ।
बायव्ये चैव पाषाणं उत्तरेच सदुभवेत् ॥
ईशाने मनसा शुद्धिः वापि कूपस्य लक्षणम् ।
प्रुगे करजल मैत्रे वासवे पितृभेषु च ॥
रविमदनं द्वितीया पंचमी सप्तमीशु च ।

घटवृष्ट हरिलग्ने जीव शुक्रार्की वारे । मुनिवर कथितोयं कूपकारम्भ सिद्धो ॥

३ ईशान सुन्दरजल	२ पूर्व में जल नहीं आवे	३ अग्नि जलहो	टीका—रोहणी से आदि लेकर २७ नक्षत्र तक इस प्रकार गिन कर धरे कि १ मध्य में, २ पूर्व में, ३ अग्नि में, ४ दक्षिणमें, ६ नैऋत्य में, २ पश्चिममें, २ वायव्य में ३ उत्तर में ३ ईशान में । अब रोहिणी से दिन नक्षत्रतकजो संख्याओं आवे उसके अनुसार चक्र देखकर फल कहै ।
३ उत्तर सुन्दर जल	१ मध्य मीठा शीघ्र जल	५ दक्षिण में जल न आवे	
२ वायव्य पश्चिम निक्ळे	२ पश्चिम खारी जल	६ नैऋत्य जल	

बाग लगाने की प्रतिष्ठा का मुहूर्त ।
गोसिंहालिंग तेष चोत्तरेगते भानो बुधादित्रये ।
चंद्राकेचं शुभा बुधे अमी यदारामप्रतिष्ठाकार्या

टीका—वृष्ट, सिंह, वृश्चिक इन राशि के सूर्य उत्तरायण
बुध, शुक्र, शुक्र, रवि, चन्द्रमा ये वार शुभ हैं । श्लेषा, भरणी,
कृतिका, शतभिष्या, विशाखा ये नक्षत्र अमावस्या ४ । १४ । ६
८ । ६ । १२ ये तिथि अशुभ हैं ।

सगाई में लड़की के शिर में डोरी गेरना
विश्वस्वातिवैष्णव पूर्वात्रय मैत्रे बस्वाग्नेयैर्वाकर

**पीडोचितित्रृक्षैः । वस्त्रालंकारादि समेतैः फलपुष्टैः
सन्तोष्यादौस्यादनुकन्यावरणं सत् ।**

टीका—उत्तराषाढ़, स्वाति, श्रवण, तीनों पूर्वा, अनुराधा,
धनिष्ठा, कृतिका, विवाह नक्षत्र इतने नक्षत्रों में चं०, गु०, शु०,
बुध इन बारों में कन्या के शिर में ढोरे गेरे और अच्छे बख
और चीज पहरावे ।

अथ कष्ट योग देखना ।

**शतभिषाक्तरआद्वा स्वातिमूलत्रि पूर्वा । भरणी
सहितपुष्यो । भौमन्दार्कवासः प्रथमादन चतुर्थी
द्वादशी षष्ठीमूता । हरिहरविधि रक्षा रोगिणां
काल मृत्युः ॥**

टीका—शतभिषा, हस्त, आद्रा, स्वाति, मूल, पूर्वा तीनों
भरणी, पुष्य ये नक्षत्र हों और भौम, शनिश्चर, रवि ये चार
और १, ४, १२, ६, ३० ये तिथि ऐसे योग में कोई बीमार हो
तो विष्णु आदि भी रक्षा करें तो भी नहीं बचे ।

ज्वालामुखी योग ।

**पड़बा मूलपंचमी भरणी आठे कृतिका नवमी
रोहिणी दशमी श्लेषा ज्वालामुखी ॥
जन्मै तो जीवे नहीं, बसै तो ऊज़इ होय ॥
कामनी पहरे चूड़ियां, निश्चय विधवा होय ॥**

**कुवें नीर भाँके नहीं, खाट पडोन उठन्त ।
जोतिषी जो जाने नहीं, ज्योतिष कहता ग्रंथ ॥**

टीका—पढ़वा के दिन मूल पंचमी के दिन भरणी, आठे को कृतिका, नौमी को रोहणी, दशमी को श्लेषा, ये नक्षत्र अग्नि-मुखी हैं । जो इनमें जन्म ले तो जीवे नहीं और घर में बसे तो ऊजड़ होय और स्त्री चूड़ी पहरे तो विधवा हो, इनमें कुवां नहीं भाँके और जो वीमार होकर खाट में पड़े तो उठे नहीं, ये बात जोतिष का ग्रन्थ कहता है ।

सूतक निर्णय देखना ।

**महिष्योऽजास्तथा गावो ब्राह्मणादिस्त्रियस्तथा ।
दशरात्रेण शुद्ध्यन्ति भूमिस्थं च नवोदकम् ॥१॥**

टीका—भैंस, वकरी, गाय, दूध के पशु और ब्राह्मणी आदि खियाँ बचा होने पर और भूमि में सेव का जल ये दश रात्री में शुद्ध होते हैं ।

दशाहाच्छुद्धते माता अवगाह्य पिता शुचिः ॥२॥

टीका—मातातो दश दिनमें शुद्ध होती है और पिता स्नान करने से तुरन्त ही शुद्ध हो जाता है ।

मृतक पातक निर्णय देखना ।

यदा तदा भवेद्वाहः सूतकं मृतिपूर्वकम् ।

टीका—निर्णय सिंधुमें लिखा है कि दाह तो किसी ही दिन हो परन्तु पातक मृत्यु के ही दिन से मानना चाहिए और ख्याह भी उमी तिथि में होना चाहिये जिसमें मृत्यु हो ।

मरने में पातक देखना ।

मुर्वेषां च दशाहं स्यात् सूतकीनां च सत्यजेत् ।

चतुर्थे दशरात्रं स्यात् षट् रात्रिश्च पञ्चमे ॥

षष्ठे तुचतुरो ज्ञेया सप्तमे च दिनत्रयम् ।

आष्टमे दिनमेकन्तु नवमे प्रहरद्वयम् ॥

दशमे स्नान मात्रेण एवं गोत्र प्रसूतकम् ॥

टीका—मरने में चारों वर्षों का दश दिन का सूतक होता है इस वास्ते सूतकियों का त्याग करे । परन्तु ये भी प्रमाण है कि जो चौथी पीड़ी हो तो १० दिन तक सूतक माने और पांचवी में ६ दिन का, छठी में ४ दिन का सातवींमें ३ दिन का आठवीं में १ दिन का नवींमें २ पहर तक का दशवींमें स्नान करने ही से शुद्ध हो जाते हैं । ये गोत्र के ऊपर सूतक कहा है ।

त्रिपुस्कर योग वर्जित ।

यमलादित्रिपुष्करमूलमधावसुवासवपंचकं पंचयुता ।

भरणीनिहीकीजेप्रेतक्रिया, क्षयजात कुदुम्बस्वयंत्रिया ॥

टीका—यमलादि त्रिपुस्कर ये योगमूल, मधा, धनिष्ठा, श०, पूर्वी भा०, उ०, भा०, रे०, भ० इनमें प्रेतकी क्रिया नहीं करे और जो करे तो कुदुम्ब वालों में या अपने घर में और भी दुःख प्राप्त हो ।

त्रिपुस्कर योग देखना ।

भद्रातिथौ रविजभूतनयाकर्वारे द्वीशार्यमाज

चरणादिति वन्हि विश्वे । त्रैपुस्करो भवतिमृत्यु
विनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदोद्धिगुण कृद्धसुतक्षचान्द्रः ॥

टीका—भद्रा तिथियों में से कोई सी तिथि हो और शनि
या मङ्गल या रविवार इन वारों में से वार होय और विशाखा
उचरा फाल्गुणी पूर्वी भाद्रपद ऐसे योगको त्रिपुष्कर कहते हैं ।
इसमें मृत्युहानि होवे तो ३ होय और वृद्धि जन्म भी तीनही होय
और येही तिथि और येही वार और ध०, च०, म० ये नक्षत्र होयतो
उसको द्विस्कर कहते हैं और इसमें हानि वृद्धि जन्म दो होते हैं ।

नीव धरने में शेष नाग विचार ।

सिंहे कन्यां तुलायां भुजगपतिमुख शम्भु कोणे-
ग्निखाते, वायव्ये शेष वक्रे अलिधन मकरे ईश स्वातं
वदन्ति । कुंभे मीनेचमेषे नैऋति दिशि मुखं खात
वायव्य कोणे उड्ढे मिथुने कुञ्चीरे अग्निदिशि मुखं
राज्ञसी कोणस्वातम् ॥

टीका—सिंह, कन्या, तुला के सूर्य में शेष नाग का मुख
ईशान दिशामें रहता है, अग्नि दिशा में खोदे और चिने वृश्चिक
धन, मकर के सूर्य में शेष का मुख वायव्य में रहता है ईशानमें
चिने कुम्भ, मीन, मेष के सूर्य में शेष का मुख नैऋतु में होता है
वायव्य में चिने, वृष, मिथुन, कर्क के सूर्यमें शेष का मुख अग्नि
दिशा में रहता इसलिए नैऋत से चिने ।

शेष नाग फल देखना

शिरः खनेत् मातृपित्रोश्चहंता खनेत् पृष्ठं भयरोग

पीड़ा । पुच्छं खनेच्च त्रिषु गोत्रहानिः स्त्रीपुम्
लाभो धनंवामकुद्धौ ।

टीका—यदि शेष नाग के शिर पर खुदवावे तो माता पिता की हानि होय और पीठ पर खुदवावे तो भय रोग पीड़ा होय और पूँछ पर खुदवावे तो तीन गोत्र की हानि होवे और जो खाली जगह पर खुदवावे तो स्त्री, पुरुष, धन इत्यादिका लाभ होवे ।

पृथ्वी का सोना देखना ।

प्रद्योतनात् पञ्चनखांकसूर्यो नवेन्दुः षड्विंश
मितानि भानि । सुसा मही नैव गृहं विधेयं तद्वाग-
वामी खननं नशस्तम् ।

टीका—सूर्य के नक्षत्र से ५ वे २० वे ६ । १२ । १९
२६ । इन नक्षत्रों पर पृथ्वी सोती है सोती हुई तालाब, बाबड़ी,
कुंआ, हवेली इत्यादि के निमित्त खुदवावे नहीं ।

तिथि निर्णय देखना ।

या तिथिः समनुप्राप्य उदयं यादि भास्करः ।

सा तिथिः सकला ज्ञेया दानध्ययनकर्मसु ॥

टीका—जिस तिथि में सूर्य उदय होता है वह तिथि सारे दिन मानी जाती है दान के करनेमें और विद्या के पढ़ने में ।

ब्रत निर्णय देखना ।

शिवंवा शिवदुर्गां च दीपिका चाहुतांशनीय ।

जन्माष्टमी चन्द्रषष्ठीं पूजयेत् प्रथमे दले ॥१॥

टीका—शिवजी का व्रत और दुर्गा का व्रत दिवाली और होली जन्माष्टमी, चन्दन षष्ठी, सत्यनारायण आदि व्रत तिथि के पहिले भाग में करने चाहिये ।

एकादशी यदा नष्टा परतो द्वादशी भवेत् ।

उपोष्या दशमी विद्वा मुनिरुद्धालकोब्रवीत् ॥

टीका—यदि एकादशी की हानि हो तो १२ छोड़के दशमी वेधा एकादशी में व्रत करले ।

नवमी पलमेकन्तु दशभ्यश्च तिथिक्षयः ।

तदा एकादशी त्याज्या द्वादश्यां व्रतमाचरेत् ।२॥

टीका—नवमी १ पल हो दशमी का क्षय नाम विल्कुल नहीं हो तो उस एकादसी को छोड़कर द्वादशीमें व्रत करना चाहिये ।

हरिबासर देखना ।

आभाका सित पदो तु मैत्र श्रवण रेवती ।

संगमे नैव भोक्तव्यं द्वादशी द्वादशाहरेत् ॥

टीका—जो एकादशी व्रत किया होवे और अगले दिन द्वादसी को अनुराधा नक्षत्र हो और महीना आषाढ़ का होवे और भाद्रपद में द्वादशी को श्रवण होवे और कार्तिक में द्वादशी को रेवती और चांदनी रात होय । जो इनमें भोजन करे तो वारह व व के किये हुये एकादशी व्रत के फल को नष्ट कर देतो है ।

मैत्रस्य प्रथमे पादे श्रवणे च छितीयके ।

रेवती अंतपादेषु भोजनं च विवर्जयेत् ॥

टीका—अनुराधा प्रथम चरण में श्रवण के दूसरे में रेवती के चौथे चरण में भोजन नहीं करना ।

सर्वप्रतिष्ठा मुहूर्तं देखना ।

**जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशांक
शुक्रे । हृष्ये मृदुचिप्रचर ब्रुवे स्यात्यदो सिते स्वर्की
तिथिक्षणेवा ॥**

टीका—कुवां आदि सर्व प्रतिष्ठा में उत्तरायण सूर्य हो और गुरु, चंद्र, शुक्र उदय हों और मृ० रे० चि० अनु० ह० अश्वि० पुष्य, अभि०, स्वात पुन०, श्र०, ध०, श०, रो० तीनों उत्तरा और शुक्लपक्ष और जिस देवताकी प्रतिष्ठा करावे उसीका नक्षत्रतिथि मुहूर्त में लेना इस विधि से सब देवताओं की प्रतिष्ठा श्रेष्ठ है । रिक्तारवजे दिवसेशु शस्तः शशांकपापैस्त्रिभवाङ्ग संस्थैः । व्यंत्याष्टगोः सत्खवरैमृगे द्रे सूर्येष्विटे कौशुवतौ च विष्णुः ॥

टीका—रिक्ता तिथि ४ । ६ । १४ और मङ्गलवारको त्याग कर देना और लग्न शुद्धि चन्द्रमा, सूर्य, भौम, शनी, राहु, केतु, ये ग्रह । ३ । ६ । ११ स्थान में होवे और शुभ ग्रह बुध गुरु शुक्र १२ । ८ । छोड़ कर २ । ४ । १ । ५ । ७ । ६ । १० । में होने तो प्रतिष्ठा करनी । और सिंह लग्न में सूर्य की । कुम्भ में ब्रह्मा की कन्या में विष्णु की स्थापना करनी चाहिए । शिवो नूयुग्म द्वितनो च देवयः क्षुद्राश्चरे सर्व इमे

स्थिरक्षो । पुष्टे ग्रहा विघ्नपयक्ष सर्पभूता-दथोत्ये
श्रवणे जिनश्च ॥

टीका-मिथुन लग्न में शिवजी की स्थापना और ३,६,८
१२ इन लग्नों में दुर्गा की और २,५, ८, ११, इन लग्नों में
चूदा देवी चौंसठ योगिनी की और पुष्प में नव ग्रहों की सूर्य
की हस्तमें, गणेशजी, यक्ष, शेष और भूतादि देवताओं
की रेवतीमें और श्रवणमें जिन देवताओं की स्थापना श्रेष्ठ है ॥

विटोड़े का मुहूर्त देखना ।

सूर्यकाद्रसभैरधस्थलगतैः पाकोरसेः संयुक्तः ।

शीर्षेयुग्नमिते शवस्य दहनं मध्ये युगे सर्पभी ॥
प्रागाशादिसुवेदभैश्च सुहृदः स्यात्संगमो रोगभीः ।
क्वाथादेः करणं सुखचगदितं काष्टादिसंस्थापने ॥

टीका-सूर्य के नक्षत्र से अगले ६ नक्षत्रों में विटोड़ा रखने
तो बहुत अच्छे पाक पकाये जाया करें और उन अगले दो
नक्षत्रों में धरे तो उसके उपर्योग से सुर्दी झुंके उनसे अगले ४
नक्षत्रों में सर्प का भय रहे, उनसे अगले ४ नक्षत्रों में मित्र भोजन
पके उनसे अगले ८ में रोगी के लिये काढ़े पके उनसे अगले ४
नक्षत्रों में शुभदायक होता है ॥

गोद लेने का मुहूर्त ।

हस्तादि पञ्चक भिषग्वसु पुष्य भेषु सूर्यक्षमाज
गुरु भार्गव वासरेसु । रिक्ता विवर्जित तिथिष्वलि

कुम्भ लग्ने सिंहे वृषे भवति दत्ता परिग्रहोयम् ॥

टीका—हस्त से पाँच ह०, चौं स्वा विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र, ये वार ४, ६, १४ छोड़ के वाकी तिथियों में वृश्चिक, कुम्भ, सिंह वृष इन लग्नों में पुत्र गोद लेना शुभ है ।

पशु व्याहने के वर्जित मास ।

**माघ बुधे च महिषी श्रावणे पड़वा दिवा ।
सिंहे गांवः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायका ॥**

टीका—माघ के महीने में बुध के दिन भैंस, श्रावण में घोड़ी दिन में और सिंह के द्वयमें गौ व्याहे तो स्वामीको मृत्युदायक होता है तत्काल उसको दान करके शांति करे ।

वधु प्रवेश मुहूर्त देखना ।

**ध्रुवः क्षिप्र मृदुः श्रोत्र वंसु मूलमधानिले ।
वधुः प्रवेशो सन्नेष्ठो रिक्ताराके बुधेपरे ॥**

टीका—उत्तरा, ३, रो, ह०, अश्विनी, पुष्य, अभिं०, मृ०, रे०, चित्रा, अनु०, श्र०, ध०, मू०, मधा, स्वा० में ४, ६, १४ ये तिथि मङ्गल, रवि, बुधवार को छोड़कर नई वधु को घर में लेबाना चाहिये ।

बाग लगाने का मुहूर्त देखना ।

**लतागुल्मवृक्षारोपो हस्त पुष्याश्विनी ध्रुवैः ।
विशाखा मृदु मूला हि बारुणैश्च प्रशस्यते ॥**

गुरो नेन्द्रे विपापेरे विधौ वारि विष्वयते ।-

शुभं युक्ते क्षिते वन्धौ सद्वारे वा शुभोदये ॥

टीका—पेह, वेल, गुच्छे इनके लगाने में हस्त, पृष्ठ, अधिनी तीनों उच्चरा, रोहिणी, विषाखा, मृगशिर, रेवती, चित्रा, ज्ञुराधा मूल, इश्लेषा, सतभिषा ये नक्षत्र और वृष, कर्क कन्या, तुल, धन ये लग्न केन्द्र १-४-७-१० इन स्थानों में गुरु और लग्न में आ १० वे चन्द्रमा, राधा १०-१३ ये तिथि चं० बु०-शु० ये बार शुभ हैं केन्द्र में पाप ग्रह न हो और ४ स्थान शुभ ग्रहों से युक्त हों इनमें वाग लगावे जब पेह बोवे तब ये मन्त्र पढ़ोः—

वसुधेति च शीतेति पुन्यं देति धरेति च ।

नमस्ते शुभगे देवो द्रुमोयं वृद्धतामिति ॥

मुख्य द्वार का मुहूर्त ।

कक्षे कुम्भे च सिंहे मकरे च दिवाकरः ।

पर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वेशमनाम् ॥

मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः ।

गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरं वापि दक्षिणम् ॥

धनुर्मिथुनकन्यायाँ मीने च यदि भानुमान् ।

न कर्तव्यं तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात् ॥

कर्के कुम्भ सिंह मकरके सूर्यमें घर बनावे तो घरका दरवाजा पूर्व अथवा पश्चिम की ओर करना चाहिये ॥ मेष, वृष, वृश्चिक और तुला के सूर्य में उच्चर अथवा दक्षिण को घर का द्वार शुभ है । धन, मिथुन, कन्या और मीन के सूर्य हों तो घरका बनाना अशुभ और दुःखप्रद है ।

साद पहले का
और पुंसवनका
सुहृत्त

पुनर्वसु पुष्य मू० रे० पूर्वा भा०, उत्तरा भा०
पूर्वाष्टाऽउत्तराष्टाऽभ०मृ०ह० ये नक्षत्र गु० भौ०
र० ये वार २३।४।७।८।९।१०।११।१३ ये तिथि १।२।३
मास ६।७।४।५।६।७ ये लग्न होने चाहिये सीमांत
कर्म ८ महीने में करना चाहिये ।

दुक्षान करने का
सुहृत्त

इनु० उ० तीनों रो० अश्व, पुष्य० पु०श० ह० अ० ये
नक्षत्र २३।४।७।८।९।१०।११।१३ ये तिथि गु० शु० बु०
चन्द्र ये वार २४।५।६ ये लग्न शुभ हैं ।

राजाके देखनेका
सुहृत्त

उत्तरा तीनों श्र० श०ध०मृ०पु० अनु० रे० रे० पुष्य
आश्विनी ह० चि० शुभ तिथि शुभ वार हैं ।

नौकरी करने का
सुहृत्त

ह० चि० अनु० रे० आश्विनी सू० पुष्य ये नक्षत्र बु०
गु०शु०ये वार शुभतिथि योनि, राशि, गणा, वर्गमिल्लवे

नाव बनाने का
सुहृत्त

पूर्वा तीनों इश्ले, म, अ, पु, श, मृ, ये तत्त्व शुभवार
२३।४।७।८।९।१०।११।१३ ये तिथि शुभ हैं ।

दांध चलाने का
सुहृत्त

पूर्वा तीनों उत्तरो तीनों म० श्ले० ज्ये० आद्रा०
ध०अ०कृ०भ०मृ०पृ०सु० ये नक्षत्र शुभ तिथि शुभवार

बीज धोने का
सुहृत्त

ह०चि०स्वा० म० पुष्य उत्तरा तीनों रो० सू० ध०
रे० अ० मू० इनु० ये नक्षत्र शुभ तिथि शुभवार में ।

जड़ा को बाहर
निकालने का
सुहृत्त

ज्ये० इनु० पु० पुर्ण्य रो० श्ले० सू० ह० रे० उत्तराष्टाङ्ग
अ० ध० ये नक्षत्र २० च० गु० शु० ये वार ५।६
७।१।१ ये लग्न २३।४।७।८।९।१०।११।१३ तिथि शुभ हैं ॥

युद्ध करने का
सुहृत्त

आद्रा० भ० पूर्वा तीनों मू० इश्ले० म० ये नक्षत्र ३
१३।८।४।१०।१५ तिथि बु०च०गु० ये वार शुभलग्न ।

पुल बांधने का
सुहृत्त

उत्तरा तीनों रो० स्वा शू० ये नक्षत्र म० २० गु० ये
वार शुभ लग्न २३।४।७।८।९।१०।१३ शुभ तिथि ।

॥ इति सुहृत्त प्रकरण समाप्त ॥



प्रश्न प्रकरण

(भाषा टीका)

चतुर्थ भाग

जो कोई आके पूछे कि मेरा प्रश्न है तो उससे परिणत यों
कहै कि तुम अपना हाथ अपने ज्ञानीर पर धरो जहाँ वो अपना
हाथ धरे वहाँ का फल इसप्रकार कहै ।

शिरो मुखं कर्णं नेत्रं सृष्टा पृच्छति यो नरः ।

सुवर्णयनधान्यानां लाभस्तत्र न संशयः ॥

स्कंधग्रीवाकंठहस्तस्पशो लाभोहि दुःखतः ।

कुक्खीनाभिमसालंभे भक्षपानादि सिध्यति ।

जंघालिंगकटीस्पशो कन्यालाभसमुद्घवः ।

जानुगुलफपदस्पशो महाक्लेशः प्रजायते ॥

केशस्पशो भवेन्मृत्युः कार्यसिद्धिर्जायते ।

काष्टकं कमठस्पशो ग्रहपीडा भयं भवेत् ॥

सुगन्धमद्यपानादिस्पशो सिद्धिः प्रजायते ।

शून्यालये शमशाने च शुष्ककाष्ठद्वते तरौ ॥
 गुल्फभस्माधमस्थाने प्रश्नक्लेशः प्रजायते ।
 देवस्थाननदीतीरे दिव्यस्थाने शुभं भवेत् ॥
 शुभं हृष्टि ऋतं सिद्धिर्विदित्तु च न जायते ॥

टीका—माथे मुख कान नेत्र इनपै धरे तो लाभ हो । कंधा गला हाथ कल्ले छुबे तो कष्टसे लाभ हो । कोख नाभीमें अच्छा भोजन पावे, जांध लिंग कमर पै कन्या या पुत्र का लाभ हो । धोट्टू कौनी परक्लेशहो या मृत्युहो । फलफूलपररक्खेतोसिद्धिहो तृण काष्ठ अग्नि इनमें कष्ट हो । सुगन्ध या मद्य पान में सिद्धि हो । छने घर में शमशान में भस्म पै बैठ के पूछे तो क्लेश हो देखता के मकान पै या नदी पै या गौशाला में या सन्मुख होके पूछे तो शुभदायक होता है ।

कन्या होगी या पुत्र ये देखना ।

नामाक्षराणि त्रिगुणी कृतानि तुरङ्गदेशो तिथि
 मिश्रितानि । अष्टौ च भागो लभते च शेषं सर्वं
 च कन्या विषमे कुमारः ॥

टीका—गर्भणीके नामके अक्षर तिगुने करे जिसमें घोड़ा के अक्षर देश के अक्षर मिलावे वर्तमान तिथि मिलावे आठ का भाग दे शेष अङ्ग सम नाम २। ४। ६ इस प्रकार बचेतो कन्या विषम नाम १। ३। ५ इस प्रकार बची तो पुत्र हो ।

तत्प्रश्नलग्ने रविजीवभोमास्तृतीय सप्ते नव पंचमे
वा । गमे पुमान्यै ऋषिभिः प्रणीतःश्चान्यैर्ग्रहैःस्त्रा
विद्वुधैः प्रणीता ॥

टीका—जो कोई पूछे मेरे पुत्र होगा या कन्या उस वक्त लग्न
देख के धरे, लग्न से तीमरे शाश्वत 'जो इनमें सूर्य वृ०मं० ये
ग्रह हो तो पुत्र हो इन स्थानमें और ग्रह हों तो पुत्री जानो ।
नखद्वयः गर्भिणि नामधेयम् तिथिप्रयुक्तम् शार संयुक्त
च । एकेन हीनं नव भागधेयम् समे च कन्या विषमे
कुमारः ॥

टीका—नख नाम वीसमें गर्भणी स्त्रीके नामके अन्वर उस
दिनफी तिथिजोड़के, पांच और मिलावे एकघटाके नवका भागदे १
शाश्वत वचे तो पुत्र हो और २४शाश्वत वचे तो कन्या हो ॥

मुहूर्मे प्रश्न देखना ।

मेरे रक्तं वृषे पीतं मिथुने नीलवर्णकम् ।
कके च पाण्डुरोङ्गेय सिंहे धूमं प्रकीर्तिम् ॥
कन्यायाँ नील वर्णं स्यात् श्वेतवर्णं तथातुले
वृश्चिके त्रिप्रमिश्रं च चापे पीतं विनिर्दिशेत् ।
नके कुम्भे कृष्णवर्णम् मीने पीतं वदेत्सुधीः ॥

टीका—जो कोई कहे मेरी मुहूर्मे क्या है, मेरे लग्न हो तो
लालरङ्गकी वस्तु कहै वृषमें पीला मिथुन में नीला कर्कमें पीला
सिंह में धुवें के सा रङ्ग कहै, कन्या में नीला तुल में सफेद

बृहिंचक में लाल धन में पीला मकर में काला कुम्भ में भी काला
मीन में पीला रङ्ग कहै ।

कार्य प्रश्न देखना ।

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।

अष्टभिस्तु परेद्वागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥

पञ्चके त्वरिता सिद्धिः पट्टुये च दिनत्रयं ।

त्रिसप्तके विलम्बशब्द द्वौ चाष्टो नहि सिद्धिदौ॥

टीका—जो कोई पूछे मेरा काम कब तक होगा पूछने वाले का
जिस दिशामें मुँह हो वो दिशा पहर नक्षत्र और वार सबको एक
जगह करके उ का भाग दे १ या ५ बचे तो जल्दी काम सिद्ध
हो ६ । ४ बचे तो तीन दिन में हो ३ । ७ बचे तो देर में होगा
२ या शून्य बचे तो होगा नहीं ।

पंथा प्रश्न देखना ।

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।

सप्तभिस्तु हरेद्वागं शेषतु फलमादिशेत् ॥

एकेन गमने सिद्धिर्द्वार्धां मार्गश्च एव च ।

तृतीयेचार्धमागे वै चतुर्थे ग्राम आदिशेत् ॥

पञ्चमे पुनरावृतिः पष्ठे क्लेशः प्रजायते ।

सप्तमे शून्यता वृत्तिरिति ज्ञेयं विचक्षणैः ॥

टीका—जो कोई पूछे हमारा आदमी परदेश से कब आवेगा

तो तिथि बार पहर नक्षत्र जोड़ के ७^o का भाग दे १ वचे
तो घर पै कहना २ वचेतो रास्ते में ३ वचेतो अर्धमार्ग में फंस
गया ४ वचे तो गांव के पास आगया है ऐसा कहै ५ वचे तो
रास्ते में से किर गया ६ वचे तो कष्ट हो गया शून्य वचे तो
बानो मर गया ॥

धनसहजगतौ गुरुभार्गवौ कथयतोऽन्यगमनं प्रवासि-
पुंसां । तनुहिवुनगताविमौ च तद्वज्ञानिति नृणां
कुरुते गृहप्रैवशम् ॥

टीका—पूछनेके बक्त जो लग्न हो उससे दूसरे स्थान गुरु और-
तीसरे स्थान शुक्र हो तो जल्दी आना कहे । पहले स्थान शुक्र
और चौथे स्थान मुरु हो तो जानो आगया ।

अथ जौ देखना ।

पितृदोषो भवेन्मेषे क्षुधाहानिर्विवर्णता ।
वृषे गगनदेव्यास्तु ज्वरदुःस्वप्ननेत्ररुक् ॥
मिथुने च महामायादोषो वैलाज्वरोनिलाः ।
कक्षे च शाकिनीदोषो हास्यरोदनमौनता ॥
सिंहे जले प्रेतदोषो दिवा शीचे ज्वरोरुचिः ।
अग्नदोषश्च कन्यायां क्रोधालस्यारुचिर्था ॥
दोत्रपालभवो दोषस्तुले संतानपीडनम् ।
वृश्चिके नागदोषश्च ज्वालादेहे कुषुद्धिता ॥
चापे देहे भवेद्वोषो ज्वरःशोकोदरव्यथा ॥

मंकरेचयिष्टकादोषो देहभङ्गो ज्वरोनिलः ॥
 मलिनप्रेतदोषश्च कुम्भे देहस्य पीड़नम् ।
 मीने चापेऽङ्गनदोषो ज्वरजंजालदर्शनम् ॥

टीका—जब कोई जौ दिखाने आवे उन जौ को बाहर २ गिने । १ बचे तो मेष लग्न जानना । २ बचेतो शृष्ट ऐसे ही जो जौ बचे १२ से गिनती में वो ही लग्न जानना फिर उसका फल कहना । मेष में पित्रोंका दोष कहना । फिर गायत्री जपी । उसे भूख नहीं लगती । ३ देवी का दोष हल्का बुखार रहे । ३ महामाया का दोष । ४ शाकुनीदेवीकी पूजा करो । ५ जलकाप्रेत है उसका दोष जो इसने खाया है वो चींज दरिया के किनारे धर दो । ६ ग्रहों का दोष ग्रहोंका दान करो, ७ संतान का दोष ब्राह्मण के लड़के को कपड़े पहराओ और श्वेतपाल का दोष चौमुखा तेलका दीवा बालके सिन्दूर, उड्ड, स्याही, दही, उमरे धर उसके शिर परको उतार कर चौराहे पर रक्खो । ८ देवता का दोष । देही में आग सी लगी रहे । देवता का पूजन करो । ९ बचे तो अङ्ग रोग कहना । १० चण्डी देवीका दोष चंडीकी जात दो या कन्या जिमावो ११ प्रेतका दोष कुछ प्रेतका उतारा उतार करधरो या गायत्री जपवाओ १२ योगिनी देवी का दोष देवी या माता का उठावना धरो ।

व्यथे धर्मे तृतीये च पष्ठे पापो यदा भवेत् ।
 हते जले कुजे दोषो तस्य दोषः कुलोङ्घवः ॥
 शनौ जले कुजे शस्त्रे गरे सूर्यश्च वैस्वतः ।
 राहुश्चविक्रतो नष्टः शांतिंपूजा द्विजाच्चना ॥

टीका—१२ । ६ । ३ । ६ इन स्थानों में जों पाप ग्रह हों तो जल से इब के मरे हुए या जहर देने से मरे हुए का दोष जानो और जो अनि होतो जलमें इबे हुए का दोषा मङ्गल होतो शख्स से मरे हुए का दोष । सूर्य हो तो कोठे से गिरे हुए का दोष । या और कोई चुगती से मरा हो उसका दोष, जो ऐसा दोष हो तो पीपल की पूजा या शिवजी की पूजा या ब्राह्मण बिमावे तो दोष दूर हो ।

वस्तु खोई जाने का प्रश्न ।

अंधश्च चिपिटाक्षश्च काणाक्षोदिव्यलोचन ।

गणयेद्रोहिणीपूवं सप्तवार मनुकमात् ॥

टीका—अन्धा, चिपटा, काणा, सलोचना ये चार प्रकारके नक्त्र हैं रोहिणी से ७ दफ्ते, फिर उसका फल कहे ।

रो०	पुज्य	उ.फा.	विं०	पू०पा०	घनि०	रे०	ये नक्त्र अन्धे हैं
मू०	श्ले०	इ०	अनु०	उ०घा०	श०	अ०	ये नक्त्र चिपटे हैं
आ०	मं०	चि०	ज्ये०	अभि०	पू०भा०	भ०	ये नक्त्र कांणे हैं
पु०	पू.फा.	स्वा०	मू०	अ०	उ०भा०	कृ०	ये नक्त्र सलोचन हैं

अंधे च लभते शीघ्रं मंदे चैव दिनत्रयम् ।
काणाक्षो मासमेकं तु सुनेत्रौ नैव दृश्यते ॥

टीका—अन्धे लग्न में जाय तो जलदी मिले । चिपटा में तीन दिन में मिले । काँखे में एक महीने में । सलोचन में नहीं मिले ॥

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् ।
दिक् संस्थयाहतेचैव सप्तांकैर्भिरजेत्पुनः ॥
एकेन भूतले द्रव्यं द्रव्यं चेद्वाण्डसंस्थितम् ।
तृतीये जलमध्यस्थमंतरिक्षे चतुर्थके ॥
तुषस्थं पंचमे तुस्यात् षष्ठे गोमयमध्यगम् ।
सप्तमे भस्म मध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥

टीका—जो कोई कहै मेरी चीज जाती रही है उस दिन की तिथि बार नक्षत्र पहर सबको जोड़े १० गुणा करदे ७ का भाग दे १ बचे तो छृश्ची में कहना २ बचे वरतन में ३ बचे तो जल में ४ बचे तो छत में ५ बचे तो भूसे में ६ बचे तो गोबर में ७ बचे तो भस्म में कहना ।

पशु खोये जाने का प्रश्न ।

यु मणिभान्नवभेषु वनस्थि तस्तदनुषट् सु च कर्णं पथे स्थितः । अचलभेष गतो अचिरात् ग्रहम् द्रव्यगतेऽ गत व मृतं त्रिषु ॥

टीका—सूर्य नक्षत्र से ६ वा नक्षत्र हो तो बन में गया । ६ में रास्ते में हैं । ७ में जलदी घर आ जाय २ से नहीं मिले । ३ में जानों मर गया ।

वर्षा नक्षत्र संज्ञा देखना ।

दशाद्रीद्या स्थियस्तोरा विशाखाद्या नपुंसकाः ।
तिसि स्थियश्च मूलाद्या पुरुषाश्च चतुर्दशाः ॥
स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टेस्थिनपुंक्योः क्वचित् ।
स्त्री स्त्री शीतलब्धाया योगे पुरुषयोनं च ॥

टीका—आद्री से लेकै दस नक्षत्र स्त्री है । विशाखा से ३ नक्षत्र नपुंसक हैं चौदह नक्षत्र पुरुष है । जो स्त्री नक्षत्र हो सूर्य पुरुष में आवे तो वर्षा हो । स्त्री नपुंसक में वर्षा ओढ़ी हो । स्त्री २ नक्षत्रों में मेघ छाया रहे वर्षे नहीं । पुरुष २ नक्षत्रों में वर्षा नहीं हो ।

दूसरा जोग वर्षा का ।

उदयाष्टं गतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः ।

जलराशिस्थिते चन्द्रे पक्षान्ते संक्रमे तथा ॥

टीका—शुक्र बुध के उदय अस्त में वर्षा होती है और चन्द्रमा जल राशि में होतो पक्षके अन्त तक या संक्रांति तक वर्षा हो ।

बुधः शुक्रः समीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम् ।

तयोरन्तर्गतोभानुः समुद्रमपि शोषयेत् ॥

टीका—जो बुध शुक्र एक राशि पर हो तो सारी पृथ्वी में जल वर्षे और जो इनके बीच में सूर्य आ पड़े तो समुद्र के भी जल को सोख जाय ।

चलत्यंगारके वृष्टिः त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे ।

वारिपूर्णा महीं कृत्वा पश्चात्संवरते गुरुः ॥

टीका—और जो मङ्गल चले तो वर्षा हो । शनिश्चन्द्र के चलने में जहाँ तहाँ वर्षा हो इनके पीछे गुरु हो तो सारी घृणी में जल वर्षे ।

भानोरग्नेमहीपुत्रो जलशोषः प्रजायते ।

भानोः पश्चात् धरासूनः वृष्टिर्भवति भूयसी ॥

टीका—और जो सर्वी के आगे मङ्गल होय तो प्रजा के जल को सोख जाय और पीछे होय तो वर्षा ज्यादा हो ।

ग्रहण का फल देखना ।

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः ।

शस्त्र कोपैः क्षयं यांति तदा भयं परस्परम् ॥

ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्यभूपालनाशकौ ।

सर्वग्रस्तौ चन्द्रसूर्यो दुर्भिक्षमरणप्रदो ॥

टीका—जो एक महीने में सूर्य-चन्द्र दोनों ग्रहण पड़े तो राजाओं में युद्ध हो शत्रु कोपे और नाश हो । जो सूर्य-चन्द्रमा ग्रहण होते उदय हो वा अस्त हों तो अन्न का नाश और राजा का नाश हो सर्वग्रहण हो तो दुर्भिक्ष हो और मरण हो ॥

ग्रहण आदि दोष देखना ।

ग्रहकृत्वा सुवृष्टिश्च हानिश्च भयकारकः ।

विद्युत्पातोऽग्निदाहोथ परीवेषश्च रोगकृत् ॥

दिग्दाहेग्नभयं कृर्यान्नधीतः नृणपीढनम् ।
 इन्द्रायुश्च ढंवसश्च चौरभीतिप्रदायक्षो ॥
 ग्रहयुद्धे राजयुद्धे केतु हृष्टे तथैव च ।
 ग्रहणांते महावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥

टीक-जो विना वायु आकाश में धूर वर्षे विना मेघ विजली चमके सूर्य का लाल मण्डल होना और सूर्य छिपे पीछे लाल पीला आकाश दीखे, विना वादलगरजे आकाश का गड़ गड़ानाहो तो चोर भय हो राजाओंमें भय युद्ध हो धीमारी का भय हो और जो केतु उदय होय तो युद्ध हो । जो ग्रहण के पीछे वर्षा होयतो सारा दोप दूर होजाय ।

॥ अथ पवन परीक्षा ॥

आपादे पूर्णिमायांच नैऋते यदिमारुतः ॥
 अनावृष्टि धर्मन्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥
 आपादे पूर्णिमायां तु बायव्ये यदि मारुतः ।
 धर्मसिद्धिस्तदा लोके धनेधान्यं गृहे गृहे ॥
 आपादे पूर्णिमायां तु ईशान्ये वाति मारुतः ।
 सुखिनेहि तदा लोके गीतवाद्य परायणाः ॥
 वहिकोणेवहिभीतिः पश्चमे च जलाद्यम् ।
 अन्यत्रयदि वायुः स्यात् सुभिक्षं जायते तदा ।

टीका-जो आपादे की पूर्णिमा को सूर्य के अस्त समय नैऋत की वायु चले तो वर्षा थोड़ी हों अन्न का नाश हो कुये

भी सख्त जाय । वायव्य की वायु चले तो लोक में धर्मशीलता रहे धन धान्य की वृद्धि हो जो ईशान की चले तो लोक में सुख आनन्द रहे । अग्निकोणकी चले तो आग बहुत लगे । पश्चिम की चले तो जल का भय हो । और दिशा की चले तो सुभित्र हो । उचर की या पूर्व की या दक्षिणकी चले तो आनन्दहो ।

पूर्णिमा फल देखना

सर्वमासे पूर्णिमायां भूमिकम्पोयदा भवेत् ।
उल्कातारा वज्रपातैर्ग्रस्तास्तो शशीसूर्यकौ ॥
धूम्रकेतु शकः चापः ग्रहणे बहुधा यदा ।
तदामौ सर्ववस्तुनां जायते च महर्घतां ॥

टीका—पर्णिमा को भूमि कांपे । उल्कापात दिन में तारा दूटे । वज्रपात विजली गिरे चन्द्र सूर्य ग्रसे या केतु उदय हो या धनुष निकले तो सब वस्तु मंहगी हों ।

ग्रह वक्री फलम्

भौमे वक्रे अनावृष्टिः बुधे वक्रे रसक्षयः ।
गुरौ वक्रे समर्थःस्या च्छुक्रे वे प्रजासुखम् ॥
शनौ वक्रे महाघोरं क्षयं याति महीपतिः ।
यदा वक्रो पंचखेटाः राजराङ्गविनाशदः ॥

टीका—जो भौम यानी मङ्गल वक्री हो तो वर्षा नहीं होय बुध वक्री नहीं वो रस महंगे होय । गुरु वक्री हो तो पृथ्वी पै अन्त मंदाहोय । शुक्रवक्री हो तो प्रजाकी सुख होय । शनिवक्री हो तो

महाघोर युद्ध होय । किसी राजा का चय होय । जो पांच ग्रह
वक्री हों तो राजों के राजा की मृत्यु हो ।

ज्येष्ठ अमावस्या फलम्

रविवारेण संयुक्ता यदा स्यानमधज्येष्ठ्योः ।

अमावस्या तदा पृथ्वी रुन्डा मुन्डा च जायते ।

टीका—माघ, ज्येष्ठकी अमावस्या को जो रविवार पड़े तो
शीश कट २ कर पृथ्वी में पड़े ।

तेरह तिथि फलम्

एकपक्षे यदा यान्ति तिथयश्च त्रयोदश ।

त्रयस्तत्र च्यायं यान्ति वाजिनो मनुजा गजाः ॥

टीका—जो एक पक्ष में १३ तिथि हों तो मनुष्यों का नाश
करे और घोड़ों का नाश करे और हाथियों की चय हो त्रयोदश
तिथि का पक्ष तीनों योनी को निंसिद्ध है ।

अथ होली धूम्र फलम्

पूर्वे वायुहो लिकायां प्रजाभूपालयोः सुखम् ।

पलायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥

पश्चिमे तृणसंपत्तिरुत्तरे धान्य संभवः ।

यदि स्त्रे च शिखावृद्धिः राज्ञोदुग्स्य संक्षयः॥

टीका—जो होली को पूर्व की हवा चले तो राजा त्रजा को

सुख हो, और दक्षिण पवन चले तो देश भङ्ग और दुर्भिक्ष करे। पछाड़ा चले तो तृण सम्पति बढ़े, उत्तर पवन चलेतो धान्य बुद्धि हो जो होली का खुबां आकाश को सीधा जायते राजा का गढ़ छूट जाय।

शनि राशि फल लिख्यते

शनि चक्रं नराकरं लिखेद्यत्र शनिर्भवेत् ।
 तन्नक्षत्रं मुखे दत्वा यावन्नाम नरस्य च ॥
 तावद्विचारयेत्तत्र ज्ञेय तत्र शुभाशुभम् ।
 एकं मुखे च नक्षत्रं चत्वारि दक्षिणे करे ॥
 त्रयं त्रयं पादयोश्च वामहस्ते चतुष्टयम् ।
 ललाटे द्वितयं नेत्रे हृदि पंच गुदे द्वयम् ॥
 एकैकं दक्षिणे कुक्षौ नक्षत्राणि क्रमेण च ।
 होनिसुखे दक्षहस्ते लाभ्यो वामे च रोगता ॥
 हृदि श्रीमस्तके राज्यं पादे पर्यटनं फलम् ॥
 नेत्रो सुखं गुदे मृत्युः कुक्षौ शोकं विचिंतयेत् ।
 जपादिपूजनाचार्याभिः कल्याणं जायते सदा ॥
 अन्यान्येवं विचार्याणि बाहनादि बहूनि च ॥

टीका—अथ शनि चक्र का विचार कहते हैं। शनि चक्र आदमी की सूरत का लिखे। जिस नक्षत्र को शनि हो तिस से जन्म बदत्र तक गिने फिर शनि नक्षत्र से अङ्ग प्रति सब नक्षत्र स्थापित करे जिस अङ्ग में जन्म नक्षत्र पड़े उसका फल जानिये

१ नक्षत्र सुख में धरे । चार दाहिने हाथ में, ३ दक्षिण पांचमें,
 ३ वाये पांच में. ४ वाये हाथ में, २ ललाट में, ३ नेत्र, ५ हृदय
 २ गुदा १ दाहिनी कोख में इस प्रकार नक्षत्र धरे । जो सुख
 में जन्म नक्षत्र पड़े तो हानि करे, वाये हाथमें रोग, हृदय लक्ष्मी
 ललाट राजपद, दक्षिण हाथ में लाभ, दाहने पांचमें अमावस्या, नेत्रमें
 सुख, गुदा में सृत्यु, कोख में शोक करै, तिस निमित्त जपदान
 पूजा ब्राह्मण भोजनादि से कल्याण सुख होय और अनेक बाह-
 नादि विचारकं भी फल होते हैं सो अन्य ग्रन्थ विषय कहा है ।

मेरे शनौ गुर्जरेषु प्रभासे चार्बुद्द वृषे ।
 मिथुने जायते पीड़ा स्थले मूलस्थलेषु च
 कर्के कश्मीर के बाधा शक्रप्रस्थो मृगाधिपे ।
 अनैश्चरै च कन्यायां मालवाख्ये च संक्षयम् ॥
 तुलावृश्चिक चापेषु यदि याति शनैश्चरः ।
 न वर्षन्ति तदा मेघा पृथ्वी दुर्भिक्षपीडिता ॥
 सुभिक्षं मकरे कुम्भे जायते बहुधा शनौ ॥
 मीने च सर्व लोकानां दुर्भिक्षन्तु क्षयो भवेत् ॥

टीका—मेष का शनि हो तो गुजरात देश में पीड़ा करै वृष
 का प्रभास श्वे और अर्द्द का देश में, मिथुन का मूलस्थली देश
 में कर्क का काशी देश में, सिंह का इन्द्रप्रस्थ देश में, कन्या
 का मालव देश में पीड़ा करे । तुल, वृश्चिक, धन का होय तो
 मेघ थोड़ा वर्षे, पृथ्वी दुर्भिक्ष से दुखी हो, कुम्भ, मकर का होय
 तो अन्न का सुकाल करै । मीन का होय तो सर्वत्र कल्प पड़े
 दुर्भिक्ष से पीड़ा होय ।

द्वादश राशि गुरु फलम्

मेरे गुरो सुभिक्षम् च सुवृष्टिश्च सुखी नरः ।
 वृषे गुरो स्वल्प वृष्टि प्रजापीडा च विग्रहः ॥
 अनावृष्टिः प्रजानाशो रोरवंमिथुने गुरो ।
 ककें गुरो महावृष्टि देशभङ्गो महर्घता ॥
 सिंहे गुरो सुभिक्षय च सुवृष्टिश्चप्रजासुखम् ।
 कन्यागुरो रोग पीडा सुभिक्षम् शस्यजन्म च ॥
 तुले गुरो सस्यनाशो वहुचीरं प्रजायते ॥
 अलौ जीवे च दुर्भिक्षम् राजचौरोगाद्यैम् ।
 चापे गुरो शुभावृष्टिः शुभं शस्यमहर्घता ॥
 दुर्भिक्षं मकरे जीवो राजयुद्धं पशुक्षयः ॥
 कुम्भे गुरो च दुर्भिक्षयम् धातुमूलं महर्घता ।
 दुर्भिक्षम् दक्षिणे देशे भषे जीवे न चान्यगे ॥

टीका—जब मेरे राशि का वृहस्पति आवे तब सुभिक्ष हो । वर्षा अधिक हो, मनुष्य सुखी रहैं। जब वृष राशि का हो तो वर्षा थोड़ी हो, प्रजा में पीड़ा हो, विग्रह फैले। और मिथुन का हो, तब वर्षा अच्छी होय। वैर वहे प्रजा को पीड़ा हो और कर्क उच्च स्थान का होता वर्षा बहुत हो, और कई देश भङ्ग होय औन्न मंहगा हो। सिंह का हो तो सुभिक्ष करे, वर्षा अधिक हो प्रजा सुखी रहे। कन्या के गुरु होय तो रोग धान्योत्पत्ति और अन्न सस्ता हो। तुल के गुरु खेती का नाश करै, दूध बहुत होय, वृश्चिंच के गुरु

मैं राज चोर सर्व भय दुर्भिक्त करे । धन के गुरु वर्षी खेती वहुत करे रस महंगा करे मकर के गुरु महादुर्भिक्त, राजाओं में युद्ध, पशुओं का नाश करे । कुम्भ के गुरु होय तो दुर्भिक्त धातु महंगा करे । भीन के गुरु होय तो दक्षिण देश में दुर्भिक्त करे अन्य देश में नहीं ।

दीप मालिका फलम्

भानुभोमार्किवारेषु कार्तिकेन्दुक्षयो भवेत् ।
आयुष्मान् स्वातिसयुक्तो नृपनाशः पशुक्षयः ॥

टीका—जो कार्तिक मास दिवाली रवि भोम शनिवार की हो और स्वाति नक्षत्र आयुष्मान् योग हो तो राजाओं में युद्ध और पशुओं का नाश हो ।

कितना दिन चढ़ा या रहा देखना

छाया पादैरसोपेते रेकविंशशतं भजेत् ।
सन्धांके घटिका झेयाःशेषांके च पलाः स्मृताः ॥

टीका—अपने शरीर की छाया अपने पांज से नापना जितने पाऊं छाया हो उसमें ६ और मिलावे फिर १२१ में भाग हे जितनी बार भाग लगे सो घड़ी दिन जानो जो चढ़ता हो तो चढ़ता जानो और उतरता हो तो वाकी दिन रहा जानो और जो भाग देकर शेष बचे सोई पल जानिये ।

रात्रि ज्ञानम् देखना
सूर्यभान्मध्यनक्षत्रं सप्त संख्याविशोधितम् ।

विशतिष्ठन नवहृतं गता रात्रिः स्फुटा भवेत् ॥

टीका—जो आधीरात नक्षत्र हो उससे सूर्य नक्षत्र तक गिने फिर उसमें से सात घटावे जो बाकी रहे उनको २० से गुणा करे फिर नों का भाग दे जो अंक शेष बचे सो उत्तरी रात गई समझना चाहिये ।

छपकीली का दोष दूर करना

पिनोकिनं नमस्कृत्य जपेन्मन्त्रं पद्मक्षरम् ।

शतं सहस्रपथवा सर्वदोषनिवारणम् ॥

शिवालये प्रदद्याच्च दीपं दोषप्रशान्तये ।

टीका—जिस किसीके शरीर पर छपकली गिरजावे चढ़जावे तो शान्ति के लिये सारे वस्त्र धोने और गङ्गाजल से स्नान करे औ नमक तेल का दान करे ३० नमः शिवाय ये १०० या १००० मन्त्र जपे शिवालय में दीपक वाले तो शुभ है ॥

छींक विचार देखना

पूर्वे छिक्का भवेन्मत्यु राग्नेयां शोक एव च ।

हानिश्च दक्षिणे भार्गे नैऋते प्रियदर्शनम् ॥

पश्चिमे मिष्टभोज्य च वायव्ये धनलाभदा ।

उत्तरे कलहश्चैव ईशाने च शुभास्मृता ॥

दिशाष्टकं विचार्यैवे एवं ज्ञेयं विचक्षणेः ।

टीका—पूर्व की छींक हो तो मृत्यु करे । अग्नि कोण की हो तो शोक हो दक्षिण की हो तो हानि करे नैऋतकीमें लाभ।

पश्चिम की शुभ । वायव्य की शुभ । उत्तर की कलह । ईशानकी शुभ । इसी प्रकार आठों दिशा का फल देखना । सोते और उठते में छींक का होना शुभ नहीं है । यदि भोजन के अन्तमें छींक हो तो अगले दिन अच्छे पदार्थ का लाभ हो किसी कार्यके करने मात्र का विचार करते छींक हो तो वह काम नहीं बनता । उस काम के करने के लिये थोड़ी देर तक अवश्य ठहर जाना चाहिए । यात्रा के समय पीछे की या बाएँ की तरफ की छींक अच्छी होती है सामने और दाहिने तरफ की बुरी होती है ।

चरु प्रमाण देखना

एकद्वित्रिचतुर्थमागं ब्रीहिधृत् यवास्तथा ।
तिलाः क्रमेण योक्तव्या यथा श्रद्धा च शर्करा ॥

टीका—चावल एक हिस्सा घृत दो हिस्से जौ तीन हिस्से तिल चार हिस्से जैसी श्रद्धा हो उतनी शुद्ध शर्करा नाम खांड मिलावे ये चरु का प्रमाण है ।

चूला बनाने का विचार

रवि शनि मङ्गल को हरो और वार लो जोड़ ।
रिक्ता भद्रा छोड़ के चूल्हे को दो ठौर ।

स्त्री को सज्ज में रखने का विचार

युद्धेषु पृष्ठतः कुर्यात् मागे अग्रतोनिः सरेत् ।

ऋतुकालेतु बामांगी पुण्य काले तु दक्षिणे ॥

टीका—युद्ध में स्त्री को पीठ पीछे रास्ते में अगाड़ी रखें ।

ऋतुकाल के समय वाँई तरफ रखें। पुन्यकाल के समय दाहिनी तरफ रखना चाहिये।

॥ नक्षत्र संज्ञा चक्रम ॥

ध्रुव स्थिर	उत्तरा तीनों, रोहिणी, रविवार
चर चत्त	स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, चंद्रवार
उग्र, क्रूर	पूर्वा तीनों, भरणी, मघा, मङ्गलवार
मिश्र, साधारण	विशाखा क्रतिका, बुधवार
क्षिप्र, लघु	हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, गुरुवार
मृदु, मैत्र	मृगशिर, रेवती, चित्रा, उत्तराधा भृगुवार
तिक्षण वारुण	मूल, ज्येष्ठा, आर्द्धा, श्लेषा, शनिवार

नौतनी का श्लोक दोनों पक्ष का ।
 मयूराणां मेघः कुबलयकदम्बो मधुलिहाम् ।
 सरोजनां भानुः कुसुम समयः काननभुवाम् ॥
 चक्रोराणां चन्द्रः प्रथयति यथा चेतसि सुखम् ।
 तथास्माकं प्रीतिम् जनयति तवाल्लोकनमिदम् ॥

अन्वय—मेघः यथा भगुराणां चेतसि सुखं प्रथयति । कुरु-
लय कदम्बो यथा मधुलिहाँचेतसि सुखं प्रथयति । भानुः यथा
सरोजानां चेतसि सुखं प्रथयति । कुसमयमयः यथा कानन भुवाम्
चेतसि सुखं प्रथयति । चन्द्रः यथा चकोराणां चेतसि सुखं
प्रथयति । तथाइदम् तव आलोकनमस्माकं चेतसि प्रीतिजनयति ॥ १ ॥

टीका—जैसे वादल गर्जनसे शौरों के चित्तमें भहा सुख प्राप्त
होता है और जैसे कमल का पुष्प भोरों के चित्त में सुख देता
है और जैसे सूर्य नारायण तालावों के फूलों को सुख देते हैं
और जैसे वसन्त ऋतु वन में रहने वालों को सुख देती है और
चन्द्रमा चकोर पक्षी के चित्त को सुख देता है ऐसे ही आपका
दर्शन हमारे चित्त में प्रीति को पैदा करता है ।

नागोभाति मदेन कंजलरुहैः पूर्णन्दुना शर्वरी ।
शीलेन प्रमदा जवेन तुरगो नित्योत्सवैर्मन्दिरम् ॥
वाणी व्याकरणेन हंसमिथुनेर्नद्यः सभाः पंडितेः
सत्पुत्रेण कुलं नृपेण वसुधा लोकत्रयं विष्णुना ॥

टीका—आपके सम्बन्ध होने से हम बड़े शोभा को प्राप्त हुये ।
क्यों करके जैसे हाथी मद करके शोभा को प्राप्त होता है । जल
कमल करके शोभा को प्राप्त होता है और पूर्ण चन्द्रमा से रात्रि
शोभा को प्राप्त होती है शीलता से स्त्री शोभा को प्राप्त होती
है और घोड़ा ज्यादा चलने से शोभा को प्राप्त होता है । और
मंदिर में नित्य उत्सव होने से मंदिर की शोभा है । और वाणी
की व्याकरण करके शोभा है । नदियाँ हंसोंके जोड़े से शोभा
प्राप्त होती हैं । और पंडितकी सभाकरके शोभा है । और कुलकी
सत्र पुत्र होने से शोभा है । रीज़ की पृथ्वी करके शोभा है ।

और विष्णु अगवान से त्रिलोकी की शोभा है। इसे ही आपके सम्बन्ध होने से हमारी और आपकी शोभा है।

गङ्गा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा ।

पापंतापं तथा दैन्यं हंति सज्जनसङ्गमः ॥

टीका—गङ्गाजीके स्नान करने से सब पाप दूर हो जाते हैं। और चन्द्रमा के दर्शन करनेसे ताप नाम गर्भ दूर हो जाती है। ज कल्पबृक्ष है उसके दर्शन से दरिद्रता दूर हो जाती है पाप ताप दरिद्रता ये तीनों सज्जनों के मिलने से दूर हो जाते हैं सो आप ऐसे सज्जन हैं कि आपके मिलने से सब दुःख दूर हो गये।

दूरे हिं श्रुत्वा भवदीय कीर्तिम् कणौं च तृप्तौ नहिं चक्षुषी मे ।
तयोर्विवादं परिहतकामः समागतोहं तवदर्शनाय ॥ १ ॥

अर्थ—आपकी कीर्ति को दूर ही से सुनकर कान तो तृप्त हो गये, नेत्र हमारे तृप्त नहीं हुये। उन दोनों में (कान नेत्रोंमें) विवाद होने लगा, उसको दूर करने के लिये आपके दर्शन के लिये हम यह यहाँ आये हैं सो जैसे सुने वैसे ही देखे, विवाद दूर हो गया।

पंचगव्य पंचामृत पंचपल्लव पंचरत्न

गौ मूत्र	गोघृत	बड़ का पत्ता	सोना
गो गोबर	गो दधि	गूलर का पत्ता	चांदी
गो दूध	गो दूध	पीपल का पत्ता	तांबा
गो घृत	गङ्गाजल	आम का पत्ता	मँगा
गो दधि	शहत	पिलखन का पत्ता	मौती

सं० १६६३ वैशाख शुद्ध ८ को समाप्तम् ॥

पता—रामस्वरूप शर्मा नारायण पुस्तकालयः
हरिहर प्रेस, शहर मेरठ ।



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server!



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

I creator of
hinduism
server!

